

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या १२४५

काल न० २२४

खण्ड ५

थेर-गाथा

राहुलसङ्किञ्चानेन
आनन्दकोसल्लानेन
अगदीसकस्सपेन च
सम्पावितो

उत्तमभिक्षुना पकासितो

२४८१ बुद्धवच्छरे (1937 A. C.)

PRINTED BY M. PANDEY AT THE A. I. J. PRESS, ALI AHABAD
AND PUBLISHED BY UTIAM DIKSHU, RANGOON

प्राङ्निवेदनम्

पालिवाङ्मयस्य नागराक्षरे मुद्रण अत्यपेक्षितमिति नाविदितचरं भारती-
येतिहामविविदिषूणाम् । मस्कृतपालिभाषयोगनिमामीप्यादपि यत् परस्महमेभ्य
जिज्ञासुभ्यः मस्कृतज्ञेभ्य पालिग्रन्थराश्यवगाहन दुष्करमिव प्रतिभाति तत् लिपि-
भेदादेव । एतदर्थमयमस्माकमभिनवः प्रयासः । अत्र नूतना अपि पाठभेदा निधेया
इत्यासीदस्माकं मनीषा परं कालात्ययभीत्याऽत्र प्रथमभागे धम्मपदादन्यत्र न तत्
कृतमभूत् । अथोटिप्पणीषु मन्निवेदिताः पाठभेदाः । प्रायः Pali Text Society
मुद्रितेभ्यो ग्रन्थेभ्य उद्धृताः ।

अर्थसाहाय्यं विना अस्मत्समीहितं हृदि निगूहितमेव स्यात् । तत्र भदन्तेन
उत्तमस्थविरेण साहाय्यं प्रदाय महदुपकृतमिति निवेदयति—

कार्तिकशुक्लैकादश्या

२४८० बुद्धाब्दे

राहुलः सांकृत्यायनः

आनन्दः कौसल्यायनः

जगदीशः काश्यपश्च

विषय-सूची

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|---------------------------|-------|--------------------------------|-------|
| १-एकनिपातो | २ | गोसाळो थेरो | ६ |
| १-वग्गो पठमो | २ | सुगन्धो थेरो | ६ |
| पुण्णो मन्तानिपुत्तो थेरो | २ | नन्वियो थेरो | ६ |
| दब्बो थेरो | २ | अभयो थेरो | ७ |
| सीतवनियो थेरो | २ | ळोमसकङ्गियो थेरो | ७ |
| भल्लियो थेरो | ३ | जम्बुगामिकपुत्तो थेरो | ७ |
| वीरो थेरो | ३ | हारितो थेरो | ७ |
| पिलिन्दवच्छो थेरो | ३ | उत्तियो थेरो | ७ |
| २-वग्गो दुतियो | ४ | ४-वग्गो चतुत्थो | ८ |
| पुण्णमासो थेरो | ४ | गह्वरतीरिया भिक्खु | ८ |
| चूलवच्छो थेरो | ४ | सुप्पियो थेरो | ८ |
| महागवच्छो थेरो | ४ | सोपाको थेरो | ८ |
| वनवच्छत्थेरो | ४ | पोसियो थेरो | ८ |
| वनवच्छस्स थेरस्स सामणेरो | ४ | सामञ्जकानि थेरो | ८ |
| कुण्डधानो थेरो | ४ | कुमीपुत्तो थेरो | ८ |
| वेलट्ठसीसो थेरो | ५ | कुमापुत्तस्सथेरस्स सहायको थेरो | ९ |
| वासको थेरो | ५ | गवम्पाति थेरो | ९ |
| सियालपिता थेरो | ५ | तिस्सो थेरो | ९ |
| कुळो थेरो | ५ | वड्ढमानो थेरो | ९ |
| ३-वग्गो तत्तीयो | ६ | ५-वग्गो पञ्चमो | १० |
| अजितो थेरो | ६ | सिरिवड्ढो थेरो | १० |
| निप्रोधत्थेरो | ६ | खदिरवनियो थेरो | १० |
| चित्तको थेरो | ६ | सुमङ्गळो थेरो | १० |
| | | साहु थेरो | १० |

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|--------------------|-------|---------------------|-------|
| रमणीयविहारी थेरो | १० | आतुमो थेरो | १६ |
| समिद्धि थेरो | १० | माणबो थेरो | १६ |
| उज्जयो थेरो | ११ | सुयामनो थेरो | १६ |
| सञ्जयो थेरो | ११ | सूसारबो थेरो | १६ |
| रामणैय्यको थेरो | ११ | पियञ्जहो थेरो | १६ |
| ६-वग्गो छट्ठो | १२ | हत्थारोहपुत्तो थेरो | १७ |
| विमलो थेरो | १२ | मेण्डसितो थेरो | १७ |
| गोधिको थेरो | १२ | रक्खितो थेरो | १७ |
| सुबाहु थेरो | १२ | उग्गो थेरो | १७ |
| वल्लिया थेरो | १२ | ९-वग्गो नवमो | १८ |
| उत्तियो थेरो | १२ | समितिगुत्तो थेरो | १८ |
| अञ्जनावनियो थेरो | १२ | कस्सपो थेरो | १८ |
| कुट्टिविहारी थेरो | १२ | सीहो थेरो | १८ |
| कुट्टिविहारी थेरो | १३ | नीतो थेरो | १८ |
| रमणीयकुट्टिको थेरो | १३ | सुनागो थेरो | १८ |
| कोसलविहारी थेरो | १३ | नागितो थेरो | १८ |
| ७-वग्गो सत्तमो | १४ | पविड्ढो थेरो | १९ |
| वप्पो थेरो | १४ | अज्जुनो थेरो | १९ |
| वज्जिपुत्तो थेरो | १४ | देवसभो थेरो | १९ |
| पक्खो थेरो | १४ | सामिदत्तो थेरो | १९ |
| विमलकोण्डञ्जो थेरो | १४ | १०-वग्गो दसमो | २० |
| उक्खेपकतवच्छो थेरो | १४ | परिपुण्णको थेरो | २० |
| मेघियो थेरो | १४ | विजयो थेरो | २० |
| एकधम्मसवनीयो थेरो | १५ | एरको थेरो | २० |
| एकुद्दानियो थेरो | १५ | मेत्तजि थेरो | २० |
| छन्नो थेरो | १५ | चक्खुपालो थेरो | २० |
| पुण्णो थेरो | १५ | खण्डसुमनो थेरो | २० |
| ८-वग्गो अट्ठमो | १६ | तिस्सो थेरो | २१ |
| वच्छपालो थेरो | १६ | अभयो थेरो | २१ |
| | | उत्तियो थेरो | २१ |

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|--------------------|-------|-----------------|-------|
| देवसभो धेरो | २१ | सुराधो धेरो | २७ |
| ११-वग्गो एकाहस्यो | २२ | गोतमो धेरो | २७ |
| बेलट्ठकानि धेरो | २२ | वसभो धेरो | २७ |
| सेतुच्छत्थेरो | २२ | २-वग्गो दुतियो | २९ |
| बन्धुरो धेरो | २२ | महाबुन्धो धेरो | २६ |
| खितको धेरो | २२ | जोतिदासो धेरो | २६ |
| मलितवम्बो धेरो | २२ | हेरञ्जकानि धेरो | २६ |
| सुहेमन्तो धेरो | २२ | सोभमित्तो धेरो | ३० |
| धम्मसवो धेरो | २३ | सम्भमित्तो धेरो | ३० |
| धम्मसवपित्तु धेरो | २३ | महाकालो धेरो | ३० |
| सङ्करक्खितो धेरो | २३ | तिस्सो धेरो | ३० |
| उसभो धेरो | २३ | किम्बिलो धेरो | ३० |
| १२-वग्गो द्वादस्यो | २४ | नन्दो धेरो | ३१ |
| जेन्तो धेरो | २४ | सिरिमा धेरो | ३१ |
| वच्छगोत्तो धेरो | २४ | ३-वग्गो ततियो | ३२ |
| वनवच्छो धेरो | २४ | उत्तरो धेरो | ३२ |
| अधिमुत्तो धेरो | २४ | भट्ठजि धेरो | ३२ |
| महानामो धेरो | २४ | सोभितो धेरो | ३२ |
| पारापरियो धेरो | २४ | वल्लियो धेरो | ३२ |
| यसो धेरो | २५ | वीतसोको धेरो | ३३ |
| किम्बिलो धेरो | २५ | पुण्णमासो धेरो | ३३ |
| वज्जिपुत्तो धेरो | २५ | नन्दको धेरो | ३३ |
| इसिवत्तो धेरो | २५ | भरतो धेरो | ३३ |
| २-दुकनिपातो | २६ | भारद्वाजो धेरो | ३३ |
| वल्लियो धेरो | २६ | कण्हविन्नो धेरो | ३४ |
| गङ्गातीरियो भिक्खु | २६ | ४-वग्गो चतुत्थो | ३५ |
| अजिनो धेरो | २७ | मिगसिरो धेरो | ३५ |
| मेळजिनो धेरो | २७ | सिवको धेरो | ३५ |
| राधो धेरो | २७ | उपवानो धेरो | ३५ |

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|--------------------------|-------|---------------------|-------|
| इसिदिन्नो थेरो | ३६ | उत्तरपालो थेरो | ४४ |
| सम्बुलकञ्चानो थेरो | ३६ | अभिभूत ह्येरो | ४४ |
| खित्तको थेरो | ३६ | गोतमो थेरो | ४४ |
| सोणोपोदिरियपुत्तो थेरो | ३६ | हारितो थेरो | ४४ |
| निसभो थेरो | ३६ | बिमलो थेरो | ४५ |
| उसभो थेरो | ३७ | ४-चतुक्कनिपातो | ४६ |
| कप्पटकुटो थेरो | ३७ | नागसमाल थेरो | ४६ |
| ५-वग्गो पञ्चमो | ३८ | भगु थेरो | ४६ |
| कुमारकस्सपो थेरो | ३८ | सन्नियो थेरो | ४७ |
| धम्मपालो थेरो | ३८ | नन्दको थेरो | ४७ |
| ब्रह्मालि थेरो | ३८ | जम्बुको थेरो | ४७ |
| मोघराजा थेरो | ३९ | सेनको थेरो | ४७ |
| बिसाखोपञ्चालिपुत्तो थेरो | ३९ | सम्भूतो थेरो | ४८ |
| चूलको थेरो | ३९ | राहुलो थेरो | ४८ |
| अनूपमो थेरो | ३९ | चन्दनो थेरो | ४८ |
| वज्जितो थेरो | ३९ | धम्मिको थेरो | ४९ |
| सन्धितो थेरो | ३९ | सप्पको थेरो | ४९ |
| ३-तिकनिपातो | ४१ | मुवित्तो थेरो | ४९ |
| अङ्गणिक भारद्वाजथेरो | ४१ | ५-पञ्चनिपातो | ५० |
| पञ्चमो थेरो | ४१ | राजवत्तो थेरो | ५० |
| वाकुलो थेरो | ४२ | मुभूतो थेरो | ५० |
| धनियो थेरो | ४२ | गिरिमानन्दो थेरो | ५१ |
| मातङ्गपुत्तो थेरो | ४२ | मुमनो थेरो | ५१ |
| खुज्जसोभितो थेरो | ४२ | वड्ढो थेरो | ५१ |
| वारणो थेरो | ४३ | नविकस्सपो थेरो | ५२ |
| पत्तिक्कथेरो | ४३ | गयाकस्सपो थेरो | ५२ |
| यसोज्जथेरो | ४३ | वक्कली थेरो | ५३ |
| साटिमत्तिथथेरो | ४३ | विजितसेनो थेरो | ५३ |
| उपालि थेरो | ४४ | यसवत्तो थेरो | ५३ |
| | | सोणो कुटिकण्णो थेरो | ५४ |

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|---------------------------|-------|---------------------------|-------|
| कोसियो धेरो | ५४ | काकुदायी धेरो | ६८ |
| ६-छनिपातो | ५५ | एकविहारियो धेरो | ६९ |
| उस्वेळकन्सपो धेरो | ५५ | महाकम्पिनो धेरो | ७० |
| तेकिच्छकानि धेरो | ५५ | चूलपन्थको धेरो | ७१ |
| महानागो धेरो | ५६ | कप्पो धेरो | ७१ |
| कुल्लो धेरो | ५६ | उपसेनो वङ्गन्तपुत्तो धेरो | ७२ |
| मालङ्क्यपुत्तो धेरो | ५७ | गोतमो धेरो | ७३ |
| सप्पवासत्थेरो | ५७ | ११-एकादसनिपातो | ७४ |
| कातियानो धेरो | ५८ | संकिच्च धेरो | ७५ |
| मिगजालो धेरो | ५८ | १२-द्वादसनिपातो | ७६ |
| जेन्तो पुरोहितपुत्तो धेरो | ५९ | सीलवत्थेरो | ७७ |
| सुमनो धेरो | ५९ | सुणीतो धेरो | ७७ |
| न्यातकमुनि धेरो | ६० | १३-तेरसनिपातो | ७८ |
| ब्रह्मवत्तो धेरो | ६० | सोणो कोळिविसो धेरो | ७९ |
| तिरिमण्डो धेरो | ६० | १४-चुद्दसनिपातो | ८० |
| सब्बकामो धेरो | ६१ | रेवतो धेरो | ८० |
| ७-सत्तनिपातो | ६२ | गोदत्तो धेरो | ८१ |
| सुन्दरसमुद्दो धेरो | ६२ | १६-सोळसनिपातो | ८२ |
| लकुण्ठको धेरो | ६३ | अञ्जाकोण्डञ्जो धेरो | ८३ |
| भद्दो धेरो | ६३ | उवायो धेरो | ८४ |
| सोपाको धेरो | ६४ | २०-वीसतिनिपातो | ८५ |
| सरभङ्गो धेरो | ६४ | अधिमत्तो धेरो | ८६ |
| ८-अट्ठनिपातो | ६५ | पारापरियो धेरो | ८८ |
| महाकच्चायनो धेरो | ६५ | तेलकानि धेरो | ८९ |
| तिरिमित्तो धेरो | ६६ | रट्ठपालो धेरो | ९१ |
| महापन्थको धेरो | ६६ | मालुक्यपुत्तो धेरो | ९२ |
| ९-नवनिपातो | ६७ | सेलो धेरो | ९४ |
| भूतो धेरो | ६७ | अङ्गुलिमालो धेरो | ९६ |
| १०-दसनिपातो | ६८ | | |

| | पृष्ठ | | पृष्ठ |
|-------------------|-------|-----------------|-------|
| अनिरुद्धो धेरो | ६८ | महाकस्तपो धेरो | ११० |
| पारापरियो धेरो | १०० | | |
| ३०-तिसनिपातो | १०१ | ५०-पञ्चासनिपातो | १११ |
| कुस्तब्धेरो | १०३ | तालपुटो धेरो | ११४ |
| सारिपुत्तो धेरो | १०५ | | |
| आनन्दो धेरो | १०७ | ६०-सट्ठिकनिपातो | ११५ |
| ४०-चत्तालीसनिपातो | १०८ | महानिपातो | १२० |

थेर-गाथा

नमो तस्मै भगवतो श्रद्धतो मग्मा सम्बुद्धस्मै

सीहानं व नदन्तान दाठीनं गिरिगम्भरे ।
सुणाय भावित्तान गाथा अत्तुपनायिका ॥१॥
यथा नामा यथा गोत्ता यथा धम्म विहारिनो
यथाधिमुत्ता सण्णञ्जा विहरिमु अनन्दिता ॥२॥
तत्थ तत्थ विपस्सित्वा फुसित्वा अच्चुत पदं
कनन्तं पच्चवेकवन्ता इम अत्थं अभासिमु ॥३॥

एकनिपातो

वग्गो पठमो

छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता, वस्स देव यथा सुखं;
चित्त मे सुसमाहितं विमुत्तं, आतापी विहरामि, वस्सदेवा 'ति ॥१॥
इत्थं सुद आयस्मा सुभूति थेरो गायमभासित्था'ति ।
उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्धतो
घुनाति पापके धम्मे दुमपत्त व मालुतो 'ति ॥२॥
इत्थं सुदं आयस्मा महाकोट्टिकथेरो गायमभासित्थ ।
पञ्च इमं पस्स तथागतानं, अग्गि यथा पज्जलितो निसोथे ।
आलोकदा चक्खुददा भवन्ति ये आगतानं विनयन्ति कङ्खन्ति ॥३॥
इत्थं सुदं आयस्मा कङ्खारेवतो थेरो गायं अभासित्थ ।
सम्भिरेव समासेथ पण्डितेहत्थदस्सिभिः
अत्थं महन्त गम्भीरं दुद्दसं निपुणं अणुं
धीरा समधिगच्छन्ति अप्पमत्ता विचक्खणा 'ति ॥४॥

आयस्मा पुण्णो मन्तानिपुत्तो थेरो

यो दुद्दमयो दमेन दन्तो दब्बो सन्तुसितो वित्तिण्णकङ्खो
विजितावि अपेतभेरवो हि दब्बो सो परिनिब्बुतो ठित्तो 'ति ॥५॥

आयस्मा दब्बो थेरो

यो सीतवनं उपागा भिक्खु एको सन्तुसितो समाहिततो
विजितावि अपेतलोमहंसो रक्खं कायगतासतिं धितीमा 'ति ॥६॥

आयस्मा सीतवनियो थेरो

यो पान्दि मच्चुराजस्स सेनं नळसेतुं व सुदुब्बलं महोघो
विजितावि अपेतभेरवो हि दन्तो सो परिनिब्बुतो ठित्तो 'ति ॥७॥

आयस्मा भल्लियो धेरो

यो दुह्मयो दमेन दन्तो वीरो सन्तुसितो वितिण्णकङ्खो
विजितावि अपेतलोमहंसो वीरो सो परिनिब्बुतो ठित्तो 'ति ॥८॥

वीरो धेरो

स्वामतं नापगतं न पिदं दुम्मन्तितं मम ।
संविभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्ठ तदुपागमन्ति ॥९॥

पिलिन्दवच्छो धेरो

विहरि अपेक्ख ट्ठघ वा हुर वा यो वेदगू समितो यत्ततो ।
सब्बमु धम्मेसु अनुपलितो लोकस्स जञ्जा उदयब्बयञ्चा 'ति ॥१०॥

वग्गो पठमो

उद्दानं

सुभुति कोटिठको धेरो कट्खावेत सुखवतो
मन्तानिपुत्तो दग्धो च सतिवणियो च भल्लियो
वीरो पिलिन्दवच्छो च पुण्यमासो तमोनुदो' ति ।

वग्गो दुत्तियो

पुण्णमामो थेरो

पामुज्जबट्टलो भिक्खु धम्मो बुद्धप्पवेदिने ।
अधिगच्छे पद्द सन्त सखारूपसम मुखन्ति ॥११॥

चूलगवच्छो थेरो

पञ्जाबली सीलवत्पपन्नो समाहितो ज्ञानरतो सतीमा ।
यदत्थिय भोजन भुञ्जमानो कङ्कलेत काल रूध वीतरागो 'ति ॥१२॥

महागवच्छो थेरो

नीलम्भवण्णा रुचिरा सीनवारी मुचिन्धरा ।
गोपइन्दकसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥१३॥

वनवच्छथेरो

उपज्झायो म अवचासि इतो गच्छामि सीवक्
गामे मे वसति कायो अरञ्ज मे गतो मनो
से मानको पि गच्छामि, नत्थि सगो विजानतन्ति ॥१४॥

वनवच्छस्स थेगस्स सामणेरो

पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च नुत्तरि भावये,
पञ्चमघातिगो भिक्खु ओघतिण्णो 'नि वुच्चती ति ॥१५॥

कुरङ्गधानो थेरो

यथापि भद्दो आजञ्जो नङ्गला वत्तनी सिखी
गच्छति अप्पकसिरेन, एव रत्तिन्दिवा मम
गच्छन्ति अप्पकामरेन मुखे लद्धे निरामसे 'ति ॥१६॥

बेलटूसीसो थेरो

मिद्धी यदा होति महग्घसो च निहायिता सम्परिवत्तासायी
महावराहो व निवापपुट्ठो पुनणुनं गब्भमुपेति मन्दो 'ति ॥१७॥

दासको थेरो

अहू बुद्धस्स दायादो भिक्खु भेसकळावने
केवलं अट्टिसञ्जाय अफारि पट्ठाव इमं
मञ्जे 'हं कामराग सो खिप्पमेव पहीयतीति ॥१८॥

सिगालपिता थेरो

उदकं हि नयन्ति नेत्तिका उमुकारा नमयन्ति तेज्जं,
दारु नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति सुव्रतानी 'ति ॥१९॥

कुळो थेरो

मरणे मे भयं नत्थि, निकन्ती नत्थि जीविते,
सन्देहं निक्खिपिस्सामि सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥२०॥

वग्गो दुतियो

उद्दानं

चलवच्छो महावच्छो वनवच्छो च सीबको
कुण्डभानो च बेलटू दामको च ततो परं
सिगालपितिको थेरो कुळो च अजिनो दसा 'ति ॥२०॥

धम्मो तत्तियो

अजितो थेरो

नाह भयस्स भायामि, सत्था नो अमतस्स कोविदो ॥
यत्थ भयं नावतिट्ठति तेन मग्गेन वजन्ति भिक्खवो 'ति ॥२१॥

निग्रोधत्थेरो

नीला सुगीवा सिखितो मोरा कारविय अभिनदन्ति,
ते सीतवात कलिता सुत्त झाय निबोधेन्ताति ॥२२॥

चित्तको थेरो

अह खो वेळुगुम्बास्म भुत्वान मधुपायास
पदक्खिण सम्मसन्तो खन्धान उदयब्बय
सानु पटिगमिस्सामि विवेकमनुब्रूहयन्ति ॥२३॥

गोसाळो थेरो

अनुवस्सिको पब्बजितो, पस्स धम्मसुधम्मतं,
निस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२४॥

सुगन्धो थेरो

ओभासजातं फलग चित्तं यस्स अभिण्हसो,
तादिसं भिक्खु आसज्ज कण्ह दुक्खं निगच्छसीति ॥२५॥

नन्दियो थेरो

सुत्वा सुब्भासितं वाच बुद्धस्सादिच्चबन्धुनो
पच्च व्याधि हि निपुणं वालग्ग उमुत्ता यथा 'ति ॥२६॥

उत्तियो थेरो

[७]

अभयो थेरो

दब्ब कुस पोटाकिलं उसीरं मुञ्जपब्बजं
उरसा पनुदहिस्सामि विवेकमनुब्रूहयन्ति ॥२७॥

लोमसकङ्गियो थेरो

कच्चि नो वत्थपसुतो, कच्चि नो भूसनारतो,
कच्चि सीलमयं गन्धं त्व वासि नेतरा पजा 'नि ॥२८॥

जम्बुगामिकपुत्तो थेरो

समुन्नमयमत्तानं उसुकारो व तेजनं
चित्तं उज्जु कग्गित्वा न अविज्जं छिन्द हारिता 'नि ॥२९॥

हारितो थेरो

आबाधे मे समुप्पन्ने सति मे उपपज्जथ
अवाधो मे समुप्पन्नो कालो मे न प्पमज्जितुन्ति ॥३०॥

उत्तियो थेरो

वग्गो तत्तियो

उद्दानं

निग्रोधो चित्तको थेरो घोसालत्थेरो सुगन्धो
नन्दियो अभयो थेरो थेरो लोमसकङ्गियो
जम्बुगामिक पुत्तो च हारितो उत्तियो इतीति ।

वर्गो चतुर्थो

फुट्ठो डसेहि मकमेहि अरञ्जस्मि ब्रहावने
नागो संगामसीमे व सतो तत्राधिवासये 'ति ॥३१॥

गह्वरतीरियो भिक्खु

अजर जीरमानेन तप्पमानेन निब्बुतिं
निम्मिम परमं सन्ति योगक्खेम अन्तरन्ति ॥३२॥

सुप्पियो थेरो

यथापि एकपुत्तस्मि पियस्मिं कुसली सिया
एवं सब्बेसु पाणेषु सब्बत्थ कुसलो सिया 'ति ॥३३॥

सोपाको थेरो

अनासन्नवरा एता निच्चमेव विजानता
गामा अरञ्जमागम्म ततो गेह उपाविमि
ततो उट्ठाय पक्कामि अनामन्तेत्वा पोमियो 'ति ॥३४॥

पोमियो थेरो

मुख मुखत्थो लभते तदाचर, कित्तिञ्च पप्पोनि, यसस्म वड्ढति
यो अग्नियमट्ठङ्गिकमञ्जस उज्जु भावेति मग्गं अमतस्स पत्तिया 'ति ॥३५॥

सामञ्जस्कानि थेरो

साधु सुत साधु चरितक्क साधु सदा अनिकेतविहारो
अत्थपुच्छन् पदक्खिणकम्म एत सामञ्जसमकिञ्चनस्सा 'ति ॥३६॥

कुमीपुत्तो थेरो

नाना जनपदं यन्ति विचरन्ता असञ्जता
समाधिञ्च विराधेन्ति, किं सु रट्ठचरिया करिस्सति
तस्मा विनेय्य सारम्भं ज्ञापेय्य अपुरक्कतो 'ति ॥३७॥

कुमापुत्तप्सथेरस्स सहायको थरो

यो इद्विया सरभुं अट्टपेसि सो गवम्पति असितो अनेजो,
त सब्बसङ्गातिगतं महामुनि देवा नमस्सन्ति भवस्सपाग्गुन्ति ॥३८॥

गवम्पति थरो

सत्तिया विय ओमट्ठो ड्यूहमाने व मत्थके
कामरागपहानाय मतो भिक्खु परिवब्बजे 'ति' ॥३९॥

तिस्सो थरो

सत्तिया विय ओमट्ठो ड्यूहमाने व मत्थके
भवररागपहानाय सतो भिक्खु परिवब्बजे 'ति' ॥४०॥

बड्ढमानो थरो

वग्गो चतुत्थो

उद्दानं

गह्वरनीरियो सुप्पियो सो पाको च पोसियो च
सामञ्जकानि कुमापुत्तो कुमापुत्त सहायको
गवम्पति तिस्सत्थेरो बड्ढमानो महायसो 'ति' ।
विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभारस्स च पण्डवस्स च,
नगविवग्गतो च आयति पुत्तो अप्पटिमस्स तादिनो 'ति' ॥४१॥

वग्गो पञ्चमो

सिखिण्डो थेरो

चाले उपचाले सीसूपचाले पतिस्सतिका नु खो
विहरथ, आगतो वो बाल विय वेधीति ॥४२॥

खदिरवनियो थेरो

सुमुत्तिको सुमेत्तिको साहु सुमुत्तिकोमिह तीहि खुज्जकेहि,
असितामु मया नङ्गलामु मया खुदकुदालामु मया ।
यदि पि इधमेव इधमेव अथवापि अलमेव अलमेव,
आय मुमङ्गल आय मुमङ्गल, अण्णमत्तो विहर मुमङ्गला 'ति ॥४३॥

सुमङ्गळो थेरो

मतं वा अम्म रोदन्ति वो वा जीवं न दिस्सन्ति ।
जीवन्तं म अम्म दिस्सन्ती कस्मा मं अम्म रोदसीति ॥४४॥

साहु थेरो

यथापि भद्दो आजञ्जो खलित्वा पतितिट्ठति
एवं दस्सनसम्पन्न सम्मासम्बुद्धसावकन्ति ॥४५॥

रमणीयविहारी थेरो

सढायाह पण्णजितो अगारस्मा अनगारिय,
सति पञ्जा च मे बुद्धा चित्तञ्च सुसमाहितं
कामं करस्सु रूपानि, नेवमं व्याधयिस्ससीति ॥४६॥

समिद्धि थेरो

नमो ते बुद्धवीरत्थु, विप्पमुत्तो सि सब्बधि
तुय्हापदाने विहरं विहरामि अनासवो 'ति ॥४७॥

उज्जयो थेरो

यथो अहं पब्बजितो, अगारस्मा अनगारियं
नाभिजानामि संकप्पं अनरियं दोससंहितन्ति ॥४८॥

सज्जयो थेरो

विहविहामिनदिते सिप्पिकाभिरुतेहि च
न मे तं फन्दति चित्तं, एकत्तनिरतं हि मे ॥४९॥

रामणैय्यको थेरो

धरणी च सिच्चति वाति मालुतो विज्जुता चरति नभे
उपसम्मन्ति वितक्का चित्तं सुसमाहितं ममा 'ति ॥५०॥

वग्गो पञ्चमो

उद्दानं

सिरिवड्ढो रेवतो थेरो सुमङ्गलो सानुसब्धयो
रमणीयविहारी च समिद्धुज्जय-सज्जयो
रामणैय्यो च सो थेरो विमलो चरणज्जयो 'ति ।



वग्गो छट्ठो

विमलो थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता,
चित्तं सुसमाहितञ्च मय्ह, अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' ति ॥५१॥

गोघिको थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता,
चित्तं सुसमाहितञ्च काये अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' ति ॥५२॥

सुबाहु थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता,
तस्सं विहरामि अप्पमत्तो, अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' ति ॥५३॥

वल्लिया थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीत, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता,
तस्सं विहरामि अटुत्तियो, अथ चे पत्थयसि पवस्स देवा' ति ॥५४॥

उत्तियो थेरो

आसन्दि कुटिकं ~~कत्ता~~ ओगय्ह अञ्जनं वनं
तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥५५॥

अञ्जनावनियो थेरो

को कुटिकाय, भिक्खु कुटिकाय वीतरागो सुसमाहितचित्तो
एव जानाहि आवुसो अमोघा ते कुटिका कता' ति ॥५६॥

कुटिविहारो थेरो

अयमाहु पुराणिया कुटि, अञ्ज पत्थयसे नवं कुटि
आसं कुटिया विराजय दुक्खा भिक्खु पुन नवा कुटीति ॥५७॥

कुटिविहारी थेरो

रमणीया मे कुटिका मद्वा देय्या मनोरमा
न मे अत्थो कुमारीहि, येस अत्थो तहि गच्छथ नारियो 'ति ॥५८॥

रमणोयकुटिको थेरो

सद्धायाह पब्बजितो, अरञ्जो मे कुटिका कता,
अप्पमत्तो च आतापी सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥५९॥

कोसलविहारी थेरो

ते मे इज्झिमु मकप्पा यदत्थो पविसि कुटि,
विज्जा विमुत्ति पच्चेस्स मानानुसयमुज्जहन्ति ॥६०॥

वरगो छट्ठो

उद्दान

गोधिको च सुवाहु च वल्लियो उत्तियो इसि
अञ्जनावनियो थेरो दुवे कुटिविहारिनो
रमणीय कुटिको च कोसल्लव्हय-सीवलीति

वग्गो सुत्तमो

वप्पो थेरो

पस्सति पस्सो पस्सन्तं अपस्सन्तञ्च पस्सति;
अपस्सन्तो अपस्सन्तं पस्सन्तं च न पस्सतीति ॥६१॥

वज्जिपुत्तो थेरो

एकका मयं अरञ्जो विहराम अपविद्ध व वनस्मिदारुक्कं;
तस्स मे बहुका पिहयन्ति नेरयिका विय सग्गगामिनन्ति ॥६२॥
चुत्ता पतन्ति पतिता गिद्धा च पुनरागता
कतं किञ्चं रतं रम्मं सुत्वेन 'अन्वागतं सुत्तन्ति ॥६३॥

पक्खो थेरो

दुमव्हयाय उप्पन्नो जातो पण्डरकेतुना
केतुहा केतुना येव महाकेतुं पधंसयीति ॥६४॥

विमलकोण्डञ्जो थेरो

उक्खेपकतवच्छस्स संकलितं बहूहि वस्सेहि ।
तं भासति गहट्ठानं सुनिसिन्नो उळारपामुज्जो 'ति ॥६५॥

उक्खेपकतक्खो थेरो

अनुसासि महावीरो सब्बधम्मान पारणु;
तस्साहं धम्मं सुत्वान विहासिं सन्तिके रतो;
तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥६६॥

मेधियो थेरो

किलेसा ज्ञापिता मय्हं भवा सब्बे समूहता
विकल्हीणो जातिससारो नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥६७॥

एकधम्मसवनीयो थेरो

अधिचेतसो अप्पमज्जतो मुनिनो मोनपथेसु सिक्खतो
सोका न भवन्ति तादिनो उपसन्तस्स सदा सतीमतो 'ति ॥६८॥

एकुद्धानियो थेरो

सुत्वान धम्मं महतो महारसं सब्बज्जुतञ्जाणवरेण देसितं
मग्गं पपज्जि अमतस्स पत्तिया, सो योगक्खेमस्स पथस्स कोविदो'ति ॥६९॥

छन्नो थेरो

सीलमेव इध अग्गं, पज्जावा पन उत्तमो;
मनुस्सेसु च देवेसु सीलपज्जाणतो जयन्ति ॥७०॥

वग्गो सप्तमो

उद्दानं

वप्पो च वज्जिपुत्तो च पक्खो विमलकोण्डञ्जो
उक्खेपकतवच्छो च मेधियो एक धम्मिको
एकुद्धानिय-छन्नो च पुण्णथेरो महब्बलो 'ति.

प्रयणो थेरो

वग्गो अट्ठमो

सुसुखमनिपुणत्थदस्सिना मति कुसलेन निवानवुत्तिना
ससेवितबुद्धसीलिना निब्बानं नहि तेन दुल्लभन्ति ॥७१॥

वच्छपालो थेरो

यथा कलीरो सुसु वड्ढितग्गो दुन्निक्खमो होति पसाखजातो
एव अहं भरियायाजीताय; अनुमञ्ज मं पब्बञ्जितो 'मिह दानीति ॥७२॥

आतुमो थेरो

जिण्णञ्च दिस्वा दुक्खितञ्च व्याधित मतञ्चदिस्वा गतमायुसंखयं ।
ततो अहं निक्खमित्तुन पब्बजि पहाय कामानि मनोरमानीति ॥७३॥

माणवो थेरो

कामच्छन्दो च व्यापादो धीनमिदञ्च भिक्खुतो
उद्वच्चं विचिकिच्छा च सब्बसो 'व न विज्जतीति ॥७४॥

सुगामनो थेरो

साधु सुविहितान दस्सन, कङ्कसा छिज्जति, बुद्धि वड्ढति,
बालम्पि करोन्ति पण्डनं, तस्मा साधु सत समागमो 'ति ॥७५॥

सुसारदो थेरो

उप्पतन्तेसु निपते, निपतन्तेसु उप्पते,
वसे अवसमानेसु रममानेसु नो रमे 'ति ॥७६॥

पियञ्जहो थेरो

इदं पुरे चित्तमचारि चारिकं येनिच्छकं यत्थकामं यथासुखं
तदञ्जहं निग्गहिस्सामि योनिंसो हत्थिप्पभिन्नं विय अङ्कुसग्गहो 'ति ॥७७॥

उगो थेरो

[१७]

हत्थारोहपुत्तो थेरो

अनेकजातिसंसारं सन्धाविस्सं अनिब्बिसं,
तस्स मे दुक्खजातस्स दुक्खक्खन्धो अपग्ग्हो 'ति ॥७८॥

मेण्डसिरो थेरो

सब्बो रागो पहीनो मे, सब्बो दोसो समूहतो,
सब्बो मे विगतो मोहो, मांतिभूतो 'स्मि निब्बुतो 'ति ॥७९॥

रक्खितो थेरो

यं मया पकतं कम्म अप्पं वा यदि वा बहु
सब्बमेतं पग्गिक्खीणं नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥८०॥

उगो थेरो

वग्गो अट्टमो

उद्दानं

वच्छेपात्थो च यो थेरो आनुमो माणवो इमि
मुयामनो सुमारदो थेरो यो च पियञ्जहो
आरोहपुत्तो मेण्डसिरो रक्खितो उगमव्हयो 'ति ।

वग्गो दसमो

न तथामत सतरस सुधन्न य मयज्ज परिभुतं
अपरिमितदस्सिना गोतमेन बुद्धेन देसितो धम्मो 'ति ॥९१॥

परिपुण्णको थेरो

यस्सासवा परिकखीणा आहारे च अनिस्सितो
सुञ्जातो अनिमित्तो च विमोक्खो यस्स गोचरो,
आकासे व सकुन्तानं पदन्तस्स दुरन्नयन्ति ॥९२॥

विजयो थेरो

दुक्खा कामा एरक, न सुखा कामा एरक,
यो कामे कामयति दुक्ख सो कामयति एरक,
यो कामेन कामयति दुक्खं सो न कामयति एरका 'ति ॥९३॥

एरको थेरो

नमो हि तस्स भगवतो सक्कपुत्तस्स सिरीमतो
तेनाय अग्गपत्तेन अग्गधम्मो सुदेसितो 'ति ॥९४॥

मेत्तजि थेरो

अन्धो 'ह हननेत्तो 'स्मि, कन्तारद्धान पक्खन्नो,
सयमानो पि गच्छिस्स न सहायेन पापेना 'ति ॥९५॥

चक्खुपालो थेरो

एकपुप्फं चजित्वान असीति वस्सकोटियो
सग्गेमु परिचारेत्वा सेसकेनहि निब्बुतो 'ति ॥९६॥

खण्डसुमनो थेरो

हिंवा सत्तपल कंमं सोवण्णं सतराजिकं
अग्गहि मत्तिकापत्तं इदं दुतियाभिमेचनन्ति ॥९७॥

तिस्सो थेरो

रूपं दिस्वा सति मुट्ठा पियनिमित्तं मनसिकरोतो,
मारत्त चित्तो वेदेति तच्च अज्झोस तिट्ठति,
तस्म वड्ढन्ति आसवा भवमूलोपगामिनो 'ति ॥९८॥

अभयो थेरो

सद्दं सुत्वा सति मुट्ठा पियनिमित्तं मनसिकरोतो,
सारत्तचित्तो वेदेति तच्च अज्झोस तिट्ठति,
तस्म वड्ढन्ति आसवा संसारमुपगामिनो 'ति ॥९९॥

उत्तियो थेरो

सम्मप्यधानसम्पन्नो सतिपट्ठानगोचरो
विमुत्तिकुसुमसञ्छन्नो परि निब्बिस्मत्यनासवो 'ति ॥१००॥

देवसभो थेरो

वग्गो दसमो

उद्दानं

परिपुण्णको च विजयो एग्गो मेत्तजी भुनि
चक्खुपालो खण्डसुमनो तिस्सो अभयो च
उत्तियो महापञ्चो थेरो देवसभो पि वा 'ति ।

वग्गो एकादस्यो

हित्वा गिहित्व अनवोसिततो मुखनङ्गली ओदरिको कुसीतो
महावराहो व निवापपुट्ठो पुनप्पुनं गब्भमुपेति मन्दो 'ति ॥१०१॥

बेलट्ठकानि थेरो

मानेन वञ्चितासे संखारेसु मंकिलिस्समानासे
लाभालाभेन मथिता समाधिं नाधिगच्छन्तीति ॥१०२॥

सेतुच्छथेरो

नाहं एतेन अत्यिको सुखितो धम्मरसेन तप्पितो,
पीत्तवान रसग्गमुत्तमं न च काहामि विसेन सन्धवन्ति ॥१०३॥

बन्धुरो थेरो

लहुको वत मे कायो फुट्ठो च पीतिसुखेन विपुलेन
तूलामिव एरित मालुतेन पिलवति व मे कायो 'ति ॥१०४॥

खित्तो थेरो

उक्कण्ठितो पि न वसे रममानो पि पक्कमे
न त्वेवानत्यसहितं वसे वासं विचक्खणो 'ति ॥१०५॥

मलितवम्बो थेरो

सतलिङ्गस्स अत्यस्स सतलक्खणधारिनो
एकङ्गदस्सी दुम्भेधो सतदस्सी च पण्डितो 'ति ॥१०६॥

सुहेमन्तो थेरो

पब्बजि तुलयित्तवान अगारस्मा अनगारियं;
तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०७॥

धम्मसवो थेरो

सवीसंवस्ससतिको पब्बजि अनगारियं;
तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥१०८॥

धम्मसवपित्तु थेरो

न नूनाय परमहितानुकम्पिनो रहोगतो अनुविगणोति सासनं;
तथा हयं विहरति पाकतिन्द्रियो भिगी यथा तरुणजातिका व नेति ॥१०९॥

सङ्खरक्खितो थेरो

नगा नगग्गेसु सुसंविरुद्धहा उदग्गमेघेन नवेन सित्ता
विवेककामस्स अरञ्जासञ्जितो जनेति भिय्यो उसभस्स कल्यतन्ति ॥११०॥

उसभो थेरो

वग्गो एकादसमो

उद्दानं

बेलट्टकानि सेतुवच्छो बन्धुरो खितको इसि
मलितवम्भो मुहेमन्तो धम्मसवो धम्मसवपिता
सघरक्खितथेरो च उसभो च महामुनि ।

वग्गो द्वादस्यो

दुप्पब्बज्ज वे, दुरधिवासा गेहा, धम्मो गम्भीरो, दुरधिगमा भोगा;
किच्छावुत्तिनो इतरीतरेनेव, युत्त चिन्तेत्तु सत्तमनिच्चतन्ति ॥१११॥

जेन्तो थेरो

तेविज्जो 'ह महाझायी चेतो समथकोविदो,
सदत्थो मे अनुप्पत्तो, कत्त बुद्धस्स सासनन्ति ॥११२॥

क्खगोत्तो थेरो

अच्छोदिका पुथुसिला गोतङ्गुलमिगायुता
अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मन्ति ॥११३॥

वनवच्छो थेरो

कायदुट्ठुल्लगरुनो हिंय्यमानम्हि जीविते
सरीरसुखगिद्धस्स कुतो समणसाधुता 'ति ॥११४॥

अधिसुत्तो थेरो

एसावहिंय्यसे पब्बतेन बहुकुटजसल्लकिकेन
नेमादकेन गिरिना यसस्सिना परिच्छदेना 'ति ॥११५॥

महानामो थेरो

छ फस्सायतने हित्वा गुत्तद्वारो सुसंवृतो
अघमूलं वमित्वान पत्तो मे असवक्खयो ॥११६॥

पारापरियो थेरो

मुविलित्तो सुवसनो सब्बाभरणभूसितो
तिस्सो विज्जा अज्झगमि कत्त बुद्धस्स सासनन्ति ॥११७॥

यसो थेरो

अभिसत्थो व निपतति वयो, रूपमञ्जमिव तथेव सन्तं ;
तस्सेव सतो अविप्पवसतो अञ्जस्सेव सरामि अत्तानन्ति ॥११८॥

किम्बिलो थेरो

रुक्खमूलग्रहनं पसक्किय निब्बानं हृदयास्म ओसिय
झाय गोतम मा च पमादो, किन्ते बिळिबिळिका करिस्सतीति ॥११९॥

वज्जिपुत्तो थेरो

पञ्चक्खन्धा परिञ्जाता तिट्ठन्ति छिन्नमूलका,
दुक्खक्खयो अनुपत्तो, पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥१२०॥

इसिदत्तो थेरो

वग्गो द्वादसमो, तद्गुहानं भवति:

जेन्तो च वच्छगोत्तो च वच्छो च वनपब्ध्यो
अधिमुत्तो महानामो पारापरियो यसो पि च
किम्बिलो वज्जिपुत्तो च इसिदत्तो महायसो 'ति ॥
वीमुत्तरसत् थेरा कतकिच्चा अनासवा
एकके 'व निपातम्हि सुसंगीता महेसिभीति ।

निट्ठितो एकनिपातो

दुकनिपातो

नत्थि कोचि भवो निच्छो संखारा वापि सस्सता,
उप्पज्जन्ति च ते खन्धा चवन्ति अपरापरं ॥१२१॥
एतं आदीनवं ज्ञत्वा भवे न 'अम्हि अनत्थिको,
निस्सटो सब्बकामेहि, पत्तो मे आसवक्खयो'ति ॥१२२॥
इत्थं सुदं आयस्मा उत्तरो थेरो गाथायो अभासित्था'ति
न इदं अनयेन जीवितं, नाहारो हृदयस्स सन्तिको,
आहारट्टित्तिको समुस्सयो, इति दिस्वान चरामि एसनं ॥१२३॥
पड्ढको'ति हि नं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु,
मुखुमं सत्तल्लं दुण्णहं सक्कारो कापुरिसेन दुज्जहो'ति ॥१२४॥
इत्थं सुदं आयस्मा पिण्डोळभारद्वाजो थेरो गाथायो अभासित्था'ति ।
मक्कटो पञ्चद्वारायं कुट्टिकायं पसक्किय
झारेन अनुपरियेति घट्टयन्तो मुहुं मुहु ॥१२५॥
तिट्ठ मक्कट मा घावि, न हि ते तं यथा पुरे;
निग्गहीतो 'सि पञ्चाय, नेतो दूरं गमिस्ससीति ॥१२६॥

वल्लियो थेरो

तिण्ण मे ताळपत्तान गङ्गातीरे कुटी कता,
छवसित्तो व मे पत्तो , पंसुकूलञ्च चीवरं ॥१२७॥
द्विन्न अन्तरवस्सानं एका वाचा मे भासिता,
ततिये अन्तरवस्समिह तमोखन्धो पदालितो'ति ॥१२८॥

गङ्गातीरियो भिक्खु

अपि चे होति तेविज्जो मच्चुहायी अनासवो
अप्पज्जातो'ति नं वाला अवज्जानन्ति अज्जानता ॥१२९॥
यो च खो अन्नपानस्स लाभी होति'घ पुग्गलो,
पाप धम्मो पि चे होति, सो नेस होति सक्कतो'ति ॥१३०॥

अजिनो थेरो

यदाहं धम्ममस्सोसि भासमानस्स सत्युनो,
न कङ्कखमभिजानामि सब्बञ्जु अपराजिने ॥१३१॥
सत्थ वाहे महावीरे सारथीनं वरुत्तमेः
मग्गे पटिप्पदायं वा कङ्कखा मय्हं न विज्जतीति ॥१३२॥

मेळजिनो थेरो

यथा अगारं दुच्छन्नं वुट्ठि समतिविज्जति,
एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्जति ॥१३३॥
यथा अगारं सुच्छन्नं वुट्ठि न समतिविज्जति
एवं सुभासितं चित्तं रागो न समतिविज्जति ॥१३४॥

राधो थेरो

खीणा हि मय्हं जाति, वुसितं जिनसासनं -
पहीनो जालसंखातो, भवनेति समूहता ॥१३५॥
यस्सत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारिय,
सो मे अत्थो अनुप्पतो सब्बसंयोजनक्कवयो ॥१३६॥

सुराधो थेरो

सुखं सुपन्ति मुनयो ये इत्थीसु न बज्जरे
सदा वे रक्खितब्बासु यासु सच्चं सुदुल्लभं ॥१३७॥
वधं चारिम्ह ते काम, अनणा दानि ते मय,
गच्छाम दानि निब्बानं यत्थ गन्त्वा न सोचतीति ॥१३८॥

गोतमो थेरो

पुब्बे हनति अत्तानं पच्छा हनति सो परे;
सुहत्तं हन्ति अत्तानं वीतं सेनेव पक्खिमा ॥१३९॥
न ब्राह्मणो बहिवण्णो, अन्तो वण्णोहि ब्राह्मणो,
यास्मि पापानि कम्मामि सवे कण्हो सुजम्पतीति ॥१४०॥

वसभो थेरो

वग्गो पठमो

उद्दानं

उत्तरो चे व पिण्डोलो वल्लियो तीरियो इसि
 अजिनो च मेळजिनो राधो मुराधो गोतमो
 वसभेन इमे होन्ति दस धेरा महिद्धिका'ति.

वग्गो दुतियो

सुस्मृता सुतवड्ढनी सुतं पञ्चाय वड्ढनं,
अञ्चाय अत्थ जानाति, जातो अत्थो मुखावहो ॥१४१॥
सेवेथ पन्तानि सेनासनानि, चरेय्य-
संयोजनविप्पमोक्खं :
मचे रति नाधिगच्छेय्य तत्थ सघे-
वसे रक्खितत्तो मतीमा'ति ॥१४२॥

महाबुन्दो थेरो

ये खो ते वेधमिस्सेन नानत्थेन च कम्मना
मनुस्से उपरुन्धन्ति फरुसुपक्कमा जना,
ते पि तथेव कीरन्ति, न हि कम्मं पनस्सति ॥१४३॥
य करोति नरो कम्मं कल्याणं यदि पापक,
तस्स नस्सेव दायादो यं य कम्मं पकुब्बतीति ॥१४४॥

जोतिदासो थेरो

अच्चयन्ति अहोरत्ता, जीवितं उपरुज्झति,
आयु खीयति मच्चान कुल्लडीन व वोदकं ॥१४५॥
अथ पापानि कम्मानि करं बालो न बुज्झति
पच्छास्स कटुवं होति, विपाको हिम्म पापको'ति ॥१४६॥

हेरञ्जकानि थेरो

परित्तं दाग्गमारुह्य यथा सीदे महण्णवे
एव कुसीतमागम्म साधुजीवी पि सीदति;
तस्मा त परिवज्जेय्य कुसीतं हीनवीरिय ॥१४७॥
पविवित्तेहि अरियेहि पहितत्तेहि ज्ञायिहि
निच्च आरद्धविरियेहि पण्डितेहि सहावसे'ति ॥१४८॥

सोभमित्तो थेरो

जनो जनम्हि सम्बद्धो, जनमेवस्सितो जनो,
जनो जनेन हेठियति, हेठेति च जनो जनं ॥१४९॥
कोहि तस्स जनेनत्थो जनेन जनितेन वा
जनं ओहाय गच्छन्तं हेठयित्वा बहं जनन्ति ॥१५०॥

सम्बमित्तो थेरो

काली इत्थि ब्रह्मती धङ्करूपा सत्थिञ्च भेत्वा
अपरञ्च सत्थिञ्
बाहञ्च भेत्वा अपरञ्च बाहुं सीसञ्च भेत्वा
दधियालकं व एसा निसिन्ना अभिसद्धित्वा ॥१५१॥
यो वे अविद्धा उपधि करोति पुनप्पुनं दुक्खमुपेति मन्दो
तस्मा पजान उपधि न कयिरा माहं पुन भिन्नसिरो सयिस्सन्ति ॥१५२॥

महाकालो थेरो

बाहू सपत्तं लभन्ति मण्डो संपाटिपारुतो
लाभी अन्नस्स पानस्स वत्थस्स सयनस्स च ॥१५३॥
एतमादीनव जत्वा सक्कारेसु महब्भय
अप्पलाभो अनवस्सुतो सतो भिक्खु परिव्वजे'ति ॥१५४॥

तिस्सो थेरो

पाचीनवंसदायम्हि सक्कपुत्ता सहायका
पहायनप्पके भोगे उञ्छापत्तागते रता ॥१५५॥
आरद्धविरिया पहित्ता निच्च दब्धपरवकमा
रमन्ति धम्मरतिया हित्वान लोकिक्कं रतिन्ति ॥१५६॥

किम्बिलो थेरो

अयोनिसोमनसीकारा मण्डनं अनुयुञ्जिस्सं
उद्धत्तो चपलो चासि कामरागेन अट्टितो ॥१५७॥
उपायकुसलेनाहं बुद्धेनादिच्चबन्धुना
योनिसो पटिपज्जित्वा भवे चित्तं उदब्बहन्ति ॥१५८॥

नन्दो थेरो

परे च नं पसंसन्ति अत्ता चे असमाहितो :

मोघं परे पसंसन्ति, अत्ता हि असमाहितो ॥१५९॥

परे च नं गरहन्ति अत्ता चे सुसमाहितो

मोघं परे गरहन्ति, अत्ता हि सुसमाहितो ॥१६०॥

सिरिमा थेरो

वग्गो दुतियो

उद्दानं

कुन्दो च जातिदामो च थेरो हेरञ्जकानि यो

सोममित्तो सब्बमित्तो काळो तिस्सो च किम्बलो

नन्दो च सिरिमा चे व दस थेरा महिद्धिका'ति

वग्गो ततियो

खन्धा मया परिञ्जाता, तण्हा मे सुसमूहता,
भाविता मम बोज्झङ्गा, पत्तो मे आसवक्खयो ॥१६१॥
सो'हं खन्धे परिञ्जाय अब्बहिन्वान जालिनि
भावयित्वान बोज्झङ्गे निब्बायिस्सं अनासवो'ति ॥१६२॥

उत्तरो थेरो

पनादो नाम सो राजा यस्स यूपो सुवण्णयो
तिरियं सोळसपब्बेधो उब्भमाहु सहस्सघा ॥१६३॥
सहस्सकण्डु सतभेण्डु घजालु हरितामयो,
अनच्चुं तत्थ गन्धब्बा छ सहस्मानि सत्तघा'नि ॥१६४॥

भद्दिजि थेरो

सतिमा पञ्चावा भिक्खु आरद्धबलवीरियो
पञ्चकप्पसनानाहं एकरत्ति अनुस्सरि ॥१६५॥
चत्तारो सतिपट्टाने सत्त अट्ठ च भावयं
पञ्च कप्पसता नाह एकरत्ति अनुस्सरिन्ति ॥१६६॥

सोभितो थेरो

यं किञ्चं दट्ठहविरियेन यं किञ्चं बोधुमिच्छता
करिस्सं नावरज्झिस्स, पस्स विरियपरक्कमं ॥१६७॥
त्वञ्च मे मग्गमक्खाहि अञ्जसं अमतोगधं;
अहं मोनेन मोनिस्सं गङ्गासोतो व सागरन्ति ॥१६८॥

वल्लियो थेरो

केसे मे ओलिखिस्सन्ति कप्पवो उपमकामि,
ततो आदास आदाय सरीर पच्चवेक्खिस्स ॥१६९॥

तुच्छो कायो अदिसित्थ, अन्धकारे तमो व्यगा;
सब्बे चोळा समुच्छिन्ना नत्थि दानि पुनब्बभवो'ति ॥१७०॥

वीतसोको थैरो

पञ्चनीवरणे हित्वा योगक्खेमस्स पत्तिया
धम्मादासं गहेत्वान जाणदस्सजमततो ॥१७१॥
पच्चवेत्थिक्कं डम कायं सब्बं सन्तरबाहिं
अञ्जनञ्च बहिद्वा च तुच्छो कायो अदस्सथा'ति ॥१७२॥

पुण्यमासो थैरो

यथापि भट्टो आजञ्जो खलित्वा पत्तिट्ठति,
भिय्यो लद्धान मवेगं अदीनो वहते धुरं ॥१७३॥
एवं दस्सनसम्पन्नं सम्मासम्बुद्धसावकं
आजानियं मं धारेथ पुत्तं बुद्धस्स ओरसन्ति ॥१७४॥

नन्दको थैरो

एहि नन्दकं गच्छाम उपज्झायस्मं सन्तिकं,
सीहतादं नदिस्सामं बुद्धसेट्ठस्मं सम्मुखा ॥१७५॥
याय नो अनुकम्पाय अम्हे पब्बाजयि मुनि,
सो नो अत्थो अनुप्पत्तो सब्बसयोजनक्खयो'ति ॥१७६॥

भरतो थैरो

नदन्ति एवं सप्पञ्जा सीहा व गिरिगम्भरे
वीरा विजितसंगामा जेत्वा मारं सबाहन ॥१७७॥
सत्था च परिचिण्णो मे, धम्मो मंघो च पूजितो,
अहञ्च वित्तो सुमनो पुत्तं दिस्वा अनासवन्ति ॥१७८॥

भारद्वाजो थैरो

उपामिता सप्पुरिसा, मुता धम्मा अभिण्हसो,
सुत्वान पटिपज्जिस्सं अञ्जसं अमतोगध ॥१७९॥
भवरागहतस्स मे सतो भवरागो पुन मे न विज्जति
न चाहु न च मे भविस्सति न च मे एतरहि पि विज्जतीति ॥१८०॥

कण्हदिन्नो थेरो

वग्गो ततियो

उद्दानं

उत्तरो भद्दिजे थेरो सोभितो वल्लियो इसि
वीतसोको च सो थेरो पुण्णमासो च नन्दको
भरतो भारद्वाजो च कण्हदिन्नो महामुनीति.

वर्गो चतुर्थो

यतो अहं पञ्चजितो सम्मासम्बुद्धसासने,
विमुच्चमानो उगच्छि, कामधातु उपचवग ॥१८१॥
ब्रह्मनो पेक्खमानस्स ततो चित्तं विमुच्चि मे,
अकुप्पा मे विमुत्तीति सब्बसंयोजनक्खया 'ति ॥१८२॥

मिगसिरो थेरो

अनिच्चानि गहकानि तत्थ तत्थ पुत्तप्पुत्तं,
गहकारं गवेसन्तो दुक्खा जाति पुत्तप्पुत्त ॥१८३॥
गहकारक दिट्ठो'सि पुत्त गेहं न काहसि;
सब्बा ते फामुका भग्गा थूणीरा च विदालिता;
विपरियादिकत्तं चित्तं इधेव विधमिस्सतीति ॥१८४॥

सिक्को थेरो

अरहं सुगतो लोके वातेहावाधिनो मुनिः
सचे उण्होदकं अत्थि मुनिनो देहि ब्राह्मण ॥१८५॥
पूजितो पूजनेय्यानं सक्करेय्यानं सक्कतो
अपचितो अपचिनेय्यानं तस्स इच्छामि हातवे'ति ॥१८६॥

उपवानो थेरो

दिट्ठा मया धम्मघरा उपासका कामा
अनिच्चा इति भासमाना
सारत्तरत्ता मणिकुण्डलेसु पुत्तेसु दारेसु
च ते अपेक्खा ॥१८७॥
अट्ठा न जानन्ति यथा व धम्मं, कामा अनिच्चा इति
चापि आहु, रागञ्च तेसं न बलत्थि छेत्तु तस्मा
सिता पुत्तदारं धनञ्च्चा'ति ॥१८८॥

इसिदिन्नो थेरो

देवो च वस्सति देवो च गळगळायति एको चाहं
 भेरवे बिले विहरामिः
 तस्स मय्हं एककस्स भेरवे बिले विहरतो
 नत्थि भय वा छम्भितत्तं वा लोमहंसो वा ॥१८९॥
 धम्मता ममेसा यस्स मे एककस्स भेरवे बिले विहरतो
 नत्थि भयं वा छम्भितत्तं वा लोमहंसोवा'ति ॥१९०॥

सम्बुलकच्चानो थेरो

कस्स सेलूपमं चित्तं ठितं नानुपकम्पति
 विरत्तं रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
 यस्सेवं भावितं चित्तं कुतो तं दुक्खमेस्सति ॥१९१॥
 मम सेलूपमं चित्तं ठितं नानुपकम्पति
 विरत्तं रजनीयेसु कुप्पनीये न कुप्पति
 ममेवं भाविनं चित्तं, कुतो मं दुक्खं मेस्सतीति ॥१९२॥

खित्तको थेरो

न ताव सुपितुं होति रत्तिं नक्खत्तमालिनी,
 पटिजग्गितुमेवेसा रत्तिं होति विजानता ॥१९३॥
 हत्थिक्खन्धावपतितं कुञ्जरं चे अनुक्कमे
 सगामे मे भत सेय्यो यञ्चे जीवे पराजितो'ति ॥१९४॥

सोणो पोटिरियपुत्तो

पञ्च कामगुणे हित्वा पियरूपे मनोरमे
 सद्धाय अभिनिक्खम्मं दुक्खस्सन्तकरो भवे ॥१९५॥
 नाभि नन्दामि मरणं नाभि नन्दामि जीवितं
 कालञ्च पटिकझ्झामि सम्पज्जानो पत्तिस्सतो'ति ॥१९६॥

निसभो थेरो

अम्बपल्लवसकामं अंसे कत्तवान् चीवरं
 निसिन्नो हत्थिगीवायं गामं पिण्डाय पाविसि ॥१९७॥
 हत्थिक्खन्धतो ओरुय्ह संवेगं अलभिनन्दा
 सोहं दित्तो तदा सन्तो, पत्तो मे आसवक्खयो'ति ॥१९८॥

कप्पट कुटो थेरो

[३७]

उसभो थेरो

अयं इति कप्पये कप्पटकुरो, अच्छाय अतिभग्गिाय
अमतघटिकाय चम्मकनमत्तो,

कतपदं झानानि ओचेतु ॥१९९॥

मा खो त्वं कप्पट पचालेसि मातं

उपकण्णकम्हि तालेस्सं;

न ह त्वं कप्पट मत्तमज्झामि सधमज्झम्हि

पचलायमानो'ति ॥२००॥

कप्पट कुटो थेरो

वग्गो चतुत्थो, उद्दानं

मिगसिरो सिक्खो व उपवानो च पण्डितो

इसि दिन्तो च कच्चानो खित्तो च महावमी

पोटिरियपुत्तो निसभो उसभो कप्पट कुरो'ति

वग्गो पञ्चमो

अहो बुद्धा अहो धम्मा अहो नो सत्थुसम्पदा
यत्थ एतादिस धम्म सांवको सच्छिकाहिंति ॥२०१॥
असंखेय्येसु कप्पेसु सक्कायाधिगता अहु,
तेसं अयं पच्छिमको, चरिमो, य समुत्सयो
जातिमरणसंसारो, नत्थि दानि पुनब्भवो'ति ॥२०२॥

कुमारकस्सपो थेरो

यो हवे दहदो भिक्खु युञ्जनि बुद्धसामने,
जागरो पति सुत्तेसु, अमोघन्तस्स जीवितं ॥२०३॥
तस्मा सद्धञ्च सीलञ्च पसादं धम्मदस्सन
अनुयुञ्जेथ मेधावी सरं बुद्धान सासनन्ति ॥२०४॥

धम्मपालो थेरो

कस्सिन्द्रियानि समथ गतानि अस्सा
यथा सारथिना सुदन्ता
पहीनमानस्स अनासवस्स देवापि
तस्स पिहयन्ति तादिनो ॥२०५॥
मयिह्निन्द्रियानि समथ गतानि अस्सा यथा सारथिना सुदन्ता
पहीतमानस्स अनासवस्स देवापि मय्हं पिहयन्ति तादिनो'ति ॥२०६॥

ब्रह्मालि थेरो

छविपापक चित्तभट्टक मोघराज ससतं समाहितो,
हेमन्तिकसीतकालरत्तियो, भिक्खु त्वं 'सि कथं करिस्ससि ॥२०७॥
सम्पन्नसस्सा मगधा केवला इति मे सुतं;
पलालच्छन्नको सेय्यं यथञ्जो सुखजीविनो 'ति ॥२०८॥

मोघराजा थेरो

न उक्खिपे नो च परिक्खिपे परे, न ओक्खिपे पारगतं न एरए,
न चत्तवण्णं परिसासु व्याहरे अनुद्धतो सम्मितभाणि सुब्बतो ॥२०९॥
मुसुखमनिपुणत्यदस्सिना मति कुसलेन निवात वुत्तिना
संमेवितबुद्धसीलिना निब्बानं नहि तेन दुल्लभन्ति ॥२१०॥

विसाखोपञ्चालिपुत्तो थेरो

नदन्ति मोरा मुसिखा सुपेखुणा मुनीलगीवा मुमुखा मुगज्जिनो,
मुसद्ला चापि महा मही अयं सुव्यापितम्बु, सुवलाहक नभं ॥२११॥
सुकल्लरूपो सुमनस्स ज्ञायितुं मुनिकवमो साधु मुबुद्धसासने;
मुसुक्कमुक्कं निपुणं मुदुदुसं फुसाहितं उत्तममच्चवृतं पदन्ति ॥२१२॥

चूलको थेरो

नन्दमानागतं चित्तं मूलमारोपमानकं,
तेन तेनेव वजसि येन मूलं कलिङ्गारं ॥२१३॥
ताहं चित्तकलिं ब्रूमि तं ब्रूमि चित्तदुग्धकं;
मत्था ते दुल्लभो लद्धो; मानत्थे म नियोजयीति ॥२१४॥

अनूपमो थेरो

संसरं दीघमद्धानं गनीसु परिवत्तिसं
अपस्सं अरियमच्चानि अन्धभूतो पुथुज्जतो ॥२१५॥
तस्स मे अप्पमत्तस्स संसारा विनलीकता,
सब्बा गती समुच्छिन्ना, नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥२१६॥

वज्जितो थेरो

अस्सत्थे हरितोभासे संविरूळह्मि पादपे
एकं बुद्धगतं सज्जं अलभित्थं पतिस्सनी ॥२१७॥
एकतिमे इतो कणे यं सज्जं अलभिन्तदा,
तस्सा सज्जाय वाहसा पत्तो मे आसवक्खयो 'ति ॥२१८॥

सन्धितो थेरो

पञ्चमो वग्गो

उद्दानं

कुमारकरसपो थेरो धम्मपालो च ब्रह्मालि
 मोघराजा विसालो च चूळको च अनूपमो
 वज्जितो संधितो थेरो किलेसरजवाहनो 'ति
 गाथा दुक्कनिपातम्हि नवुति चेव अट्ट च
 थेरा एकूनपञ्जारा भासिता तयकोविदा ।

दुक्कनिपातो

तिकनिपातो

अयोनिमुद्धि अन्वेस आगि परिचरि वने,
मुद्धिमसगमजानन्तो अकासि अमर तप ॥२१९॥
तं मुखेन सुखं लद्धं, पस्स धम्ममुदम्मत;
निस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्म सामनं ॥२२०॥
ब्रह्मबन्धु पुरे आमि, इदानी खो'मिह ब्राह्मणो,
तेविज्जो न्हानको चमिह मोत्तियो चमिह वेदग् 'ति ॥२२१॥

अङ्गणिक भारद्वाज थेरो

पञ्चाहाह पन्वजितो सेखो अप्पत्तमानसो
विहार मे पविट्ठस्स चेतसो पणिघी अहु ॥२२२॥
नामिस्सं न पविस्सामि विहारतो न निक्खमे
न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासल्ले अनूहते ॥२२३॥
तस्मिं गेवं विहरतो पस्म विरियागक्कम,
निस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कनं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२२४॥

पच्चमो थेरो

यो पुब्बे कण्णीयानि पच्छा मो कानुमिच्छति,
मुखा सो धमते ठाना पच्छा च भनुत्तप्पति ॥२२५॥
यच्चि कयिरा तच्चि वदे, य न कयिरा न तं वदे,
अकरोन्त भासमानं परिजानन्ति पण्डिता ॥२२६॥
मुमुखं वत निब्बानं सम्मामम्बुद्धदेसित
अभोक विरजं खेमं यत्थ दुक्खं निरुज्जतीति ॥२२७॥

वाकुल धेरो

मुखञ्चे जीवितुं इच्छे सामञ्जास्मि अपेक्खवा,
 संधिकं नातिमञ्जोय्य चीवरं पानभोजनं ॥२२८॥
 मुखञ्चे जीवितुं इच्छे सामञ्जारिम अपेक्खवा,
 अहिमुसिकसोब्भं व सेवेथ सयनासनं ॥२२९॥
 मुखञ्चे जीवितुं इच्छे सामञ्जास्मि अपेक्खवा
 इतरीतरेन तुस्सेय्य एकधम्मञ्च भावये 'ति ॥२३०॥

धनियो धेरो

अतिसीतं अत्युण्हं अतिमायं इदं अहं,
 इति विस्सट्ठकम्मन्ते खणा अच्चेन्ति माणवे ॥२३१॥
 यो च सीतञ्च उण्हञ्च तिणा भिय्यो न मञ्जति
 करं पुरिसकिच्चानि, सो सुखा न विहायति ॥२३२॥
 दब्बं कुसं पोटकिं उमीरं मुञ्जपव्वज
 उरसा पनुदहिम्मामि विवेकमनब्रूहयन्ति ॥२३३॥

मातङ्गपुत्तो धेरो

ये चित्तकथी बहुस्मुता समणा पाटलिपुत्तवासिनो
 नेसञ्जतरो यमायुवा द्वारे तिट्ठति खुज्जमोलुभितो ॥२३४॥
 ये चित्तकथी बहुस्मुता समणा पाटलिपुत्तवासिनो
 तेसञ्जतरो यमायुवा द्वारे तिट्ठति मालुनेरिनो ॥२३५॥
 सुयुद्धेन सुयिद्धेन संगामविजयेन च
 ब्रह्मचरियानुचिण्णेन एवायं सुखमेधति ॥२३६॥

खुज्जसोभितो धेरो

यो 'ध कोचि मनुस्सेसु परपाणानिहिसति
 अस्मा लोका परम्हा च उभया धंसते नरो ॥२३७॥
 यो च भेत्तेन चित्तेन सब्बपाणानुक्कप्पति,
 बहुं हि सो पसवति पुञ्जं तादिसको नरो ॥२३८॥
 मुभासितस्स सिक्खेय समणुपासजस्स च,
 एकासनस्स च रहो चित्तबूपसमस्स चा 'ति ॥२३९॥

वारणो धेरो

एको पि सद्धो मेधावी अस्सद्धानिध जातिनं
धम्मट्ठो सीलसम्पन्नो होति अत्थाय बन्धुनं ॥२४०॥
निगगय्ह अनुकम्पाय चोदिता जातयो मया
जातिबन्धवपंभेन कारं कत्वान भिक्खुसु ॥२४१॥
ते अब्भतीता कालकता पत्ता ते तिदिवं सुखं,
भातरो मय्हं माता च मोदन्ति कामकामिनो 'ति ॥२४२॥

पस्सिक्खत्थेरो

काला पब्बङ्गसंकासो किमो धमनिमंततो
मत्तञ्जु अन्नपानम्हि अदीनमनेसो नरो ॥२४३॥
फुट्ठो डंसेहि मकसेहि अरञ्जस्मि ब्रहावने
नागो संगामसीसे व सनो तत्राधिवासये ॥२४४॥
यथा ब्रह्मा तथा एको, यथा देवो तथा दुवे,
यथा गामो तथा तयो, कोलाहलं तनुत्तरिन्ति ॥२४५॥

यसोजत्थेरो

अहु तुय्ह पुरे सद्धा, सा ते अज्ज न विज्जति ।
यं तुय्हं तुय्हं एवेतं; नत्थि दुच्चग्गि मम ॥२४६॥
अग्निच्चा हि चला सद्धा एवं दिट्ठा हि सा मया;
रज्जन्ति पि विरज्जन्ति नत्थ किं जिय्यते मुनि ॥२४७॥
पच्चनि मुनिनो भत्तं थोकं थोकं कुले कुले;
पिण्डकाय चारिस्सामि, अत्थि जङ्घबलं ममा'ति ॥२४८॥

साटिमत्तियत्थेरो

सद्धाय अभिनिक्खम्म नव पब्बजितो नवो
मित्ते भजेय्य कल्याणे सुद्धाजीवे अतन्दिते ॥२४९॥
सद्धाय अभिनिक्खम्म नवपब्बजितो नवो
संघास्मि विहरं भिक्खु सिक्खेय वितयं बंधो ॥२५०॥
सद्धाय अभिनिक्खम्म नवपब्बजितो नवो
कप्पा कप्पेसु कुसलो चरेय्य अपुरक्खतो ॥२५१॥

उपालि थेरो

पण्डितं वत मं सन्तं अलमत्थ विचिन्तकं
 पञ्चकामगुणा लोके सम्मोहा पातयिषु मं ॥२५२॥
 पक्खलो मारविसये दळ्हस्ल्लसमपितो
 असक्खि मच्चुराजस्स अहं पासा पमुच्चितु ॥२५३॥
 सब्बे कामा पहीना मे, भवा सब्बे पदालिता
 विक्खीणो जाति ससारो नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥२५४॥

उत्तरपालो थेरो

सुणाय जातयो सब्बे यावन्तेत्थ समागता,
 धम्मं वो देसयिस्सामि; दुक्खा जाति पृतप्पुनं ॥२५५॥
 आरभथ निक्खमय युञ्जथ बुद्धमासने
 धुताथ मच्चुनो सेतं नळ्ळागारं व कुञ्जरौ ॥२५६॥
 यो इमस्मि धम्मविनये अप्पमत्तो विहेस्सति,
 पहाय जातिमसार दुक्खस्सन्तं करिस्सनीति ॥२५७॥

अभिभूतत्थेरो

संमर हि निरयं अगच्छिमं, पेतलोकमगमं पुनप्पुनं,
 दुक्खममग्धि पि तिरच्छानयोनिया नेकधा हि वुसितं चिरं मया ॥२५८॥
 मानुसो पि च भवो 'भिग्गधितो, सग्गकायमगमं सकिं सक्कि,
 रूपधातुसु अरूपधातुसु नेवसञ्जिमु असञ्जिमु द्वितं ॥२५९॥
 सम्भवा सुविदिता अमारका संवता पचलिता सदेरिता,
 त विदित्वा महमत्तसम्भवं सन्निमेव,
 सतिमा समज्जगन्ति ॥२६०॥

गोतमो थेरो

यो पुब्बे करणीयानि . . (२६१-२६३=२२५-२२७) ॥२६१-२६३॥

हारितो थेरो

पापमिन्ने विवज्जेत्वा भजेय्युत्तमपुग्गले
 ओवादे चस्स तिट्ठेय्य पत्थेन्तो अवलं सुखं ॥२६४॥
 परित्तं दारुम . . . (२६५, २६६=१४७, १४८) ॥२६५-२६६॥

विमलो थेरो

[४५]

विमलो थेरो

उद्दानं

अङ्गणिको भारद्वाजो पञ्चयो बाकुलो इसि
धनियो मानङ्गपुत्तो सोभितो वारणो इसि
पस्सिको च यसोजो च साटिमत्तिपुपालि च
उत्तरपालो अभिभूतो गोतमो हारितो पि च
थेरो निकपातम्हि निब्बाने विमलो कत्तो;
अट्टतालीस गाथायो थेरो सोळस कित्तिता 'ति ॥

त्तिकनिपातो निद्दिठतो

चतुष्कनिपातो

अलंकता सुवसना मालिनी चन्दनुस्सदा
 मज्झे महापथे नारी नुरिये नच्चति नट्टकी ॥२६७॥
 पिण्डिकाय पविट्ठो 'ह गच्छन्तो नं उदिक्खिसं
 अलंकतं सुवसनं मच्चुपासं व ओड्डितं ॥२६८॥
 ततो मे मनसीकारो योनिं सो उदपज्जथा
 आदीनवो पातुरहू, निब्बिदा समतिट्ठत, ॥२६९॥
 ततो चित्तं विमुञ्चि मे, पस्स धम्मसुधम्मनं ।
 तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनन्ति ॥२७०॥

नागसमाल थेरो

अहं मिद्धेन पकतो विहारा उननिक्खमिं;
 चङ्कमं अभिरूहन्तो तथेव पपतिं छमा ॥२७१॥
 गत्तानि परिमज्जित्वा पुन पारुय्ह चङ्कमं
 चङ्कमे चङ्कमिं सो 'हं अज्झत्तं सुसमाहितो ॥२७२॥
 ततो मे.....(२७३, २७४ = २६९, २७०) ॥२७३-२७४॥

भगुथेरो

परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमामसे;
 ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेधगा ॥२७५॥
 यदा च अविजानन्ता इरियन्त्यमरा विया,
 विजानन्ति च ये धम्मं आतुरेसु अनातुरा ॥२७६॥
 यं किञ्चि सिधिलं कम्मं संकिलिट्ठञ्च यं वतं
 संकस्सरं ब्रह्मचरियं, न तं होति महप्फलं ॥२७७॥
 यस्स सङ्गहाचारीसु गारवो नूपलब्धति,
 आरका होति सद्धम्मा नमं पुषविद्या यथा 'ति ॥२७८॥

सभियो थेरो

धिरत्पु पूरे दुग्गन्धे मारपक्खे अवस्सुते;
 नव सोतानि ते काये यानि सन्दन्ति सब्बदा ॥२७९॥
 मा पुराणममञ्जित्थो मासादेसि तथागतं;
 सग्गे पि ते न रज्जन्ति किमद्दग पन भानुसे ॥२८०॥
 ये च खो बाला दुग्मेधा दुम्मन्ती मोहपास्ता
 तादिसा तत्थ रज्जन्ति मारखित्तस्मि बन्धने ॥२८१॥
 येसं रागो च दोसो च अबिज्जा च विराजिता
 तादी तत्थ न रज्जन्ति छिन्नसुत्ता अबन्धना 'ति ॥२८२॥

नन्दको थेरो

पञ्चपञ्चास वस्सानि रजोजलमधारयि,
 भुञ्जन्तो मासिकं भत्तं केसगस्सु अलोचयि ॥२८३॥
 एकपादेन अट्ठासि आसनं परिवज्जयि,
 सुक्खगूथानि च खादि उद्देसञ्च न सादयि ॥२८४॥
 एतादिसं करित्वान बह्वं दुग्गतिगामिनं
 वुय्हमानो महोधेन बुद्धं सरणमागमं ॥२८५॥
 सरणं गमनं पस्स, पस्स धम्मसुधम्मतं
 तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कत बुद्धस्स सासनन्ति ॥२८६॥

जम्बुको थेरो

स्वागतं वन मे आसि गयायं गयफग्गुया
 यं अद्दसासि सम्बुद्धं देसेन्तं धम्ममुत्तमं ॥२८७॥
 महप्पभ गणाचरियं अगपत्तं विनायकं
 सदेवकस्स लोकस्स जितं अतुलदस्सनं ॥२८८॥
 महानागं महावीरं महाजुतिमनासवं
 सब्बासवपरिक्खीणं सत्थारमकुतोभयं ॥२८९॥
 चिरसङ्कलिट्ठं वत दिट्ठिसन्दानसन्दितं
 विमोचयी सो भगवा सब्बगन्धहि सेनकन्ति ॥२९०॥

सेनको थेरो

यो दन्धकाले तरति तरणीये च दन्धये,
 अयोनिस्सो संविधानेन बालो दुक्खं निगच्छति ॥२९१॥

तस्सत्था परिहायन्ति कालपक्खे व चन्दिमा,
 आयसक्यञ्च पप्पोति मित्ते हि च विरुज्जतीति ॥२९२॥
 यो दन्धकाले दन्धेति तरणीये च तारये,
 योनिस्सो संविधानेन मुखं पप्पोति पण्डितो ॥२९३॥
 तस्सत्था परिपूरन्ति सुगकपक्खे व चन्दिमा,
 यस्सो कित्तञ्च पप्पोति, मित्तेहि न विरुज्जतीति ॥२९४॥

सम्भूतो धरो

उभयेनेव सम्पन्नो राहुलभट्टो 'ति मं विदु,
 यञ्चमिह पुत्तो बृद्धस्स, यञ्च धम्मेषु चक्खुमा ॥२९५॥
 यञ्च मे आसवा स्त्रीणा, यञ्च नत्थि पुनम्भवो ।
 अरहा दक्खिण्य्यो 'मिह तेविज्जो अमत्तद्वसो ॥२९६॥
 कामन्धा जालसञ्छन्ना तण्हाछदनच्छादिता
 पमत्तबन्धुना बद्धा सञ्छा व कुमिना मुखे ॥२९७॥
 तं काममहमुज्जित्वा छेत्वा मारस्स ब्रन्धनं
 समूलं तण्हमब्बूय्ह सीतिभूतो 'स्मि निम्भुतो 'ति ॥२९८॥

राहुलो धरो

जातरूपेन पच्छन्ना दासी गणपुरक्खता
 अङ्केन पुत्तमादाय भरिया मं उपागमि ॥२९९॥
 तञ्च दिस्वान आयन्ति सकपुत्तस्स मातरं,
 अलङ्ककत्तं सवुसनं मन्चुपामं व ओड्डितं ॥३००॥
 ततो मे-... (३०१, ३०२=२६९, २७०) ॥३०१-३०२॥

चन्दनो धरो

धम्मो हवे रक्खति धम्मचारि, धम्मो सुचिण्णो सुखभावहाति
 एसा निसंसो धम्मे सुचिण्णे, न दुग्गाति गच्छति धम्मचारी ॥३०३॥
 न हि धम्मो अधम्मो च उभो समविपाकिनो;
 अधम्मो निरयं नेति, धम्मो पापेति सुग्गति ॥३०४॥
 तस्मा हि धम्मेषु करेय्य छन्दं इति मोदमानो सुगतेन तादिता;
 धम्मे ठिता सुगतवरस्स सायका निव्यन्ति धीरा सरणवरगगामिनो ॥३०५॥

विष्फोटितो गण्डमूलो, तण्हाजालो समूहतो;
सो खीणसंसारो न चत्थि किञ्चनं चन्दो
यथा दोसिना पुण्णमासिया 'ति ॥३०६॥

धम्मिको थेरो

यदा बलाका सुचिपण्डरच्छदा काळस्स मेघस्स भयेन तज्जिता
पलेहिति आलयमालयेसिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं ॥३०७॥
यदा बलाका सुविमुद्धपण्डरा काळस्स मेघस्स भयेन तज्जिता
परियेसतिलेन मलेन, दस्सिनी, तदा नदी अजकरणी रमेति मं ॥३०८॥
कम्भु तत्थ न रमेन्ति जम्बुयो उभतो तहि,
सोभेन्ति आपगा कूलं महालेनस्स पच्छतो ॥३०९॥
तामत्तमदसं धमुप्पहीता भेका मन्दवती पत्तादयन्ति,
नाज्ज गिरि नदीहि विप्पवाससमयो,
खेमा अजकरणी सिवा सुरम्मा 'ति ॥३१०॥

सप्पको थेरो

पब्बजि जीविकत्थो 'हं, लद्धान उगसम्पदं
ततो सद्धं पटिर्त्ताभ, दळ्हविरियो परक्कमि ॥३११॥
कामं भिज्जतु 'यं कायो मंसपेसी त्रिसीयरुं,
उभोजन्नकसंधीहि जङ्घायो पपतन्तु मे ॥३१२॥
नासिस्सं न पविस्सामि विहारा च न निक्खमे
न पि पस्स निपातेस्सं तण्हासल्ले अनूहते ॥३१३॥
तस्स मेवं... (=२२४) ॥३१४॥

मुदितो थेरो

उद्दानं

नागसमालो भग्गु च सभियो नन्दको पि च
जम्बुको सेनको थेरो सम्भूतो राहुलो पि च
भवति चन्दनो थेरो दसेते बुद्ध सावका ।
धम्मिको सप्पको थेरो मुदितो चापि ते तयो
गाथायो द्वे च पञ्जास थेरा सब्बे पि तेरसा 'ति ।

चतुक्कनिपातो निद्वितो

पञ्चनिपातो

भिक्षु सीवधिकं गन्त्वा अहमं इत्थिमज्झित
 अपविद्धं सुसान्निस्मि खज्जन्तिं किमिही फुट् ॥३१५॥
 यं हि एके जिगुच्छन्ति मत्तं दिस्वान पापकं,
 कामरागो पातुरहं अन्धो व सवती अहु ॥३१६॥
 ओरं ओदनपाकम्हा तम्हा ठाना अपक्कमि,
 सतिमा सम्पज्जानो 'ह एकमन्तं उपाविमि ॥३१७॥
 ततो मे... (३१८, ३१९ = २६९, २७०) ॥३१८-३१९॥

राजदत्तो थेरो

अयोगे युज्जमत्तान पुग्गिओ किच्चमिच्छतो
 चरं चे नाधिगच्छेय्य, तं मे दुब्बगलक्खणं ॥३२०॥
 अब्बूळ्हं अगत विजितं एकञ्चे ओस्सज्जेय्य कली व सिया;
 सन्नानि पि चे ओस्सज्जेय्य अन्धो व सिया
 समविसमस्स अदस्सनतो ॥३२१॥

यज्झि कयिरा... (= २२६) ॥३२२॥
 यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवन्तं अगन्धकं,
 एवं सुभासिता वाचा अपूला होति अकुब्बतो ॥३२३॥
 यथापि रुचिरं पुप्फं वण्णवन्तं मगन्धकं
 एवं सुभासिता वाचा स-फला होति सकुब्बतो 'ति ॥३२४॥

सुभूतो थेरो

वस्सति देवो यथा सुगीतं, छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता
 तस्सं विहरामि वूपसन्तो, अथ चे पत्थयसि पवस्स देव ॥३२५॥
 वस्सति देवो यथा सुगीतं छन्ना मे कुटिका सुखा निवाता,
 तस्सं विहरामि सन्तचित्तो—प—तस्सं विहरामि

बीतरागो... बीत दोसो... बीत मोहो अय ने

पत्थयसि पवस्स देवा 'ति ॥३२६-३२९॥

गिरिमानन्दो धेरो

यं पत्थयानो धम्मेषु उपज्झायो अनुग्गहि

अमतं अभिकड्डखन्तं कतं कत्तब्बकं मया ॥३३०॥

अनुप्पत्तो सच्छिकतो सयं धम्मो अनीतिहो;

विसुद्धजाणो निक्कड्डखो व्याकरोमि तवन्तिके ॥३३१॥

पुब्बेनिवासं जानामि दिब्बचक्खुं विमोघितं,

सदत्थो मे अनुप्पन्नो कत बुद्धस्स सामनं ॥३३२॥

अप्पमतस्स मे मिक्खा मुमुत्ता तव मासने,

सब्बे मे आसवा खीणा नत्थि दानि पुनब्भवो ॥३३३॥

अनुसासि मं अरियवता अनुकम्पी अनुग्गाहि;

अमोघो तुय्हं ओवादो, अन्ते वासि 'मिह सिक्खितो 'ति ॥३३४॥

सुमनो धेरो

साधु हि किर मे माता पतोद उपदंसयि

यस्साहं वचनं सुत्वा अनुसिट्ठो जनेत्तिया

आरद्धविरियो पहितत्तो पत्तो सम्भोधिमुत्तम ॥३३५॥

अरहा दक्खिण्यो 'मिह तेविज्जो अमतदुसो

जित्वा नमुच्चिनो सेन विहरामि अनासवो ॥३३६॥

अज्झत्तञ्च बहिद्धा च ये मे विज्जसु आसवा

सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उप्पज्जरे पुन ॥३३७॥

विसारदा खो भगिनी एतं अत्थ अभासयि:

अपि हा नून मयि पि वनधो ते न विज्जति ॥३३८॥

परियन्तकतं दुक्खं, अन्तिमो यं समुस्सयो

जातिमरणसंसारो नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥३३९॥

बड़दो धेरो

अत्थाय वत मे बड़दो नदि नेरञ्जतं अगा,

यस्साहं धम्मं सुत्वा न मिच्छादिट्ठि विवज्जयि ॥३४०॥

यजि उच्चावचे यञ्जो, अग्निहुनं जुहि अहं
 एसा सुद्धीति मञ्जान्तो अन्धभूतो पुथुज्जनो ॥३८१॥
 दिट्ठि गहणपक्खतो परमागेन मोहितो
 भमुद्धि मञ्ज्वास सुद्धि अन्धभूतो अविद्दमु ॥३८२॥
 मिच्छादिट्ठि पहीना मे, भवा सब्बे विदालिता
 जहामि दक्खिण्ययिमां नमस्सामि नथागतं ॥३८३॥
 मोहा सब्बे पहीना मे भवत्तप्पा पदालिता
 विक्खोणो जातिमसारो नत्थि दाणि पुनवभवो 'ति ॥३८४॥

नदिकस्सपो थेरो

पातो मज्झन्तिक सायं तिक्खत्तु दिवसस्सह
 ओतरि उदकं सोतं गयाय गयाफग्गुया ॥३८५॥
 यं मया पक्कत पापं पुब्बे अञ्जामु जानिमु
 तन्दानीध पवाहेमि एवंदिट्ठि पुरे अहं ॥३८६॥
 सुत्वा सुभासितं वाचं धम्मत्थसहितं पद
 तथं गयावकं अत्थ योनिस्सो पन्चवेम्मिसम ॥३८७॥
 निन्हातसब्बपापो 'मिह निम्मलो पयतो मुचि
 सुद्धो मुद्धस्स दायादो पुत्तो बुद्धस्स ओरमो ॥३८८॥
 ओगयुहट्ठङ्गिकं सोतं सब्बपाप पवाहयि,
 निस्सो विज्जा अज्झगमि, कतं बुद्धस्स सासननि ॥३८९॥

गयावस्सपो थेरो

वानरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने
 पविद्धगोचरे लूखे कथं भिक्खु करिस्ससि ॥३९०॥
 पीतिसुखेन विपुलेन फरमानो समुस्सयं
 लूखमि अभिसम्मोन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३९१॥
 भावेन्तो सतिपट्ठाने इन्दियानि बलानि च
 बोज्झङ्गानि च भावेन्तो विहरिस्सामि कानने ॥३९२॥
 आरद्धविरिये पहितत्ते निच्चं दळहपरक्कमे
 समगे सहिते दिस्वा विहरिस्सामि कानने ॥३९३॥
 अनुस्सरन्तो सम्बुद्धं अगगदन्तं समाहितं
 अतन्दितो रत्तिविवं विहरिस्सामि कानने 'ति ॥३९४॥

वक्कली थेरो

ओलम्मेसामि ते चित्त आणिद्वारे व हत्थिनं,
 न तं पापे नियोजिस्सं कामजाल सरीरज ॥३५५॥
 त्वं ओलम्मे न गच्छिसि द्वारविवरं गजो व अलभन्तो,
 न च चित्तकलि पुनप्पुनं पसहम्पापरतो चरिस्ससि ॥३५६॥
 यथा कुञ्जरं अदन्त नवग्गहमड्ढकुसम्माहो
 बलवा आवत्तेति अकामं, एवं आवत्तायिस्सन्तं ॥३५७॥
 यथा वरहयदमकुसलो सारथि पवरो दमेति आजञ्जं,
 एवं दमयिस्सन्तं पतिट्ठितो पञ्चमु बलेमु ॥३५८॥
 सतिथा त निबन्धिस्सं, पयतत्तो वो दमेस्सामि;
 विरियधुग्गतिग्गहीतो न यितो दूर गप्पिस्ससे चित्ता 'ति ॥३५९॥

विजितमेनो थेरो

उपारम्भचित्तो दुम्मेधो मुणाति जिनसासनं;
 आरका होति सद्धम्मा नभसो पथवी यथा ॥३६०॥
 उपारम्भ चित्तो दुम्मेधो मुणाति जिनसासनं ।
 परिहायति सद्धमा काळपक्खे व चन्दिमा ॥३६१॥
 उपारम्भ चित्तो दुम्मेधो मुणाति जिनसासनं
 परिसुम्भति सद्धमे मच्छो अप्पोदके यथा ॥३६२॥
 उपारम्भचित्तो दुम्मेधो मुणाति जिनसासनं
 न विरूहति सद्धा मे खेत्ते बीजं व पूतिकं ॥३६३॥
 यो च तुट्ठेन चिन्नेन मुणानि जिनसासनं
 खेपेत्वा आसवे मब्बे मच्छिवत्वा अकुप्पतं,
 पापुय्य पदमं सन्ति परिनिव्वानि अनासवो 'ति ॥३६४॥

यसदत्तो थेरो

उपसम्पदा च मे लद्धा, विमुत्तो चम्हि अनासवो
 सो च मे भगवा दिट्ठो, विहारे च सहावसि ॥३६५॥
 बहुदेव रत्ति भगवा अब्भोकासे 'तिनामयि
 विहारकुसलो सत्था विहारं पाविसी तदा ॥३६६॥
 सन्थरित्तवान संघाटि सेय्यं कप्पेसि गोतमो
 मीहो सेलगुहायं व पहीनभयभेरवो ॥३६७॥

ततो कल्याणवाक्करणो सम्मासम्बुद्धसावको
 सोणो अभामि सद्धम्मं बुद्धसेट्ठस्स सम्मुखा ॥३६८॥
 पञ्चकन्नन्धे परिञ्जाय भावयित्वान अञ्जसं
 पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बस्सत्यनासवो 'ति ॥३६९॥

सोणो कुटिक्राणो थेरो

यो वे गरूढं वचनञ्चु धीरो वसे च तम्हि जनयेथ पेम,
 सो भत्तिमा नाम च होति पण्डितो
 'ज्वात्वा च धम्मेसु विसेसि अस्स ॥३७०॥
 यं आपदा अप्पतिता उळारा नक्खम्मयन्ते पटिसखयन्त
 सो धामवा नाम च होति पण्डितो ज्वात्वा च धम्मेसु विसेसि अस्स ॥३७१॥
 यो वे समुद्दो व ठितो अनेजो गम्भीरपञ्जो निपुणत्थदस्सी,
 असंहारियो नाम च होति . . . ॥३७२॥
 बहुस्सुतो धम्मधरो च होति, धम्मस्स होति अनुधम्मचारी,
 सो तादिसो नाम च होति . . . ॥३७३॥
 अत्थञ्च यो जानाति भासितस्स अत्थञ्च ज्वात्वा न तथा करोति,
 अत्थन्तरो नाम स होति पण्डितो ज्वात्वा च धम्मेसु
 विसेसि अस्सा 'ति ॥३७४॥

कोसियो थेरो

उद्दानं

राजदत्तो सुभूतो च गिरिमानन्द-सुमनो
 वड्ढो च कस्सपो थेरो गयाकस्सप वक्कलि
 विजितो यस्सदत्तो च सोणो कोसि यस व्हयोः
 सट्ठि च पञ्च गाथायो थेरा च एत्थ द्वादसा 'ति

पञ्चनिपातो

छनिपातो

दिस्वान पाटिहीरानि गोतमस्स यसस्सिनो
 न तावाहं पणिपति इस्सामानेन वञ्चितो ॥३७५॥
 मम संकप्पमञ्जाय चोदेसि नरसारथि,
 ततो मे आसि मंवेगो अब्भुतो लोमहंसनो ॥३७६॥
 पुब्बे जटिल भूतस्स या मे इद्धि परित्तिका,
 ताहं तदा निरकत्वा पब्बजि जिनसासने ॥३७७॥
 पुब्बे यञ्जो सन्नुट्ठो कामधातु पुग्ग्वतो,
 पच्छा रागञ्च दोसञ्च मोहञ्चापि समूहनि ॥३७८॥
 पुब्बनिवासं जानामि दिव्वचक्खुं विसोधितं,
 इद्धिमा परचित्तञ्जू दिव्वसोतञ्च पापुणि ॥३७९॥
 स यस्स चत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारिय,
 सो मे अत्थो अनुपत्तो सब्बसयोजनक्खयो 'ति ॥३८०॥

उरुवेक्कस्सपो थेरो

अतिहिता वीहि, खलगता सालि, न च लभे पिण्डं, कथमहं कस्सं ॥३८१॥
 बुद्धमण्यमेय्यं अनुस्सर, पसन्तो पीतिया
 फुटसरीरो होहिसि सततमुदग्गो ॥३८२॥
 धम्ममण्यमेय्यं—प—सधमण्यमेय्यं—प— ॥३८३-३८४॥
 अब्भोकासे विहरसि, सीता हेमन्तिका इमा रत्तियो ।
 मा सीतेन परेतो विहज्जिअत्थो, पविस त्वं विहार फुसितग्गळ ॥३८५॥
 फुसिस्सं चतस्सो अप्पमञ्जायो ताहि च सुखितो विहरिस्सं;
 नाहं सीतेन विहज्जिअस्स अनिज्जितो विहरन्तो 'ति ॥३८६॥

तेकिञ्चकानि थेरो

यस्स सब्बहाचारीमु गारवो नूपलब्धति
 परिहायति सद्धम्मा मच्छो अप्पोदके यथा ॥३८७॥

यस्स सन्नहाचारीसु.....
 न विरूहति सद्धम्मे खेत्ते बीजं व पूतिकं ॥३८८॥
 यस्स सन्नहाचारीसु.....
 आरका होति निब्बाना धम्मराजस्स सासने ॥३८९॥
 यस्स सन्नहाचारीसु गारवो उपलब्धति,
 न विहायति सद्धमा मच्छो बहोदके यथा ॥३९०॥
 यस्स.....
 सो विरूहति सद्धम्मे खेत्ते बीजं व भद्दं ॥३९१॥
 यस्स.....
 सन्तिके होति निब्बानं धम्मराजस्स सासने 'ति ॥३९२॥

महानागो थेरो

कुल्लो सीवथिक गत्वा अद्दसं दत्थिमुज्झित
 अपविट्ठं सुसानस्मि खज्जन्ति किमिही फुटं ॥३९३॥
 आतुरं अनुचि पूति पस्स कुल्ल समुत्सयं
 उग्घरन्तं पग्घरन्तं बालानं अभिनन्दनं ॥३९४॥
 धम्मादासं गहेत्वान जाणदस्सनपत्तिया
 पच्चवेक्खि इमं कायं तुच्छं सन्तरबाहिरं ॥३९५॥
 यथा इदं तथा एतं यथा एत तथा इदं
 यथा अधो तथा उदं, यथा उदं तथा अधो ॥३९६॥
 यथा दिवा तथा रत्ति यथा रत्ति तथा दिवा
 यथा पुरे तथा पच्छा यथा पच्छा तथा पुरे ॥३९७॥
 पच्चवड्ढगिकेन तुरियेन न रति होति तादिसी
 यथा पक्कगच्चित्तस्स सम्मा धम्मं विपस्स तोति ॥३९८॥

कुल्लो थेरो

मनुजस्म पमत्तचारिनो तण्हा वड्ढति माळुवा विषा,
 सो पलवती दुरादुरं फलमिच्छं व
 वनस्मि वानरो ॥३९९॥
 यं एसा सहती जम्मी तण्हा लोके विसत्तिका,
 सोका तस्स पवड्ढन्ति अभिवड्ढं व भीरण ॥४००॥

यो वे तं सहती जम्मि तण्हं लोके दुरच्चयं,
 सोका तम्हा पपतन्ति उदविन्दु व पोक्खरा ॥४०१॥
 तं वो वदामि भद्दं वो यावत्तेत्थ समागता
 तण्हाय मूलं खणथ उप्पीरत्थो व बीरणं,
 मा वो नळ व सोतो व मारो भञ्जि पुनप्पुनं ॥४०२॥
 करोथ बुद्धवचन खणो वे मा उपच्चगा,
 खणातीता हि सोचन्ति निरयम्हि समप्पिता ॥४०३॥
 पमादो रजो, पमादानुपतितो रजो,
 अप्पमादेन विज्जाय अब्बहे सल्लमत्तनो'ति ॥४०४॥

मालङ्क्यपुत्तो थेरो

पण्णवीसतिवस्मानि यतो पब्बजिनो अहं
 अच्छरामंघातमत्तम्पि चेतो सन्ति मनज्जगं ॥४०५॥
 अलद्धा चित्तस्मेकग्ग कामरागेन अट्ठितो
 बाहा पग्गय्ह कन्दन्तो विहारानुपनिक्खमि ॥४०६॥
 सयं वा आहरिस्सामि को अत्था जीवितेन मे,
 कथ हि मिसवं पच्चक्खं कालं कुब्बेय मादिसो ॥४०७॥
 तदाह खुग्मादाय मञ्चक्कम्हि उपाविसि,
 परिणीतो खुरो आमि धमनि छेतुमत्तनो ॥४०८॥
 ततो मे . . . (४०९, ४१०=२६९, २७०) ॥४०९॥-४१०॥

सप्पदासत्थेरो

उट्ठाहि निसीद कान्थियान मा निदाबहुलो अहु जागरस्सु,
 मा तं अलस पमत्तबन्धु कूटेनेव जिनातु मच्चुराजा ॥४११॥
 सयथापि महाममूद्देवो एव जातिजरातिवत्तते तं,
 सो करोहि मुदीपमत्तनो त्वं, न हि ताणं तव विज्जतेव अञ्ज ॥४१२॥
 सत्था हि विज्जेसि मग्गमेतं सङ्गा जातिजराभया अतीतं,
 पुब्बापररत्तमप्पमत्तो अनुयुज्जसु
 दळ्हं करोहि योगं ॥४१३॥
 पुरिमानि पमुञ्च बन्धनानि सघाटीखुर, मुण्डभिक्षभोजी
 मा खिङ्गारतिञ्च मा निद्दं अनुयुज्जित्थ क्षियाय कात्थियान ॥४१४॥

आयाहि जिनाहि कातियान, योगक्खेमपदे सुकोविदो'सि;
 पप्पुय्य अनूतर विमुद्धि परिनिब्बाहिंसि वारिनाव जोति ॥४१५॥
 पज्जोतकरो परित्तरंसो वातेन विनम्यते लता व;
 एवमपि तुव आनादियानो मारं इन्दसगोत्त निद्धुनाहि
 सो वेदयितासु वीतरागो कालं कड्ढव इवेव सीनिभूतो'ति ॥४१६॥

कातियानो थेरो

मुदेसितो चक्खुमता बद्धेनादिच्चबन्धुना
 सब्बसंयोजनातीतो सब्बवट्टविनासतो ॥४१७॥
 निव्यानिको उत्तरणो तण्हामूलविमोसनो
 विसमूलं आघातन छेत्रा पापेति निब्बुति ॥४१८॥
 अज्जाणमूलभेदाय कम्मयन्तविघाटतो
 विज्जाणानं परिगहे जाणवज्जिगणिपाततो ॥४१९॥
 वेदनानं विज्जापनो उपादानप्यमोचनो
 भवं अङ्गारकासु व जाणेन अनुपस्सको ॥४२०॥
 महारसो सुगम्भीरो जरामच्चुनिवारणो
 अयोड्ढिकोगअरिट्ठ ॥४२१॥
 कम्मं कम्मन्ति जत्तवान विपाकञ्च विपाकतो
 पटिच्चुप्पन्नघम्मानं यथावालोकदस्सतो
 महाखेमंगमो सन्तो परियोसानभहूको'ति ॥४२२॥

मिगजालो थेरो

जातिमदेन मत्तो'हं भोगैस्सरिपेन च
 सण्ठान वण्णरूपेन मदमत्तो अचारि'हं ॥४२३॥
 नात्तनो समकं कञ्चि अतिरेकञ्च मज्झिास
 अतिमानहतो बालो पत्थद्वो उस्सितद्वजो ॥४२४॥
 मानरं पितरञ्चापि अज्जो पि गरुसम्मते
 न कञ्चि अभिवादेसि मानत्थद्वो अनादरो ॥४२५॥
 दिस्वा विनायकं अगग सारथीनं वरुत्तमं
 तपन्तमिव आदिच्चं म्भिकखुसंघपुरक्खतं ॥४२६॥
 मानं मदञ्च छट्टेत्वा विप्पसन्नेन चेतसा
 सिरसा अभिवातेसि 'सत्त म'मं ॥४२७॥

अतिमानो च ओमानो पहीना सुसमूहता
अस्मिमानो समुच्छिन्नो, सब्बे मानविधा हता'ति ॥४२८॥

जेन्तो पुरोहितपुत्तो थेरो

यदा न वो पब्बजितो जातिया सत्तवस्सिको,
इद्धिया अभिभोत्वान पन्नगिन्दं महिद्धिक ॥४२९॥
उपज्झायस्स उदकं अनोत्ता महासरा
आहरामि ततो दिस्वा मं सत्या एतदब्रवी ॥४३०॥
सारिपुत्त इमं पस्स आगच्छत्तं कुमारक
उदकुम्भकमादाय अज्झत्तं सुसमाहित ॥४३१॥
पासादिकेन वत्तेन कल्याणइरियापथो
सामणेरो नुरुद्धस्स इद्धिया च विमारदो ॥४३२॥
आजानियेन आजञ्जो साधुना साधु कारितो
विनीतो अनुएद्धेन कतकिञ्चेन सिक्खितो ॥४३३॥
सो पत्वा परमं सन्ति सञ्छिकत्वा अकुप्पत
सामणेरो स सुमनो मा मं जञ्जा'ति इच्छतीति ॥४३४॥

सुमनो थेरो

वातरोगाभिनीतो त्वं विहरं कानने वने
पविद्धगोचरे लूखे कथं भिक्खु करिस्ससि ॥४३५॥
पीति सुखेन विपुलेन फरित्वान समुस्सयं
लूखम्पि अभिसम्भोत्तो विहरिस्सामि कानने ॥४३६॥
भावेन्तो सत्त बोज्झङ्गो इन्द्रियाणि बलानि च
ज्ञानसोखुम्मसम्पन्नो विहरिस्सं अनासवो ॥४३७॥
विप्पमुत्तं किलेसेहि सुद्धचित्तं अनाविलं
अभिण्हं पच्चवेक्खन्तो विहरिस्सं अनासवो ॥४३८॥
अज्झत्तोञ्च बहिद्धा च ये मे विज्जिसु आसवा
सब्बे असेसा उच्छिन्ना न च उप्पज्जरे पुन ॥४३९॥
पञ्चक्खन्धा परिज्जाता तिष्ठन्ति छिन्नमूलका,
दुक्खक्खयो अनुप्पत्तो, नत्थि दानि पुनब्भवो'ति ॥४४०॥

न्हातकमुनि थेरो

अक्कोषस्स कुतो कोवो दन्तस्स समजीविनो
 सम्मदञ्जाविमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो ॥४४१॥
 तस्सेव तेन पापियो यो कुद्धं पटिकुञ्जति;
 कुद्धं अप्पटिकुञ्जन्तो संगाम जेति दुज्जयं ॥४४२॥
 उभिन्नमत्थं चरति अत्तनो च परस्स च,
 परं संकुपितं ज्ञत्वा यो सतो उपसम्मति ॥४४३॥
 उभिन्नं तिकिच्छन्तं अत्तनो च परस्स च
 जना मञ्जान्ति बालो'ति ये धम्मस्स अकोविदा ॥४४४॥
 उप्पज्जने स चे कोधो, आवज्ज ककच्चूपमं;
 उप्पज्जे चे रमे तण्हा, पुत्तमंसुपमं सर ॥४४५॥
 सचे धावति ते चित्तं कामेमुच भवेसु च,
 खिप्पं निग्गण्ह सतिया किट्ठाद विय दुप्पमुत्ति ॥४४६॥

ब्रह्मदत्तो थेरो

छन्नमतिवस्सति, विवटं नातिवस्सति.
 तस्मा छन्नं विवरेथ, एवन्तं नातिवस्सति ॥४४७॥
 मच्चुनव्वाहृतो लोको, जराय परिवारितो,
 तण्हासल्लेन ओतिण्णो, इच्छाधूपायितो सदा ॥४४८॥
 मच्चुनव्वाहृतो लोको परिक्खित्तो जराय च
 हज्जाति निच्चमत्ताणो पत्तदण्डो व तवकरो ॥४४९॥
 आगच्छन्तग्गिखन्धा व मच्चुव्याधि जराय तयो
 पच्चुगगन्तु वलं नत्थि, जवो नत्थि पलायितुं ॥४५०॥
 अमोघं दिवमं कयिरा अप्पेन बहुकेन वा;
 यं यं विजहते रत्ति तदूनन्तस्स जीवितं ॥४५१॥
 चरतो तिट्ठतो वापि आसीनं सयनस्स वा
 उपेति चरिमा रत्ति, न ते कालो पमज्जितु न्ति ॥४५२॥

सिरिमयडो थेरो

दिपादको यमसुचि दुग्गन्धो परिहीरति
 नानाकुणपपरिपूरो विस्सवन्तो ततो ततो ॥४५३॥

मिगं निलीनं कूटेन बलिसेनेव अम्बुजं
 वानरं विय लेपेन बाधयन्ति पुथुज्जनं ॥४५४॥
 रूपा सदा रसा गन्धा फोटुब्बा च मनोरमा
 पञ्चकामगुणा एते इत्थि रूपस्मि दिस्सरे ॥४५५॥
 ये एता उपसेवन्ति रत्तचित्ता पुथुज्जना,
 वड्ढेन्ति कटसि घोरं आचिनन्ति पुनब्भवं ॥४५६॥
 यो वेता परिवज्जेति सप्पस्सेव पदा सिरा
 सो मं विसत्तिकं लोके सतो समतिवत्तति ॥४५७॥
 कामेस्वादीनव दिस्वा नेक्खम्मं दट्ठु खेमतो
 निस्सटो सब्वकामेहि, पत्तो मे आसवक्खयो'ति ॥४५८॥

सब्वकामो थेरो

उद्दानं

उरुवेळकस्सपो च थेरो तेकिञ्छकानि च
 महानागो च कुल्लो च मालुतो सप्पदासको ।
 कात्तियानो च मिगजालो जेन्तो सुमनसव्हयो
 न्हातमुनि ब्रह्मदत्तो सिग्गिमण्डो सब्वकामको
 गाथायो चतुरासीति, थेरा चेत्य चतुद्दसा'ति

छनिपातो निट्ठितो



सत्तनिपातो

अलंकता सुवसना मालधारी विभूसिता
 अलत्तककतापादा पादुकारुय्ह वेसिका ॥४५९॥
 पादुका ओरुहित्वान पुरतो पञ्जलिकता
 सा मं सण्हेन मुदुना म्हितपुब्बं अभासथ ॥४६०॥
 युवासि त्वं पब्बजितो तिट्ठाहि मम सासने,
 भुज्ज मानुसके कामे, अहं वित्तं ददामि ते.
 सच्चन्ते पटिजानामि, अग्गिं वा ते हरामहं ॥४६१॥
 यदा जिण्णा भविस्साम उभो दण्डपरायना,
 उभो पि पब्बजिस्साम, उभयत्थ कटग्गहो ॥४६२॥
 तच्च दिस्वान यावन्ति वेसिकं पञ्जलीकतं
 अलंकतं सुवसनं मच्चुपासं व ओड्डितं ॥४६३॥
 ततो मे. . . (=२६९, २७०) ॥४६४-४६५॥

सुन्दरसमुद्धो थरो

परे अम्बाटकारामे वनसण्डम्हि भहियो
 समूलं तण्हमब्बूय्ह नत्थ भदो क्षियायति ॥४६६॥
 रमन्तेके मुतिङ्गोहि वीणाहि पणवेहि च
 अहञ्च रक्खमूलस्मि रतो बुद्धस्स सासने ॥४६७॥
 बुद्धो च मे वरं दज्जा सो च लब्भेथ मे वरो
 गण्हेहं सब्बलोक्कस्स निच्चं कायगतासति ॥४६८॥
 ये मं रूपेण पामिसु ये च घोसेन अन्वगू ।
 छन्दरागवसूपेता न मं जानन्ति ते जना ॥४६९॥
 अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च न पस्सति
 समन्ता वरणो बालो, स वे घोसेन बुय्हति ॥४७०॥

अज्झत्तञ्च न जानाति बहिद्धा च विपस्सति
 बहिद्धा फलदस्सावी सो पि घोसेन बुय्हति ॥४७१॥
 अज्झत्तञ्च पजानाति बहिद्धा च विपस्सति
 अनावरणदस्सावी, न सो घोसेन बुय्हतीति ॥४७२॥

लकुण्ठको धेरो

एकपुत्तो अहं आसिं पियो मातु पियो पितु
 बहूहि वतचरियाहि लद्धो आयाचनाहि च ॥४७३॥
 ते च मं अनुकम्पाय अत्थकामा हितेसिनो
 उभो पिता च माता च बुद्धस्स उपनाममु ॥४७४॥
 किञ्छा लद्धो अयं पुत्तो सुखुमालो सुखेघितो
 इमं ददाम ते नाथं जिनस्स परिचारक ॥४७५॥
 सत्था च मं पटिगय्ह आनन्द एतदब्रवि
 पब्बाजेहि इमं खिण्णं, हेस्सत्याजानियो अयं ॥४७६॥
 पब्बाजेत्वानं मं सत्था विहार पाविसी जिनो;
 अनोग्गतस्मिं सुरियास्मिं ततो चित्तं विमुच्चि मे ॥४७७॥
 ततो सत्था निरंक्त्वा पटिसल्लानवुद्धिं तो
 एहि भद्दा 'ति मं आह; सा मे आसूपसम्पदा ॥४७८॥
 जातिया सत्तवस्सेन लद्धा मे उपसम्पदा;
 तिस्रो विज्जा अनुप्पत्ता अहो धम्ममुधम्मता'ति ॥४७९॥

महो धेरो

दिस्वा पासादछायायं चङ्कमन्तं नरुत्तमं
 तत्थ न उपसकम्म वन्दिस्स पुरिसुत्तम ॥४८०॥
 एकंसं चीवरं कत्वा सहरित्त्वानं पाणियो
 अनुचङ्कमिस्सं विरजं सब्बसत्तानमुत्तमं ॥४८१॥
 ततो पञ्हे अपुच्छि मं पञ्हानं कोविदो विद्द,
 अच्छम्मी च अभीतो च व्याकासि सत्थुनो अहं ॥४८२॥
 विस्सज्जितेसु पञ्हेसु अनुमोदि तयागतो,
 भिक्खुसंघं विलोकेत्वा इमं मत्थं अभासथः ॥४८३॥
 लाभो अङ्गानं मगघानं येसायं परिभूञ्जति
 चीवरं पिण्डपातञ्च पच्चयं सयनासनं
 पच्चुट्ठानं च सामीचिं, तेसं लाभो'ति च ब्रवी ॥४८४॥

अज्जदग्गे मं सोपाक दस्सनायोपसंकम,
 एसा चेव ते सोपाक भवतु उपसम्पदा ॥४८५॥
 जातिया सत्त वस्सो'ह लद्धान उपसम्पदं
 धारेणि अन्तिमं देहं अहो घम्मसुधम्मता'ति ॥४८६॥

सोपाको थेरो

सरे हत्थेहि भञ्जित्वा कत्वान कुटिमच्छिम,
 तेन मे सरभङ्गो'ति नामं सम्मुत्तिया अहू ॥४८७॥
 न मय्हं कप्पते अज्ज सरे हत्थेहि भञ्जितुं
 सिक्खापदा नो पञ्जात्ता गोतमेन यसस्सिना ॥४८८॥
 सकलं समत्तं रोगं सरभङ्गो नादुसं पुब्बे,
 सो'यं रोगो दिट्ठो वचनकरेनाति देवस्म ॥४८९॥
 येनेव मग्गेन गतो विपस्सी येनेव मग्गेन सिक्खी च वेस्सभू
 ककुसन्धकोणागमनो च कस्सपो
 तेनञ्जसेन अगमासि गोतमो ॥४९०॥
 वीततण्हा अनाधाना सत्त बुद्धा स्रयोगधा,
 ये ह्यं देसितो घम्मो घम्मभूतेहि तादिहि ॥४९१॥
 चत्तारि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं
 दुक्ख समुदयो मग्गे निरोधो दुक्ख सखयो ॥४९२॥
 यस्मि निब्बत्तते दुक्ख संसारस्मि अनन्तक
 भेदा इमस्स कायस्स जीवितस्स च सखया
 अज्जो पुनब्भवो नत्थि सुविमुत्तो'मिह सब्बधीति ॥४९३॥

सरभङ्गो थेरो

उद्दानं

सुन्दर समुद्दो थेरो थेरो लकुण्ठमद्दियो
 भद्दो थेरो च सोपाको सरभङ्गो महाद्दिसिः
 सत्तके पञ्चका थेरा, गाथायो पञ्चतिसतीति.

निट्ठितो च सत्तनिपातो

अद्वनिपातो

कम्मं बहुकं न कारये, परिवज्जेय्य जनं न उय्यमे;
 सो जस्मुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चति यो सुखाधिवाहो ॥४९४॥
 पङ्ककोति हि न अवेदयुं याय वन्दनपूजना कुलेमु,
 मुखुम सल्ल दुग्धह सक्कारो कापुरिमेन दुज्जहो ॥४९५॥
 न परस्मु पनिद्धाय कम्मं मच्चस्स पापकं
 अत्तना तं न सेवेय्य, कम्मब्रन्धू हि मातिया ॥४९६॥
 न परे वचना चोरो, न परे वचना मुनि;
 अत्तानञ्च यथा वेति देवापि नं तथा विदु ॥४९७॥
 परे च न विजानन्ति मयमेत्थ यमाममे :
 ये च तत्थ विजानन्ति ततो सम्मन्ति मेघगा ॥४९८॥
 जीवतेवापि सप्पञ्जो अपि वित्तपरिक्खया
 पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवति ॥४९९॥
 सब्बं सुणाति सोतेन सब्बं पस्सति चक्खुना
 न च दिट्ठं सुतं धीरो सब्बमुज्झितुमरहति ॥५००॥
 चक्खमस्स यथा अन्धो, सोतवा बधिरो यथा,
 पञ्जावस्स यथा मूगो, बलवा दुब्बलोरिव,
 अथ अत्थे समुप्पन्ने सयेथ मतसायिकन्ति ॥५०१॥

महाकच्चायनो थेरो

अक्कोधनो अनुपनाही अमायो रित्तपेमुणो
 स वे तादिसको भिक्खु एवं पेच्च न सोचति ॥५०२॥
 अक्कोधनो अनुपनाही अमायो रित्तपेमुणो
 गुत्तदारो सदा भिक्खु एवं पेच्च न सोचति ॥५०३॥
 अक्कोधनो.....
 कल्याणसीलो यो भिक्खु एवं पेच्च न सोचति ॥५०४॥

अक्कोधनो

कल्याणमित्तो यो भिक्खु एव पेच्च न सोचति ॥५०५॥

अक्कोधनो

कल्याणपञ्जो यो भिक्खु एव पेच्च न सोचति ॥५०६॥

यस्स सद्धा तथागतं अचला मुपतिट्ठिता,

सोलञ्च यस्स कल्याण अरियकणं पससितं ॥५०७॥

सधं पसादो यस्सत्थि उजुभूतञ्च दस्सनं

अदळिद्दो 'ति तं आहु अमोघन्तस्स जीवितं ॥५०८॥

तस्मा सद्धञ्च सोलञ्च पसाद धम्मदस्सनं

अनयुञ्जेय मेघावी सर बुद्धान सासनन्ति ॥५०९॥

सिरिमित्तोथेरो

यदा पटममहक्खि सत्थारमकुतोभय

ततो मे अहु सवेगो पस्सित्वा पुग्गिमुत्तमं ॥५१०॥

सिरि हत्थेहि पादेहि यो पणामेय्य आगत,

एनादिसं सो सत्थारं आगघेत्वा विराधये ॥५११॥

तदाहं पुत्तदारञ्च धनधञ्जाञ्च छड्डायि,

केसमस्सूनि छेदेत्वा पब्बजि अतगारियं ॥५१२॥

मिक्खासाजीवसम्पन्नो इन्द्रियेषु मुसंबुतो

नमस्समानो सम्बुद्ध विहारि अपगजितो ॥५१३॥

ततो मे पणिघी आसि चेतमो अभिपन्थितो

न निसीदे मुहुत्तमि तण्हासल्ले अनूहने ॥५१४॥

तस्स मेवं विहरतो पस्स विगियपरक्कम

तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कनं बुद्धस्स सामन ॥५१५॥

पुब्बेनिवामं जानामि, दिब्बचक्खु विमोघित,

अरहा दक्खिण्यो 'मिह विप्पमुत्तो निरूपधि ॥५१६॥

ततो रत्या विवसने सुरियस्सुगमन पति

सब्बं तण्हं विसोसेत्वा पल्लङ्गकेन उपाविसिन्ति ॥५१७॥

महापन्थको धेरो

उद्दानं

महाकच्चायनो धेरो मिरिमित्तो महापन्थको

एते अट्टनिपातमिह, गाथायां चतुर्वीसतीति

अट्टनिपातो निट्ठितो

नवनिपातो

यदा दुःखं जरामरणन्ति पण्डितो अविदुः यत्थ मिता पुथुज्जना
 दुःखं परिञ्जाय सतो 'व ज्ञायति, ततो रति परमतरं न विन्दति ॥५१८॥
 यदा दुःखस्सावर्हानि विसत्तिकं पपञ्चसंघाटदुखाधिवाहन
 तण्ह पहतवान् सतो 'व ज्ञायति, ततो रति परमतरं न विन्दति ॥५१९॥
 यदा सिव द्वे चतुरङ्गामिन मग्गुत्तम सब्बकिलेससोधनं
 पञ्जाय पस्सित्वा सतो 'व ज्ञायति ततो . . . ॥५२०॥
 यदा असोकं विरज असखत्तं सन्त पद सब्बकिलेससोधन
 भावेति सञ्जोजनवत्थनच्छिद, ततो . . . ॥५२१॥
 यदा नभे गज्जति भेवहुन्दुभि धाराकुला विहङ्गपथे समन्ततो
 भिक्खु च पब्भारगतो 'व ज्ञायति, ततो . . . ॥५२२॥
 यदा नदीनं कुमुमाकुलानं विचित्तवानेव्यवटमकानं
 तीरे निमिन्ने सुपतो 'व ज्ञायति, ततो . . . ॥५२३॥
 यदा निसीथे रहितमिह कानने देवे गच्छन्तमिह नदन्ति दाठिनो
 भिक्खु च पब्भारगतो 'व ज्ञायति, ततो . . . ॥५२४॥
 यदा वितक्के उपरुत्थिपत्तनो नगन्तरे नगविवरं ममस्मितो
 वीनद्वरो विगतखिलो 'व ज्ञायति, ततो . . . ॥५२५॥
 यदा सुखी मलखिलसोकनामनो निग्गलो निब्बनथो विसल्लो
 सब्बासवे व्यत्तिकतो 'व ज्ञायति, ततो रति परमतरं न विन्दतीति ॥५२६॥

भूतो थेरो

उद्दानं

भूतो तथदुसो थेरो एको खग्गविमाणवा
 नवकमिह निपातमिह गाथायो पि इमा नवा 'ति ।

नवनिपातो निट्ठितो

दसनिपातो

अङ्गारिणो दानि दुमा भदन्ते फलेमिनो छदनं विष्पहाय,
 ते अच्चिमन्तो व पभासयन्ति, समयो महावीर भगीरसान् ॥५२७॥
 दुमानि फुल्लानि मनोरमानि ममन्तनो सब्बदिमा पवन्ति
 पत्त पहाय फलमाससाना, कालो इतो पक्कमनाय वीर ॥५२८॥
 नेवातिसान न पनातिउण्ह सुखा उतु अट्टनिया भदन्ते,
 पस्सन्तु त साकिया कोळिया च पच्छामुख रोहिणिय तरन्ते ॥५२९॥
 आसाय कस्सते खेतं, बीज आमाय वुप्पति
 आसाय वाणिया यन्ति ममुद्द धनहारका
 याय आसाय तिट्ठामि, सा मे आमा समिज्जन्तु ॥५३०॥
 पुनप्पुनं चैव वपन्ति बीज, पुनप्पुनं वस्सति देवराजा
 पुनप्पुनं खेतं कस्सन्ति कस्सका, पुनप्पुनं धज्जमुपेति रट्ठ ॥५३१॥
 पुनप्पुनं याचनका चरन्ति, पुनप्पुनं दानपती ददन्ति,
 पुनप्पुनं दानपती ददित्वा पुनप्पुनं सग्गमुपेति ठान ॥५३२॥
 बीरो हवे सत्तयुगं पुनेति यम्म कुले जायति भूरिपज्जो,
 मज्झामहं सक्कतिदेवदेवो, तथा हि जातो मुनि सच्चनामो ॥५३३॥
 सुद्धोदनो नाम पिता महेमिनो, बुद्धस्म माता पन मायनामा
 या बोधिसत्तं परिहरिय कुळिना कायस्स भेदा ति दिवस्म मोदति ॥५३४॥
 सा गोतमी कालकता इतो चुता दिब्बेहि कामेहि समङ्गिभूता
 सा मोदति कामगुणेहि पज्जहि परिवारिता देवगणेहि तेहि ॥५३५॥
 बुद्धस्स पुतो 'मिह असप्पहमाहिनो अङ्गारिस्सस्सप्पटिमस्स तादिनो
 पितु पिता मय्हं तुवं 'सि सक्क, धम्मेन मे गोतम अय्यको 'सीति ॥५३६॥

काकुदायीथेरो

पुरतो पच्छतो वापि अपरो चे न विज्जति,
 अतीव फासु भवति एकस्म वसतो वने ॥५३७॥

हन्द एको गमिस्सामि अरञ्जं बुद्धवणितं
 फासु एकविहारिस्स पहितत्तस्स भिक्खुतो ॥५३८॥
 योगिपीतिकरं रम्मं मत्तकुञ्जरसेवितं
 एको अत्यवसी खिप्पं पविसिस्सामि काननं ॥५३९॥
 सुपुप्फिते सीतवने सीतले गिरिकन्दरे
 गत्तानि परिसिञ्चित्वा चङ्कमिस्सामि एकको ॥५४०॥
 एकाकियो अदुतियो रमणीये महावने
 कदाहं विहरिस्सामि कनकिच्चो अनासवो ॥५४१॥
 एवं मे कत्तुकामस्स अधिप्पायो समिज्झतु,
 साधयिस्सामहं येव, नाञ्जो अञ्जस्स कारको ॥५४२॥
 एम बन्धामि सन्नाहं, पविसिस्सामि काननं,
 नं ततो नेक्खमिस्सामि अप्पन्तो आसवकवयं ॥५४३॥
 मालुते अपवायन्ते सीते सुरभिगन्धके
 अविज्जं दालयिस्सामि निमित्तो नगमुद्धति ॥५४४॥
 विने कुमुदमञ्छन्ने पवभारे नून सीतले
 विमुत्तिसुखेन मुखितो रमिस्सामि गिरिब्वजे ॥५४५॥
 सो 'ह परिपुण्णमकणो चन्दो पन्नरमो यथा
 मब्बासवगरिक्खीणो नत्थि दानि पुनब्भवो 'ति ॥५४६॥

एकविहारियो धेरो

अनागत यो पटिगञ्च पस्सन्ति हितञ्च अत्य अहितञ्च न द्वय
 विद्देमिनो तस्सा हितेमिनो वा रन्ध न पस्सन्ति समेक्खमाना ॥५४७॥
 आजापानगती यस्स परिपुण्णा सुभाविता
 अनुपुब्ब परिचिता यथा बुद्धेन देमिता,
 सो 'म लोकं पभासेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥५४८॥
 ओदातं वत मे चिनं अप्पमाणं सुभावित
 निब्विद्धं पग्गहीतञ्च सब्बा ओभासते दिमा ॥५४९॥
 जीवतेवापि सप्पञ्जो अपि वित्तपरिक्खया,
 पञ्जाय च अलाभेन वित्तवापि न जीवति ॥५५०॥
 पञ्जा सुतविनिच्छिनी, पञ्जा कित्तिसि लोकवद्धनी
 पञ्जासहितो नरो इध अपि दुक्खेमु सुखानि विन्दन्ति ॥५५१॥

नाय अज्जतनो धम्मो न च्छेरो न पि अब्भुतो
 यत्थ जायेथ, मायेथ तत्थ किं विय अब्भुतं ॥५५२॥
 अनन्तरं हि जातस्स जीविता मरणं धुव,
 जाता जाता मरन्तीध, एवंधम्मा हि पाणिनो ॥५५३॥
 न हेतवत्थाय मतस्स होति यं जीवित्तथ परपोरिसान
 मतम्हि रुण्णं, न यसो न लोक्य, न वण्णितं समणब्राह्मणेहि ॥५५४॥
 चक्खु सरीरं उपहन्ति रुण्णं, निहीयती वण्णबल मती च,
 आनन्दिनो तस्स विसा भवन्ति, हितेसिनो नास्स सुखी भवन्ति ॥५५५॥
 तस्मा हि दच्छेय्य कुले वसन्ते मेधाविनो चेव बहुस्मुते च,
 येस हि पञ्जा विभवेन किच्च तरन्ति नावाय नदि व पुण्णन्ति ॥५५६॥

महाकम्पिनो थेरो

दग्धा मय्हं गती आसि, परिभूतो पुरे अह
 भाता च मं पणामेसि, गच्छ दानि तुवं घरं ॥५५७॥
 सोहं पणामितो सन्तो मंधारामस्स कोट्टुके
 दुम्मनो तत्थ अट्ठासि सासनस्मि अपेक्खवा ॥५५८॥
 भगवा तत्थ आगच्छि, सीस मय्ह परामसि,
 बाहाय म गहेत्वान, संधाराम पवेसयि ॥५५९॥
 अनुकम्पाय मे मन्था पादामि पादपुञ्छानि
 एतं सुद्ध अधिट्ठेहि एकमन्त स्वाधिट्ठि ॥५६०॥
 तस्माह वचनं सुत्वा विहामि सामने ग्गो
 समाधि पटिपादेमि उत्तमत्थस्स पत्तिया ॥५६१॥
 पुब्बेनिवाम जानामि, दिब्बचक्खु विसोधित
 तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कन बुद्धस्स सासन ॥५६२॥
 सहस्मक्खन्नुमतानं निम्मिनित्वान पत्थको
 निसीदि अम्बवने रम्मे याव कालप्पवेदन ॥५६३॥
 ततो मे सत्था पाहेसि, दूत कालप्पवेदक
 पवेदितम्हि कालम्हि वेहासानुपमकमि ॥५६४॥
 वन्दित्वा सत्थुनो पादे एकमन्तं निसीदह
 निसिन्न म विदित्वान अथ सत्था पटिग्गहि ॥५६५॥
 आयागो सब्बलोकस्स आहुतीन पटिग्गहो
 पुञ्जखेतं मनुस्सानं पटिग्गहत्थ दक्खिणन्ति ॥५६६॥

चूलपन्थको धेरो

नानाकुलमलसम्पुण्णो महाउक्काग्गसम्भवो
 चन्दनिककं व परिपक्कं महागण्डो महावणो ॥५६७॥
 पुब्बरुहिरसम्पुण्णो गूथकूपे निगाळ्हिको
 आपोपग्घरणी कायो सदा सन्दति पूतिघं ॥५६८॥
 सट्ठि कण्डरसम्बन्धो मसलेपनलेपितो
 चम्मकञ्चुकसन्नद्धो पूतिकायो निग्गथको ॥५६९॥
 अट्ठि मंघाटघटितो न्हासुत्तनिवन्धनो
 नेकेस सगतिभावा कप्पेति इगियापय ॥५७०॥
 धुवप्पयातो मरणस्स मच्चुग्गजस्म सन्तिके,
 इधेव छट्ठयित्वान येनकामगमो नरो ॥५७१॥
 अविज्जाय निवुतो कायो, चतुगन्धेन गन्थितो ।
 ओघससीदनो कायो, अनुसयजालमोत्थितो ॥५७२॥
 पञ्च नीवरणे युत्तो, विनक्केन समप्पितो,
 तण्हामूले नानुगत्तो, मोह-छदनछादितो ॥५७३॥
 एवायं वत्तन्ती कायो कम्मयत्तेन यन्तितो,
 सम्पत्ति च विपत्यन्ता, नानाभवो विपज्जति ॥५७४॥
 ये' मं कायं ममायन्ति अन्धवाला पुषुज्जना
 वड्ढेत्तिं कट्ठमि घोर आदिरान्ति पुनब्भव ॥५७५॥
 ये म काय विवज्जेन्ति गूथल्लित व पन्नगं,
 भवमूल वमित्वान परिनिब्बिस्मन्नयनासवा'ति ॥५७६॥

कप्पो धेरो

विवित्ति अप्पनिग्घोम वाळमिगनिमेवित
 सेवे सेनामनं भिक्खु पटिसल्लानकाग्गा ॥५७७॥
 मकारपुञ्जा आहत्वा सुसाना रथियाहि च
 ततो सघाटिकं कत्वा लूख धारेय्य चीवर ॥५७८॥
 नीच मनं करित्वान सपदान कुला कुल
 पिण्डिकाय चरे भिक्खु गुत्तट्ठारो सुसवुतो ॥५७९॥
 लूखेन पि च सत्तुस्से, ताज्जा पत्थे रम बहु,
 रसेसु अन्नुगिड्डस्स ज्ञानेन रमन्ती मनो ॥५८०॥

अपिच्छो चेव सन्तुट्ठो पविवित्तो वसे मुनि,
 असंसट्ठो गहट्ठेहि अनागारेहि चूभयं ॥५८१॥
 यथा जळो च मूगो च अत्तानं दस्सये तथा,
 नातिवेलं पभासेय्य संघमज्झमिह पण्डितो ॥५८२॥
 न सो उपवदे कञ्चि उपघातं विवज्जये :
 संवुतो पानिमोक्खस्मि मत्तञ्जू चस्स भोजने ॥५८३॥
 सुग्गटीतनिमित्तस्स चित्तस्सुपादकोविदो,
 समथ अनुयुञ्जेय्य कालेन च विपस्सनं ॥५८४॥
 विरियसातच्चसम्पन्नो युत्तयोगो सदा सिया,
 न च अप्पत्वा दुक्खस्सन्तं विस्सासमेय्य पण्डितो ॥५८५॥
 एवं विहरमानस्स सुट्ठिकामस्स भिक्खुनो
 खीयन्ति आसवा सब्बे निब्बुत्तिञ्चाधिगच्छतीति ॥५८६॥

उपसेनो वड्ढन्तपुत्तो धरो

विजानेय्य सकं अत्थं, अवलोकेय्याथ पावचनं,
 यञ्चेत्थ अस्सपटिरूपं सामञ्जं अज्झुपगतस्स ॥५८७॥
 मित्त इध कल्याणं सिक्खाविपुलं समादानं
 मुस्सूसा च गरूनं एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८८॥
 बुद्धेमु सगारवता धम्मे अपचिति यथाभूतं
 संघे च चित्तिकारेः एतं समणस्स पटिरूपं ॥५८९॥
 आचारगोचरे यत्तो आनीवो सोधितो अगाग्यहो
 चिन्तस्स सण्ठपनं एतं समणस्स पटिरूपं ॥५९०॥
 चारित्तं अथ वारित्त इरियापथियं पसादानय
 अघिचित्तं च अयोगो एतं ॥५९१॥
 आरज्जकानि मेनासनानि पन्नानि अप्पसहानि
 भजतव्वानि मुनिना एतं ॥५९२॥
 मीलञ्च बाहुसच्चञ्च धम्मानं पविचयो यथाभय
 सच्चानं अभिसमयो एतं ॥५९३॥
 भावेय्य अनिच्चन्ति अनत्तसञ्जं अमुभसञ्जञ्च
 लोकमिह च अनभिरति एतं ॥५९४॥
 भावेय्य च बोज्झङ्गो इट्ठिपादानि इन्द्रियवलानि
 अट्ठङ्गमग्गमरियं : एतं ॥५९५॥

तण्हं पजहेय्य मुत्ती, समूलके आसवे पदालेय्य,
विहरेय्य विमुत्तो एतं समणस्स पटिरूपन्ति ॥५९६॥

गोतमो थेरो

उद्दानं

काळुदायी च सो थेरो एकविहारी च कप्पितो
बूळपन्यको कप्पो च उपमेनो च गोतमो
सत्तिमे दसके थेरा, गायायो चेत्य सत्ततीति
वसनिपातो निट्ठितो

एकादसनिपातो

किन्तवत्थो वने तात उज्जुहानो व पावुसे
 वेरम्भा रमणीया ते, पविवेको हि ज्ञायिनं ॥५९७॥
 यथा अब्भानि वेरम्भो वातो नुदति पावुसे
 सआ मे अभिकीरन्ति विवेकपटिसञ्जुता ॥५९८॥
 अपण्डरो अण्डसम्भवो सीवथिकाय निकेतचारिको
 उप्पादयतेव मे सति सन्देहस्मि विरागनिस्सितं ॥५९९॥
 यञ्च अञ्जेन रक्खन्ति यो च अञ्जेन रक्खति,
 स वे भिक्खु सुखं सेति कामेसु अनपेक्खवा ॥६००॥
 अच्छोदिका पुथुसिला गोनङ्गुलमिगायुता
 अम्बुसेवालसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मं ॥६०१॥
 विसितम्मे अरञ्जेसु कन्दरासु गुहासु च
 सेनासनेसु पन्तेसु वाळमिगनिमेविते ॥६०२॥
 इमे हञ्जन्तु वञ्जन्तु दुक्खं पप्पोन्तु पाणिनो
 सकप्प नाभिजानामि अनरियं दोसं संहितं ॥६०३॥
 परिचिण्णो मया सत्था, कतं बुद्धस्स सासनं,
 ओहितो गहको भारो, भवनेत्ति समुहता ॥६०४॥
 यस्स चत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारियं,
 सो मे अत्थो अनुप्पत्तो सब्बसंयोजनक्खयो ॥६०५॥
 नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितं
 कालञ्च पटिकङ्खामि निब्बिसं भतको यथा ॥६०६॥
 नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितं
 कालञ्च पटिकङ्खामि सम्पजानो पतिस्सतो 'ति ॥६०७॥

संकिञ्च घेरो

[७५]

संकिञ्च घेरो

उद्दानं

संकिञ्च घेरो एको व कतकिञ्चो अनासवो
एकादस निपातम्हि, गाथा एकादसेव ता'ति

एकादसनिपातो निट्ठितो

द्वादसनिपातो

सीलमेविष सिक्खेय अस्मि लोके सुसिक्खितं
 सीलं हि सब्बसम्पत्ति उपनामेति सेवितं ॥६०८॥
 सीलं रक्खेय्य मेधावी पत्थयानो तयो सुखे
 पसंसं वित्तिलाभञ्च पेच्च सग्गे च मोदनं ॥६०९॥
 सीलवा हि बहू भित्ते सञ्जमेनाधिगच्छति,
 दुस्सीलो पन मित्तेहि धंसते पापमाचरं ॥६१०॥
 अवणञ्च अकित्तिञ्च दुस्सीलो लभते नरो
 वण्णं किंत्ति पसंसञ्च सदा लभति सीलवा ॥६११॥
 आदिसीलं पतिट्ठा च कल्याणानञ्च मातुक
 पमुल्लं सब्बधम्मनं तस्मा सीलं विसोधये ॥६१२॥
 वेला च संवरं सीलं चित्तस्स अभिभामनं,
 तित्थञ्च सब्बबुद्धानं, तस्मा सीलं विसोधये ॥६१३॥
 सीलं बलं अप्पटिमं सीलं आदुष्वमुत्तमं,
 सीलमाभरणं सेट्ठं, सीलं कवचमम्भुतं ॥६१४॥
 सीलं सेतु महेसक्खो, सीलं गन्धो अनुत्तरो
 सीलं विलेपनं सेट्ठं येन वाति दिसो दसं ॥६१५॥
 सीलं सम्बलमेवगं, सीलं पाथेय्यमुत्तमं,
 सीलं सेट्ठो अतिवाट्ठो येन याति दिसो दिमं ॥६१६॥
 इधेव निन्दं लभति पेच्चापाये च दुम्मनो
 सम्बत्थ दुम्मनो बालो सीलेसु असमाहितो ॥६१७॥
 इधेव किंत्ति लभति पेच्च सग्गे च सुम्मनो,
 सम्बत्थ सुमनो धीरो सीलेसु सुसमाहितो ॥६१८॥
 सीलमेव इध अगं, पञ्जावा पन उत्तमो,
 मनुस्सेसु च देवेसु सीलपञ्जाणतो जयन्ति ॥६१९॥

सीलक्थेरो

नीचे कुलम्हि जातो'हं दळिहो अप्पभोजनो;
 हीनं कम्मं ममं आसि अहोसि पुप्फछट्ठको ॥६२०॥
 जिगुच्छितो मनुस्सानं परिभूतो च वम्भितो
 नीवं मन करित्वान वन्दिस्सं बहुकं जतं - ॥६२१॥
 अथ अट्ठासि सम्बुद्धं भिक्खुसंघपुरक्खत
 पविसन्तं महावीरं मगधानं पुरत्तम ॥६२२॥
 निक्खिपित्वान व्याभड्ढिग वन्दितु अपमंकरिं;
 ममेव अनुकम्पाय अट्ठासि पुरिसुत्तमो ॥६२३॥
 वन्दित्वा सत्थुनो पादे एकमन्तं ठितो तदा
 पब्बज अहमायाचि सब्बसत्तानमुत्तमं ॥६२४॥
 ततो काणिको सत्था सब्बलोकानुकम्पको
 एहि भिक्खू'ति मं आह, सा मे आसुपसम्पदा ॥६२५॥
 सो'हं एको अरज्जास्मि विहरन्तो अतन्दितो
 अकासि सत्थुवचनं यथा मं ओवदी जिनो ॥६२६॥
 रत्तिया पठमं यामं पुब्बजातिमनुस्सारि,
 रत्तिया मज्झिमं यामं दिब्बवक्खू विसोधित,
 रत्तिया पच्छिमे यामे तमोखन्धं पदालाय ॥६२७॥
 ततो रत्त्याविवसने सुरियस्सुग्गमनं पति
 इन्द्रो ब्रह्मा च आगत्त्वा मं नमस्सिं सु पज्जलि ॥६२८॥
 नमो ते पुरिसाजज्ज, नमो ते पुरिसुत्तम,
 यस्स ते आसवा खीणा, दक्खिण्यो'सि मारिस ॥६२९॥
 ततो दिस्वान मं सत्था देवसंघपुरक्खतं
 सितं पातुकरित्वान इमं अत्थं अभासथ ॥६३०॥
 तपेन ब्रह्मचरियेन संयमेन दमेन च
 एतेन ब्राह्मणो होति, एतं ब्राह्मणमुत्तमन्ति ॥६३१॥

सुणीतो थेरो

उद्दानं

सीलवा च सुणीतो च थेरो द्वेते महिद्धिका
 द्वादसम्हि निपातम्हि, गाथायो चतुवीसतीति
 द्वादसनिपातो निदिठतो

तेरसनिपातो

याहु रट्टे समुक्कट्टो रञ्जो अङ्गस्स पद्दगु
 स्वाज्ज धम्मेषु उक्कट्टो सोणो दुक्खस्स पारगु ॥६३२॥
 पञ्च छिन्दे पञ्च जहे पञ्च चुत्तरि भावये;
 पञ्च संङ्गातिगो भिक्खु ओघतिण्णो 'ति वुच्चति ॥६३३॥
 उन्नळस्स पमत्तस्स बाहिरासस्स भिक्खुनो
 सीलं समाधि पञ्जा च पारिपूरि न गच्छति ॥६३४॥
 यं हि किञ्च तदपविदं, अकिञ्चं पन कयिरति;
 उन्नळानं पमत्तानं तेसं वड्ढन्ति आसवा ॥६३५॥
 येसञ्च सुसमारद्धा निञ्चं कायगता सति,
 अकिञ्चन्ते न सेवन्ति किञ्चे सातच्चकारिनो
 सतानं सम्पजानानं अत्थं गच्छन्ति आसवा ॥६३६॥
 उज्जमग्गमिह अक्खाते गच्छथ मा निवत्तथ
 अत्तना चोदयत्तानं, निब्बानं अभिहारये ॥६३७॥
 अच्चारद्धमिह विरियमिह सत्था लोके अनुत्तरो
 वीणोपमं करित्वा मे धम्मं देसेसि चक्खुमा ॥६३८॥
 तस्साहं वचनं सुत्वा विहासिं सासने रतो
 समतं पटिपादेसि उत्तमत्थस्स पत्तिया,
 तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता, कतं बुद्धस्स सासनं ॥६३९॥
 नेक्खम्मो अधिमुत्तस्स पविवेकञ्च चेतसो
 अब्बापज्झाधिमुत्तस्स उपादानक्खयस्स च ॥६४०॥
 तण्हक्खयाधिमुत्तस्स असम्मोहञ्च चेतसो
 दिस्वा आयतनुप्पावं सम्मा चित्तं विमुच्चति ॥६४१॥
 तस्सा सम्मा विमुत्तस्स सन्तचित्तस्स भिक्खुनो
 कतस्स पटिचयो नत्थि, करणीयं च विज्जति ॥६४२॥

सेलो यथा एक घनो वातेन न समीरति,
 एवं रूपा रसा सद्वा गन्धा फस्सा च केवला ॥६४३॥
 इट्ठा धम्मा अनिट्ठा च न प्पवेघेन्ति तादिनो;
 ठितं चित्तं विसञ्जुतं वयञ्चस्सानुपस्सतीति ॥६४४॥

सोणो कोळिविसो थेरो

उद्दानं

सोणो कोळिविसोथेरो एको एव महिद्धिको
 तेरसम्हि निपातम्हि गायायो चेत्थ तेरसा'ति
 तेरसनिपातो निद्धितो

—

चुद्दसनिपातो

यदा अहं पब्बजितो अगारस्मा अनगारियं
 नाभिजानामि संकप्पं अनरियं दोससंहितं ॥६४५॥
 इमे हज्जान्तु वज्जन्तु दुक्खं पप्पोन्तु पाणिनो
 संकप्पं नाभिजानामि इमस्मि दोषमन्तरे ॥६४६॥
 मेत्तञ्च अभिजानामि अप्पमाणं सुभाविनं
 अनुपुब्बं परिचितं यथा बुद्धेन देसितं ॥६४७॥
 सब्बमित्तो सब्बसखो सब्बभूतानुक्कम्पको
 मेत्तं चिञ्च भावेमि अब्बापज्जरतो सदा ॥६४८॥
 असंहीरससंकुप्पं चित्तं आमोदयामहं
 ब्रह्मविहारं भावेमि अकापुरिससेवितं ॥६४९॥
 अवितक्क समापन्नो सम्मासम्बुद्धसावको
 यरियेन तुण्हिमावेन उपेतो होति तावदे ॥६५०॥
 यथापि पब्बतो सेल्लो अचलो सुप्पतिट्ठितो,
 एवं मोहक्खया भिक्खु पब्बतोव न वेधति ॥६५१॥
 अनङ्गणस्स पोसस्स निच्चं मुच्चिगवोसिनो
 वालग्गमत्तं पापस्स अब्भामत्तं व खायति ॥६५२॥
 नगरं यथा पच्चन्तं गुत्तं सन्तरत्ताहिरं
 एवं गोपेय अत्तानं खणे वे मा उपच्चगा ॥६५३॥
 नाभिनन्दामि. ॥=६०६,६०७॥ ॥६५४-६५५॥
 परिचिण्णो. . . (॥=६०४,६०५॥) ॥६५६-६५७॥
 सम्पादेत्थ पमादेन, एसा मे अनुसासनी;
 हन्दाहं परिनिब्बिस्सं, विप्पमुत्तो'मिह सब्बधीति ॥६५८॥

रेवतो थेरो

यथापि भद्दो आजज्जो धुरे युत्तो धुरस्सद्दो
 मयितो अतिभारेण संयुगं नातिवत्तति ॥६५९॥

एव पञ्चाय ये तित्ता समुद्रो वारिता यथा
न परे अतिमञ्जन्ति, यरियधम्मो'व पाणिन ॥६६०॥
काले कालवसम्पत्ता भवाभववस गता
नरा दुक्ख निगच्छन्ति ते'ध सोचन्ति माणवा ॥६६१॥
उन्नता सुखधम्मेन दुक्खधम्मेन ओनता
द्वयेन बाला हय्यन्ति यथाभूत अदस्सिनो ॥६६२॥
ये च दुक्खे सुखस्मिञ्च मज्जे सिब्बनिमज्जगू
ठिता ते इन्दस्सिलो व, न ते उन्नतओनता ॥६६३॥
न हेव लाभे नालाभे न यसे न च कित्तिया
न निन्दाय पससाय न ते दुक्ख सुखमिह च ॥६६४॥
सब्बत्थ ते न लिप्पन्ति उदविन्दु व पोक्खरे,
सब्बत्थ सुखिता वीरा सब्बत्थ अपराजिता ॥६६५॥
धम्मेन च अलाभो यो यो च लाभो अधम्मिको
अलाभो धम्मिको सेय्यो यञ्चे लाभो अधम्मिको ॥६६६॥
यसो च अप्पबुद्धीन विञ्जून अयसो च यो
अयसो च सेय्यो विञ्जून न यसो अप्पबुद्धिन ॥६६७॥
दुम्मेधेहि पससा च विञ्जूहि गरहा च या
गरहा'व सेय्यो विञ्जूहि यञ्चे बालप्पससता ॥६६८॥
सुखञ्च काममयिक दुक्खञ्च पविवेकिय
पविवेकिय दुक्ख सेय्यो यञ्चे काममय सुख ॥६६९॥
जीवितञ्च अधम्मेन धम्मेन मरणञ्च य
मरण धम्मिक सेय्यो यञ्च जीवे अधम्मिक ॥६७०॥
कामकोपपहीना ये सन्तचित्ता भवाभवे
चरन्ति लोके असिता, नत्थि तेस पियापिय ॥६७१॥
भावयित्वान बोज्झङ्गे इन्द्रियाणि वलानि च
पप्पुय्य परम सन्ति परिनिब्बन्ति अनासवा'ति ६७२॥

गोदत्तो धेरो

उद्दान

रेवतो चैव गोदत्तो धेरो ते महिद्धिका
चुद्दसमिह निपातमिह, गाथायो अट्टवीसतीति
चुद्दसनिपातो निद्रितो

सोळसनिपातो

एस भिय्यो पसीदामि सुत्वा धम्मं महारसं;
 विरागो देसितो धम्मो अनुपादाय सब्बसो ॥६७३॥
 बहूनि लोके चित्रानि अस्मि पुथु विमण्डले
 मथेन्ति मञ्जो सङ्ककप्पं सुभ रागूपसंहितं ॥६७४॥
 रजमुपातं वातेन यथा मेघो पसामये ।
 एवं सम्मन्ति संकप्पा यदा पञ्जाय पस्सति ॥६७५॥
 सब्बे संखारा अनिच्चा'ति यदा पञ्जाय पस्सति ।
 अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७६॥
 सब्बे संखारा दुक्खा'ति—सब्बे धम्मा
 अनत्ता'ति यदा पञ्जाय पस्सति ।
 अथ निब्बिन्दती दुक्खे, एस मग्गो विमुद्धिया ॥६७७-६७८॥
 बुद्धानुबुद्धो यो थेरो कोण्डञ्जो तिब्बनिकलमो ।
 पहीनजातिमरणो ब्रह्मचरियस्स केवली ॥६७९॥
 ओघपासो दळ्हो खीलो पब्बतो दुप्पदालियो; ।
 छेत्वा खीलञ्च पासञ्च सेलं छेत्वा न दुब्बिदं
 तिण्णो पारंगतो आयी मुत्तो सो मारबन्धना ॥६८०॥
 उद्धतो चपलो भिक्खु मित्ते आगम्म पापके ।
 संसीदति महोघास्म उम्मिया पटिकुज्जितो ॥६८१॥
 अनुद्धतो अचपलो निपको संवुतिन्द्रियो ।
 कल्याणमित्तो मेघावी दुक्खस्सन्तकरो सिया ॥६८२॥
 कालापब्बड्ढा मंकासो . . . (=२४३, २४४) ॥६८३-६८४॥
 नाभिनन्दामि . . . (=६०६, ६०७) ॥६८५-६८६॥
 परिचिण्णो (=६०४) ॥६८७॥
 यस्स चत्थाय पब्बजितो अगारस्मा अनगारियं, -
 सो मे अत्थो अनुप्पत्तो, किं मे सन्दविहारेना'ति ॥६८८॥

अञ्जाकोण्डञ्जो धेरो

मनुस्सभूतं सम्बुद्ध अत्तदन्तं समाहितं
इरियमानं ब्रह्मपथे चित्तस्सुपसमे रतं ॥६८९॥
य मनुस्सा नमस्सन्ति सब्बधम्ममान पारगुं
देवापि तं नमस्सन्ति, इति मे अरहतो मुतं ॥६९०॥
सब्बसयोजनातीतं वना निब्बनमागतं
कामेहि निक्खम्मरतं मुत्तसेला व कञ्चनं ॥६९१॥
स वे अच्चन्त रुची नागो हिमवावञ्जो सिलुच्चये,
सब्बेसं नागनामान सच्चनामो अनुत्तरोः ॥६९२॥
नागं वो कित्तिस्साभि, नहि आगु करोति सो,
सोरच्चं अविहिंसा च पादा नागस्स ते दुवे ॥६९३॥
सति च सम्पजञ्जाञ्च चरणा नागस्स ते परे
सद्धाहत्थो महानागो, उपेक्वा सेतदन्तवा ॥६९४॥
सति गीवा, सिरो पञ्जा, वीमसा धम्मचिन्तना,
धम्मकुच्छि समावासो, विवेको तस्म वालधि ॥६९५॥
सो ज्ञायी अस्सासरतो अज्झत्त सुसमाहितो,
गच्छं समाहितो नागो, ठिनो नागो समाहितो ॥६९६॥
सयं समाहितो नागो, निसिन्नो पि समाहितो
सब्बत्थ संवुतो नागो, एसा नागस्स सम्पदा ॥६९७॥
भुञ्जति अनवज्जानि, सावज्जानि न भुञ्जति.
घासं अच्छादनं लद्धा सन्निधि परिवज्जय, ॥६९८॥
संयोजन अणु थूल सब्ब छेत्वान बन्धन,
येन येनेव गच्छति अनपेक्खोव गच्छति ॥६९९॥
ययापि उदके जातं पुण्डरीक पवड्ढति,
नोपलिप्पति तोयेन सुच्चिगन्धं मनोरम ॥७००॥
तथेव च लोके जातो बुद्धो लोके विहरति,
नोपलिप्पति लोकेन तोयेन पदुमं यथा ॥७०१॥
महागिनि पज्जलितो अनाहारो पसम्मति
अङ्गारेसु च सन्तेसु निब्बुतो'ति पवुच्चति ॥७०२॥
अत्थस्सायं विञ्जापनी उपमा विञ्जूहि देसिता,
विञ्जिअसन्ति महानागा नागं नागेन देसितं ॥७०३॥

वीतरागो वीतदोसो वीतमोहो अनासवो
स रीरं विजंहं नागो परिनिब्बिस्सत्यनासवो'ति ॥७०४॥

उदायी थेरो

तन्नुद्दानं भवति

कोण्डञ्जो च उदायी च थेरा द्वेते महिद्धिका
सोळसम्हि निपातम्हि, गाथायो द्वे च तिस चा'ति

सोळसनियासो निट्ठितो

वीसतिनिपातो

यञ्जत्थं वा धनत्थं वा ये हताम मयं पुरे
 अवसेमं भयं होति, वेधन्ति विलपन्ति च ॥७०५॥
 तस्स ते नत्थि भीत्तं, भिग्यो वण्णो पसीदति;
 कस्मा न परिदेवेसि एवरूपे महम्मये ॥७०६॥
 नत्थि चेतसिकं दुक्खं अनपेक्खस्स गामणि,
 अतिक्कन्ता भया सब्बे खीणं सयोजनस्स वे ॥७०७॥
 खीणाय भवनेत्तिया दिट्ठे धम्मे यथातथे
 न भय मरणे होति भारनिक्खेपने यथा ॥७०८॥
 मुचिण्णं ब्रह्मचरियं मे, मग्गो चापि सुभावितो,
 मरणे मे भयं नत्थि रोगानमिव सखये ॥७०९॥
 मुचिण्णं ब्रह्मचरियं मे मग्गो चापि सुभावितो,
 निरस्सादा भवा दिट्ठा, विसं पित्वा न छड्डितं ॥७१०॥
 पारगू अनुपादानो कतकिच्चो अनासवो
 तुट्ठो आयुक्खया होति मुत्तो आघातना यथा ॥७११॥
 उत्तमं धम्मतो पत्तो सब्बलोके अनत्थिको
 आदित्ता व घरा मुत्तो मरणस्मि न मोचति ॥७१२॥
 यदत्थि संगतं कञ्चि भवो च यत्थ लब्धति,
 सब्बं अनिस्सरं एतं, इति उत्तं महेसिना ॥७१३॥
 यो तं तथा पजानाति यथा बुद्धेन देसितं,
 न गण्हति भवं किञ्चि सुतत्तं व अयोगुळं ॥७१४॥
 न मे होति अहोसिन्ति, भविस्सन्ति न होति मे,
 संखारा विमविस्सन्ति : तत्थ का परिदेवना ॥७१५॥
 सुद्धं धम्मसमुप्पादं सुद्धं संखारसन्तति
 पस्सन्तस्स यथाभूतं न भयं होति गामणि ॥७१६॥

तिणकट्टुसमं लोकं यदा पञ्जाय पस्सति
 ममतं सो असंविन्दं नत्थि मेति न सोचति ॥७१७॥
 उक्कण्ठामि सरीरेन, भवेनमिह अत्थिको,
 सो'यं भिरिजस्सति कायो अञ्जो च न भविस्सति ॥७१८॥
 य वो किच्चं सरीरेन त करोथ यदिच्छथ,
 न मे तप्पच्चया तत्थ दोसो पेमं च हेहिनि ॥७१९॥
 तस्स त वचन सुत्वा अब्भुत लोमहसनं
 सत्थानि बिक्खपित्वान माणवा एतदब्रवु ॥७२०॥
 कि भट्ठन्ते करित्वान, को वा आचारियो तव,
 किस्स सासनमागम्म लभते त असोकता ॥७२१॥
 सब्बञ्जू सब्बदस्सावी जिनो आचरियो मम
 महाकारुणिको सत्था सब्बलोकतिकिच्छको ॥७२२॥
 तेनायं देसितो धम्मो खयगामो अनुत्तरो
 तस्स सासनमागम्म लभते तं अमोकता ॥७२३॥
 सुत्वान चोरा इसिनो सुभासितं निक्खिप्प,
 सत्थानि च आवुधानि च
 तम्हा च कम्मा विरममु एके,
 एके च पव्वज्जमरोचायसु ॥७२४॥
 ते पव्वजित्वा सुगतस्म सामने
 भावेत्वा बोग्गझगवलानि पण्डिता
 उदगचित्ता सुमना कतिन्द्रिया फुसिमु,
 निब्बानपद अमवतन्नि ॥७२५॥

अधिमुत्तो थेरो

समणस्स अहं चिन्ता पारापण्यस्स भिक्खुनो
 एककस्स निसिन्नस्स पविवित्तस्स ज्ञायिनो ॥७२६॥
 किमानुपुव्व पुरिसो कि वतं कि समाचारं
 अत्तनो किच्चकारि'स्स न च किञ्चि विहेठये ॥७२७॥
 इन्द्रियाणि मनुस्सानं हिताय अहिताय च
 अरक्खितानि अहिताय रक्खितानि हिताय च ॥७२८॥
 इन्द्रियानेव सारक्खं इन्द्रियाणि च गोपयं
 अत्तनो किच्चकारि'स्स न च किञ्चि विहेठये ॥७२९॥

चक्षुन्द्रियञ्चे रूपेषु गच्छन्तं अनिवारयं
 अनादीनवदस्सावी, सो दुक्खा न हि मुच्चति ॥७३०॥
 सोतिन्द्रियञ्च सद्देषु गच्छन्तं अनिवारयं
 अनादीनवदस्सावी, सो दुक्खा न हि मुच्चति ॥७३१॥
 अनिस्सरणदस्सावी गन्धे चे पटिमैवति,
 न सो मुच्चति दुक्खम्हा गन्धेषु अधिमुच्छित्तो ॥७३२॥
 अम्बिलमधुरमञ्च तित्तकणमनुस्सर
 रसनण्हाय गधितो हृदय नाव बुज्झति ॥७३३॥
 मुभान्यप्पटिकूलानि फोटुब्बानि अनुस्सरं
 रत्तो रगाधिकरणं विविध विन्दते दुखं ॥७३४॥
 मनञ्चेतेहि धम्ममेहि यो न सक्कोति रक्खितु
 ततो नं दुक्खमन्वेति मब्बेहेतेहि पञ्चहि ॥७३५॥
 पुब्बलोहितसम्पुण्ण बहुस्स कुणपस्स च
 नरवीर कतं वग्गुं समुग्गामिव चित्तिनं ॥७३६॥
 कटुकं मधुरस्माद पिय निवन्धन दुखं
 खुर व मधुना लित्त उल्लित्त नाव बुज्झति ॥७३७॥
 इत्थिरूपे इत्थिग्गे फोटुब्बे पि च इत्थियया
 इत्थिगन्धेषु सारत्तो विविध विन्दते दुख ॥७३८॥
 इत्थिसोतानि सब्बानि सन्दन्ति पञ्च पञ्चसु,
 तेस आवरण कातु यो सक्कोति विरियवा, ॥७३९॥
 सो अत्थवा सो धम्मट्ठो, सो दक्खो, सो विचक्खणो
 करेय्य रममानो हि किञ्च धम्मत्थसहित ॥७४०॥
 अथो सीदति मञ्जुन वज्जे किञ्च निरत्यकं,
 न त किञ्चन्ति मञ्जित्वा अप्पमतो विचक्खणो ॥७४१॥
 यञ्च अत्थेन मञ्जुनं या च धम्मगता रति
 तं समादाय वत्तेथ, स हि वे उत्तमा रति ॥७४२॥
 उच्चावचे द्वापाये हि परेसमभिजिगीसाति
 हत्वा वधित्वा अथ सोचयित्वा
 आलोपति साहसा यो परेसं ॥७४३॥
 तच्छन्तो आणिया आणि निहन्ति बलवा यथा
 इन्द्रियानि, न्द्रियेहेव निहन्ति कुसला तथा ॥७४४॥

सद्धं विरियं समाधिञ्च सतिपञ्जाञ्च भावयं
 पञ्च पञ्चहि हस्वान अनीषो याति ब्राह्मणो ॥७४५॥
 सो अथवा सो धम्मट्ठो कत्वा वाक्यानुसासनिं
 सब्बेन सब्बं बुद्धस्स, सो नरो सुखमेघतीति ॥७४६॥

पारापरियो थेरो

चिररत्तं वतातापो धम्मं अनुविचिन्तयं
 सम चित्तस्स नालत्थं पुच्छ समणब्राह्मणे ॥७४७॥
 को सो परगतो लोके, को पत्तो अमतोगधं,
 कस्स धम्म पटिच्छामि परमत्थविजाननं ॥७४८॥
 अन्तोवड्ढकगतो आसि मच्छो व घसमामिस,
 बद्धो महिन्दपासेन वेपचित्थासुरो यथा ॥७४९॥
 अञ्चामि न न मुञ्चामि अस्मा सोकपरिद्ववा
 को मे बन्ध मुञ्चं लोके सम्बोधि वेदयिस्सति ॥७५०॥
 समणं ब्राह्मण वा कं आदिसन्त पभङ्गुन,
 कस्स धम्मं पटिच्छामि जरामच्चुपवाहनं ॥७५१॥
 विचिकिच्छाकड्ढसागधित सारम्मबलसञ्जुतं
 कोधप्पत्तमनत्थद्धं अभिजप्पपदारणं ॥७५२॥
 तण्हाघनुसमुद्धानं द्वे च पन्नरसायुतं
 पस्स ओरसिकं बालं भेत्वान यदि ठति ॥७५३॥
 अनुदिट्ठिन अप्पहानं सकप्प सरत्तेजित
 तेन विद्धो पवेष्मामि पत्त व मालुतेरितं ॥७५४॥
 अज्झत्तं मे समुदाय खिप्प पच्चति मामक,
 छरुस्सायतनी कायो यत्थ सरति सब्बदा ॥७५५॥
 त न पस्सामि तेकिच्छं यो मे त सल्लमुद्धरे
 नागा रज्जेन सत्थेन नाञ्जेन विचिकिच्छितं ॥७५६॥
 को मे असत्थो अवणो सल्लमब्भन्तरा पस्सय
 अहिंसं सब्बगतानि सल्ल मे उद्धरिस्सति ॥७५७॥
 धम्मप्पति हि सो सेट्ठो विसदोसपवाहको
 गम्भीरे पतितस्स मे थलं पाणिव दस्सये ॥७५८॥
 रहदेहं अस्मि ओगाळ्हो अहारियरजमन्तिके
 माथा उस्सुय्यसारम्म धीनमिद्धमपत्थटे ॥७५९॥

उद्धञ्चमेधधनितं संयोजनवलाहकं
 बाहा वहन्ति कुद्दिट्ठं संकप्पा रागनिस्सिता ॥७६०॥
 सबन्ति सब्बधी सोता, लता उब्भिज्ज तिट्ठति;
 ते सोते को निवारेय्य'तं छतं को हि छेच्छति ॥७६१॥
 बेलं करोथ भद्दन्ते सोतानं सन्निवारणं,
 मा ते मनोमयो सोतो रक्खं व सहसा लुवे ॥७६२॥
 एवं मे भयजातस्स अपारापारमेसतो
 ताणो पञ्जावुधो सत्या इसिसघनिसेवितो ॥७६३॥
 सोपानं सुकतं सुद्धं धम्मसारमयं दब्धं
 पादासि बृहत्मानस्स माभायीति च मन्त्रवि ॥७६४॥
 सतिपट्टानपासादं आरूय्ह पञ्चवेक्खिस्स
 यन्तं पुब्बे अमाज्जिस्सं सक्कायाभिरत पजं ॥७६५॥
 यदा च मग्गमद्दक्खिं नावाय अभिरूहन्
 अनधिट्ठाय अत्तानं नित्थमद्दक्खिमुत्तमं ॥७६६॥
 सल्ल अत्तसमुद्धानं भवनेति पभावित
 एतेसं अप्पवत्ताय देसेसि मग्गमुत्तम ॥७६७॥
 दीघरत्तानुसयितं चिररत्तपतिट्ठितं
 बुद्धो मे पानुदी गन्धं विसदोसपवाहनो'ति ॥७६८॥

तेलकानि थेरो

पस्स चित्तकतं बिम्बं अरुकायं समुस्सितं
 आतुरं बहुसंकप्पं, यस्स नत्थि धुवं ठिति ॥७६९॥
 पस्स चित्तकतं रूप मणिना कुण्डलेन च
 अट्ठितत्थेन ओनद्धं सह वत्थेहि सोभति ॥७७०॥
 अलत्तककता पापा मुखं चुण्णकमक्खितं
 अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७१॥
 अट्ठापदकता केसा, नेत्ता अञ्जन मक्खिता
 अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७२॥
 अञ्जनी'व नवा चित्ता पूत्तिकायो अलंकतो
 अलं बालस्स मोहाय नो च पारगवेसिनो ॥७७३॥
 ओदहि मिगवो पासं, नासादा वाकुरं मिगो;
 भुत्वा निवापं गच्छाम कन्दन्ते मिगबन्धके ॥७७४॥

छिन्ना पासा मिगवस्स, नासादा वाकुरं मिगो,
 भुत्वा निवापं गच्छाम सोचन्ते मिगलुद्धके ॥७७५॥
 पस्सामि लोके सधने मनुस्से, लुब्धान वित्तं न ददन्ति मोहा;
 लुब्धा धनं सन्निचयं करोन्ति भिद्यो च कामे अभिपत्त्ययन्ति ॥७७६॥
 राजा पसय्ह प्पथवि विजेत्वा
 ससागरन्त महिमावसन्तो
 ओरं समुद्दस्स अनित्तरूपो पारं
 समुद्दस्स पि पत्त्ययेथ ॥७७७॥
 राजा च अज्जे च बहू मनुस्सा
 अवीततण्हा मरणं उपेन्ति;
 ऊना व हुत्वान जहन्ति देह,
 कामेहि लोकमिह न हत्थि तित्ति ॥७७८॥
 कन्दन्ति नं जाति पक्किरिय केमे
 अहो वता नो अमरा'ति चाहु,
 वत्थेन न पारुनं नीहग्त्वा
 चित समोघाय ततो दहन्ति ॥७७९॥
 सो डय्हति मूलेहि तुज्जमानो एकेन वत्थेन पहाय भोगे;
 न मिय्यमानस्स भवन्ति ताणा जानी च मित्ता अथवा सहाया ॥७८०॥
 दायादका तस्स धनं हरन्ति,
 सत्तो पन गच्छति येन कम्म,
 न मिय्यमानं धनमन्वेति किञ्च पुत्ता
 च दारा च धनञ्च रट्ठ ॥७८१॥
 न दीघमायु लभते धनेन
 न चापि वित्तेन जर विहन्ति'
 अप्पञ्चि न जीवितमाहु धीरा असम्मन
 विप्परिणामधम्म ॥७८२॥
 अद्धा दलिद्दा च फुसन्ति फस्स,
 बालो च धीरो च तथेव फुट्ठो;
 बालो हि बाल्या वधितो व मेति,
 धीरो च न वेधति फस्सफुट्ठो ॥७८३॥
 तस्मा हि पज्जाव धनेन सेय्यो याय
 वोसान इधाधि गच्छति,

अव्योसितत्था हि भवाभवेसु पापानि
 कम्मानि करोन्ति मोहा ॥७८४॥
 उपेति गग्गञ्च पदञ्च लोक संसारमापज्ज परम्पराय,
 तस्सप्पपञ्जो अभिसद्दहन्तो उपेति गग्गञ्च परञ्च लोक ॥७८५॥
 चोरो यथा सन्धिमुखं गहीतो सकम्मुना हञ्जति पापधम्मो,
 एवं पजा पेच्च परमिह लोके सकम्मुना हञ्जति पापधम्मो ॥७८६॥
 कामा हि चित्रा मधुरा मनोरमा
 विरूपरूपेण मथेन्ति चित्तं;
 आदीनवं कामगुणमु दिस्वा तस्मा
 अहं पब्बजितो'मिह राजा ॥७८७॥
 दुमप्फलानीव पतन्ति माणवा
 दहरा च वुड्ढा च सरिरभेदा;
 एतम्पि दिस्वा पब्बजितो'मिह राजा
 अप्पण्णकं सामञ्जमेव सेय्यो ॥७८८॥
 मढायाहं पब्बजितो उपेतो जिनसामने,
 अवज्जा मय्ह पव्वजा, अनणो भुज्जामि भोजनं ॥७८९॥
 कामे आदित्तो दिस्वा जातरूपानि सन्थतो
 गग्गे ओक्कन्तितो दुक्खं निरपेमु महब्भय. ॥७९०॥
 एतमादीनव दिस्वा भवेग अल्लभि तदा,
 मो'हं विद्धो तदा सन्तो सम्पत्तो आवसक्खयं ॥७९१॥
 परिचिण्णो. . . (= ६०४) ॥७९२॥
 यम्मन्थाय पब्बजितो. . . (यस्स ६०५)
 सब्बम योजनक्खयो'ति ॥७९३॥

रट्टपालो धेरो

हपं दिस्वा सति मुट्ठा पियनिमित्त मनसि करोतो;
 सीरत्तचित्तो वेदेति तञ्च अज्झोम तिट्ठति ॥७९४॥
 तस्स वड्ढन्ति वेदना अनेका रूपसम्भवा,
 अभिज्झा च विहेसा च चित्तमस्सूपहञ्जति,
 एवमाचितो दुक्ख आरा निब्बान वुच्चति ॥७९५॥
 सद् मुत्वा सति मुट्ठा . . . (७९४, ७९५;) ॥७९६-७९७॥
 गन्ध घत्वा. . . . (गन्ध सम्भवा ॥७९८-७९९॥

रसं भोत्वा. (रससम्भवा) ॥८००-८०१॥
 फस्सं फुस्स. (फस्ससम्भवा) ॥८०२-८०३॥
 धम्मं ज्ञत्वा. (धम्मसम्भवा) ॥८०४-८०५॥
 न सो रज्ज्वति रूपेसु; रूपं दिस्वा पतिस्सतो
 विरत्तचित्तो वेदेति तञ्च नज्झोस तिट्ठति ॥८०६॥
 यथास्स पस्सतो रूपं सेवतो वापि वेदनं
 खिय्यति नोपचिय्यति एवं सो चरती सतो;
 एवं अपचिनतो दुक्खं सन्तिके निब्बान वुच्चति ॥८०७॥
 न सो रज्जति सद्देषु, सद्दं मुत्वा पतिस्सतो (.. . . . गन्धे.)
 सुगन्धं घत्वा. रसेसु रसं भोत्वा.
 फस्सेसु फस्सं फुस्स. धम्मेसु धम्मं ज्ञत्वा पतिस्सतो)
 विरत्तचित्तो वेदेति तञ्च नज्झोस तिट्ठति ॥८०८-८१०॥
 ८१२-८१४-८१६ ॥
 यथास्स सुणतो सद्दं (घायतो गन्धं, सायतो रसं, ।
 फुस्सतो फस्सं, विजानतो धम्मं)-
 सेवतो वापि वेदनं
 खिय्यति नोपचिय्यति एवं सो चरती सतो;
 एवं अपचिनतो दुक्खं सन्तिके निब्बान
 वुच्चति ॥८०९, ८११, ८१३, ८१५, ८१७॥

मालुक्यपुत्तो थेरो

परिपुण्णकायो मुरूच्चि सुजातो चारुदस्सनो
 सुवण्णवण्णो'मि भगवा, सुसुक्कदाटो'सि
 विरियवा ॥८१८॥
 नरस्स हि सुजातस्स ये भवन्ति विपञ्जना
 सब्बे ते तव कार्यास्मि महापुरिसलक्खणा ॥८१९॥
 पसन्नन्तो सुमुखो ब्रह्मा उज्जु पतापवा
 मज्झे समणसघस्स आदिच्चो व विरोचसि ॥८२०॥
 कल्याणदस्सनो भिक्खु कञ्चनसन्निभत्तचो
 किन्ते समणभावेन एवं उत्तमवणिणो ॥८२१॥
 राजा अरहसि भवितुं चक्कवति रथेसभो
 चातुरन्तो विजितावी जम्बुसण्डस्स इस्सरो ॥८२२॥

क्षतिया भोजराजानो अनुयन्ता भवन्ति ते,
 राजाभिराजा मनुजिन्दो रज्जं कारेहि गोतम ॥८२३॥
 राजाहमस्मि सेला'ति भगवा धम्मराजा अनुत्तरो,
 धम्मेन चक्कं वत्तेमि चक्कं अप्पटिवत्तियं ॥८२४॥
 सम्बुद्धो पटिजानासि इति सेलो
 ब्रह्मणो धम्मराजा अनुत्तरो
 धम्मेन चक्कं वत्तेमि इति भाससि गोतम ॥८२५॥
 कोनु सेनापति भोतो सावको सत्थुरन्वयो,
 को इमं अनुवत्तेति धम्मचक्कं पवत्तितं ॥८२६॥
 मया पवत्तितं चक्कं सेला 'ति भगवा धम्मचक्कमनुत्तरं
 सारिपुत्तो'नुवत्तेति अनुजातो तथागत ॥८२७॥
 अभिञ्जेयं अभिञ्जातं भावेतब्बञ्च भावितं,
 पहातब्बं पहीन मे, तस्मा बुद्धो'स्मि ब्राह्मणं ॥८२८॥
 विनयस्सु मयी कङ्कल, अधिमुच्चस्सु ब्राह्मण
 दुल्लभं दस्सनं होति सम्बुद्धानं अभिण्हसो ॥८२९॥
 येसं वे दुल्लभो लोके पातुभावो अभिण्हसो,
 सो'हं ब्राह्मण बुद्धो'स्मि सल्लकत्तो अनुत्तरो ॥८३०॥
 ब्रह्मभूतो अतितुलो मारसेनप्पमद्दुनो
 सब्बामित्तं वसीकत्वा मोदामि अकुतोभयो ॥८३१॥
 इदं भोन्तो निसामेय यथा भासति चक्खुमा
 सल्लकत्तो महावीरो, सीहो व नदती वने ॥८३२॥
 ब्रह्मभूतं अतितुलं मारसेनप्पमद्दुनं
 को दिस्वा न प्पसीदेय्य अपि कण्हामिजातिको ॥८३३॥
 ये मं इच्छति अन्वेतु, यो वा निच्छति गच्छतुः
 इधाहं पब्बजिस्सामि वरपञ्चास्स सन्तिके ॥८३४॥
 एतञ्चे एच्चति भोतो सम्मासम्बुद्धसासन
 मयम्पि पब्बजिस्साम वरपञ्चास्स सन्तिके ॥८३५॥
 ब्राह्मणा तिसता इमे याचन्ति पञ्जलीकता
 ब्रह्मचरियं चरिस्साम भगवा तव सन्तिके ॥८३६॥
 स्वाखात ब्रह्मचरियं सेला'ति भगवा सन्दिट्ठिकमकालिकं
 यथा अमोघा पब्बज्जा अप्पमतस्स सिक्खतो ॥८३७॥

यन्तं सरणमागम्य इतो अट्टमि चक्खुमा,
 सत्तरत्तेन भगवा दन्तम्हा तव सासने ॥८३८॥
 तुवं बुद्धो, तुवं सत्था, तुवं माराभिभू मुनि,
 तुवं अनुसये छेत्वा तिण्णो तारेसि मं पजं ॥८३९॥
 उपधी ते समतिक्कन्ता, आसवा ते पदालिता,
 सीहो व अनुपदानो पहीनभयभेरवो ॥८४०॥
 भिक्खवो तिसता इमे तिट्ठन्ति पञ्जलीकता ।
 पादे वीर पसारेहि, नागा बन्धन्तु सत्थुनो'ति ॥८४१॥

सेलो धेरो

या तं मे हत्थिगीवाय सुखुमा वन्था पधारिता,
 सीलीनं ओदनो भुत्तो सुचिममूपसेचनो ॥८४२॥
 सो'ज्ज भद्दो साततिको उञ्छापत्ता गतेरतो
 झायति अनुपादानो पुत्तो गोघाय भद्दियो ॥८४३॥
 पंसुकूली साततिको उञ्छापत्तागते रतो
 झीयति अनुपादानो पुत्तो गोघाय भद्दियो ॥८४४॥
 पिण्डपाती साततिको—प—तेचीवरी साततिको—प
 सपदानचारी—प—एकासनी—प—पत्तपिण्डी
 —प—खलुपच्छाभत्ती—प—आरज्जिको
 —प—हक्खमूलिको—प—अम्भोकासी
 —प—सोसानिको—प—यथासन्न्यतिको
 —प—नेसज्जिको—प—अपिच्छो—प—
 सन्तुट्ठो—प—पविवित्तो—प—असंसट्ठो
 —प—आरद्धविरियो साततिको—प—॥८४५—८६१॥
 हित्वा सतपलं कंसं सोवण्ण सनराजिकं
 अग्गहि मत्तिकापत्तं, इदं दुत्तियाभिसेचन ॥८६२॥
 उच्चै मण्डलिपाकारे दळ्हमट्टालकोट्टु के
 रक्खितो खग्गहत्येहि उत्तसं विहारि पुरे ॥८६३॥
 सो'ज्ज भद्दो अनुवासी पहीनभयभेरवो
 झायति वनमोगयूह पुत्तो गोघाय भद्दियो ॥८६४॥
 सीलक्खन्धे पत्तिट्ठाय सति पञ्जञ्च भावय
 पापुणि अनुपुब्बेन सब्बसंयोजनक्खयन्ति ॥८६५॥
 भद्दियो कालिगोघाय पुत्तो

गच्छं वदेसि समण ठितो 'मिह भमञ्च
 बूसि ठितमट्ठितो'ति
 पुच्छामि तं समण एतमत्थं कस्मा ठितो त्वं अहमट्ठितो'मिह ॥८६६॥
 ठितो अहं अङ्गुलिमाल सब्बदा सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डं
 त्वञ्च पाणेसु असञ्जनो'सि तस्मा ठितो'ह तुवमट्ठितो'सि ॥८६७॥
 चिरस्स वत मे महितो महेसि महावन समणो पच्चुपादि;
 सो'मं चजिस्सामि सहस्सपापं सुत्तवान गाथं तव धम्मयुत्तं ॥८६८॥
 इत्थेव चोरो अमिमावुवञ्च मोढ्मे गपाते नरके अन्वकासि,
 अवादि चोरो सुगतस्स पादे तत्थेव पव्वज्जिमयाचि बुद्ध ॥८६९॥
 बुद्धो च खो कारुणिको महेमिओ
 सत्था लोकस्स सदेवकस्स
 नमेहि भिक्खू'ति तदा अवोच, एमेव तस्म अहु भिक्खुभावो ॥८७०॥
 यो पुब्बे पमज्जित्वान पच्छा सो न पमज्जति,
 सो'ह लोक पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७१॥
 यस्स पाप कत कप्प कुसलेन पिथीयति,
 मो'ह लोकं पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७२॥
 यो हवे दहरो भिक्खु युञ्जती बुद्धसामने,
 सो'ह लोकं पभामेति अब्भा मुत्तो व चन्दिमा ॥८७३॥
 दिसा हि मे धम्मकथ सुणन्तु, दिसा हि मे युञ्जन्तु बुद्धसासने
 दिसा हि मे ते मनुस्से भजन्तु ये धम्ममेवादपयन्ति सन्तो ॥८७४॥
 दिसा हि मे खन्तिवादान अविरोधप्पसंसन
 सुणन्तु धम्म कालेन तञ्च अनुविधीयन्तु ॥८७५॥
 न हि जातु सो मम हिंसे अञ्जं वा पन कञ्चित्त,
 पप्पुय्य परमं सन्ति रक्खेय्य तमथावरे ॥८७६॥
 उदकं हि नयन्ति नेत्तिका, उमुकारा नमयान्ति तेजनं,
 दारुं नमयन्ति तच्छका, अत्तान दमयन्ति पण्डिता ॥८७७॥
 दण्डेनेके दमयन्ति अङ्गकुसेहि कसाहि च;
 अदण्डेन असत्थेन अहं दन्तो'मिह तादिना ॥८७८॥
 अहिंसको'ति मे नामं हिंसकस्स पुरे सतो
 अज्जाहं सच्चनामो'मिह न नं हिसामि कञ्चित्त ॥८७९॥

चोरो अहं पुरे आसिं अङ्गुलिमालो 'ति विस्सुतो;
 उय्हमानो महोघेन बुद्धं सरणमागम ॥८८०॥
 लोहितपाणि पुरे आसिं अङ्गुलिमालो'ति विस्सुतो;
 सरणागमनं पस्स; भवनेति समूहता ॥८८१॥
 तादिसं कम्मं कत्तवान् बहुं दुग्गतिगामिनं
 फुट्ठो कम्मविपाकेन अनणो भुञ्जामि भोजनं ॥८८२॥
 पमादमनुयुञ्जन्ति बाला दुस्सेधिनो जना,
 अप्पमादञ्च मेघावी धनं सेट्ठं व रक्खति ॥८८३॥
 मा पमादमनुयुञ्जेय मा कामरतिसन्धवं,
 अप्पमत्तो हि ज्ञायन्तो पप्पोति परमं सुखं ॥८८४॥
 स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम;
 सम्बिभत्तेसु धम्मेसु यं सेट्ठं तदुपागमं ॥८८५॥
 स्वागतं नापगतं नेतं दुम्मन्तितं मम;
 तिस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कतं बुद्धस्स सासनं ॥८८६॥
 अरञ्जो रक्खमूले वा पब्बतेसु गुहासु वा
 तत्थ तत्थेव अट्ठासि उब्बिग्गमनसो तदा ॥८८७॥
 सुखं सयामि ठायामि सुखं कप्पेमि जीवितं
 अहत्यपासो मारस्स; अहो सत्थानुकम्पितो ॥८८८॥
 ब्रह्मजच्चो पुरे आसिं, उदिच्चो उभतो अहुं,
 सो'ज्ज पुत्तो सुगतस्स धम्मराजस्स सत्थुनो ॥८८९॥
 वीततण्हो अनादानो गुत्तद्वारो सुसंवुतो;
 अधमूलं वमित्वान् पत्तो मे आसवक्खयो ॥८९०॥
 परिचिण्णो मया सत्था, कतं बुद्धस्स सासनं,
 ओहितो गरुको भारो, भवनेति समूहता'ति ॥८९१॥

अङ्गुलिमालो थेरो

पहाय माता पितरो भगिनीजातिभातरो
 पञ्च कामगुणं हित्वा अनुद्वो'व ज्ञायति ॥८९२॥
 समेतो नच्चगीतेहि सम्मताळप्पबोधनो
 न तेन सुद्धिमज्झगमा मारस्स विसये रतो ॥८९३॥
 एतञ्च समत्तिकम्म रतो बुद्धस्स सासने
 सम्बोधं समत्तिकम्म अनुद्वो'व ज्ञायति ॥८९४॥

रूपा सदा रसा गन्धा फोटुब्बा च मनोरमा
 एते च समतिक्कम्म अनुरुद्धो व ज्ञायति ॥८९५॥
 पिण्डपातपटिक्कन्तो एको अदुतियो मुनि
 एसति पंसुकूलानि अनुरुद्धो अनामवो ॥८९६॥
 विचिनि अग्गही घोवि रजयी धारयी मुनि
 पंसुकूलानि मतिमा अनुरुद्धो अनासवो ॥८९७॥
 महिच्छो च असत्तुद्धो संमट्ठो यो च उद्धतो,
 तस्स धम्मा इमे होन्ति पापका मङ्कलिसिका ॥८९८॥
 सतो च होति अपिच्छो मत्तुद्धो आविघानवा
 पविक्कगतो वित्तो निच्चमारद्वयीरियो ॥८९९॥
 तस्म धम्मा इमे होन्ति कुमला बोधियपक्खिका
 अनामवो च सो होति, इति वृत्तं महेश्वराना ॥९००॥
 मम सकप्पमञ्जाय सत्था लोके अनुत्तरे
 मनोमयेन कायेन इद्धिया उपसकमि ॥९०१॥
 यदा मे अहु सकप्पो ततो उत्तरि देसयि,
 निप्पपञ्चरतो बुद्धो निप्पपञ्चमदेसयि ॥९०२॥
 तस्साहं धम्ममञ्जाय विहासि मासने गतो,
 तस्सो विज्जा अनुप्पत्ता कत बुद्धस्स सामन ॥९०३॥
 पञ्चपञ्चासवस्सानि यतो नैसज्जको अहं,
 पञ्च बीसति वस्सानि यतो मिद्धं समूहतं ॥९०४॥
 नाहु अस्सासपस्सासो ठितचित्तस्म नादिनो;
 अनेजो सन्तिमारब्भ चक्कुमा परिनिब्बुतो ॥९०५॥
 असल्लीनेन चित्तेन वेदन अज्झवासयि;
 पज्जोतस्सेव निब्बान विमोक्खो चेतसो अहं ॥९०६॥
 एते पच्छिमका दानि मुनिनो फस्सपञ्चमा
 नाञ्जो धम्मा भविस्सन्ति सम्बुद्धे परिनिब्बुते ॥९०७॥
 नत्थि दानि पुनावासो देवकायस्मि जालिनि;
 विक्खीणो जातिसंसारो, नत्थि दानि पुनब्भवो ॥९०८॥
 यस्स मुहुत्तं सहस्सदा लोको सविदितो, स ब्रह्मकप्पो
 वसि इद्धिगुणे चुत्तपपाते काले पस्सति देवता स भिक्खु ॥९०९॥
 अन्नमारो पुरे आसि दळ्ढिदो धासहारको,
 समणं पटिपादेसि उपरिट्ठं यस्सिस्सि ॥९१०॥

सो'मिह सक्ककुले जातो अनुरुद्धो'ति मं विद्,
 अपेतो नच्चगीतेहि सम्मताळप्पबोधनो ॥९११॥
 अथदसासि सम्बुद्धं सत्थारं अकुतोभयं,
 तस्मिं चित्तं पसादेत्वा पब्बजि अनगारियं ॥९१२॥
 पुब्बेनिवासं जानामि यत्थ मे उसितं पुरे,
 तावत्तिसेसु देवेषु अट्ठासि सक्कजातिया ॥९१३॥
 सत्तक्खत्तु मनुस्सिन्दो अहं रज्जमकारियं
 चातुरन्तो विजितावी जम्बुसण्डस्स इस्सरो,
 अदण्डेन असत्थेन घम्मेन अनुसासियि ॥९१४॥
 इतो सत्त इतो सत्त संसारानि चतुद्दस
 निवासमभिजानिस्सं देवल्लोके ठितो तदा ॥९१५॥
 पञ्चङ्गिके समाधिमिह सन्ने एकोदिभाविते
 पटिप्पस्सद्विलद्धमिह, दिब्बचक्खुं विमुञ्चि मे ॥९१६॥
 चुत्तूपपातं जानामि सत्तानं आगतिं गतिं
 इत्थभावञ्जाया भाव ज्ञाने पञ्चङ्गिके ठितो ॥९१७॥
 परिचिण्णो मया सत्था—प—समूहता ॥९१८॥
 वज्जीनं वेळुवगमे अहं जीवितसखया
 हेट्ठतो वेळुगुम्भास्मि निब्बायिस्सं अनासवो'ति ॥९२०॥

अनिरुद्धो थरो

समणस्स अहु चिन्ता पुफितमिह महावने
 एकगस्स निसिन्नस्स पविचित्तस्स झायिनो
 अञ्जाया लोकनाथमिह तिट्ठत्ते पुरिसुत्तमे
 इरियं आसि भिक्खूनं, अञ्जाया दानि दिस्सते ॥९२१॥
 सीतवातपरित्तानं हिरिकोपीनछादनं,
 मत्तद्विय अभुञ्जिंसु सन्तुट्ठा इतरीतरे ॥९२२॥
 पणीतं यदि वा लूखं अप्यं वा यदि वा बहुं
 यापनत्थं अभुञ्जिंसु अगिद्धा नाधमुब्बिता ॥९२३॥
 जीवितानं परिकक्षारे भेसज्जे अथ पच्चये
 न बाद्धं उस्सुका आसुं यथा ते आसवक्खये ॥९२४॥
 अरञ्जो रुक्खमूलेसु कन्दरासु गुहासु च
 विवेकमनुब्रूहन्ता विहिस्सु तप्परायना ॥९२५॥

नीचनिविद्धा सुभरा मुद्र अत्यद्वमानसा
 अब्यासेका अमुखरा अत्यचिन्तावसानुगा ॥९२६॥
 ततो पासादिकं आसि गतं भुक्तं निसेवितं
 सिनिद्धा तेलधारा व अहोमि इरियापथो ॥९२७॥
 सन्बासवपरिक्खीणा महासायी महाहिता
 निम्बुता दानि ते धेरा, परित्ता दानि तादिसा ॥९२८॥
 कुसलानञ्च धम्मानं पञ्जाय च परिक्खया
 सन्बाकारवरूपेत लुज्जते जिनसासनं ॥९२९॥
 पापकानञ्च धम्मानं किलेसानञ्चयो उतु
 उपट्ठिताविवेकाय ये च सद्धम्मसेसका ॥९३०॥
 ते किलेसा पवड्ढन्ता आविसन्ति बहं जन,
 कीळन्ति मञ्जे बालेहि उम्मत्तेहि व रक्खसा ॥९३१॥
 किलेसेहाभिभूता ते तेन तेन विधाविता
 नरा किलेसवत्थुसु सयगाहे व घोमिते ॥९३२॥
 परिच्चजित्वा सद्धम्मं अञ्जामञ्जोहि भण्डरे,
 दिट्ठि गतानि अन्वेन्ता इदं सेय्यो'ति मञ्जरे ॥९३३॥
 घनञ्च पुत्तं भरियञ्च छड्डु यित्वान निग्गता
 कटच्छ्रभिक्षहेतु पि अकिच्चानि निसेवरे ॥९३४॥
 उदरावदेहकं भुत्वा सयन्तनुत्तानसेय्यका,
 कथा वदेन्ति पटिबुद्धा या कथा सत्थु गरहिता ॥९३५॥
 सन्बकारुक् सिप्पानि चित्ति कत्तवान सिक्खरे,
 अबूपसन्ता अज्झत्तं सामञ्जस्यो'ति अच्छति ॥९३६॥
 मत्तिकं तेलं चुण्णञ्च उदकासनभोजन
 गिहीन उपनामेन्ति आकड्ढखन्ता बहुत्तरं ॥९३७॥
 दन्तपोणं कपिट्टञ्च पुप्फखादनियानि च
 पिण्डपाते च सम्पन्ने अम्बे आमलकानि च ॥९३८॥
 वेसज्जेसु यथा वेज्जा, किच्चाकिच्चे यथा गिही,
 गणिका व विभूसायं, इस्सरे खत्तिया यथा ॥९३९॥
 नेकतिका वञ्चनिका कूटसक्खी अवाटुका
 बहूहि परिकप्पेहि आमिसं परिभुञ्जरे ॥९४०॥
 लेस कप्पे परियाये परिकप्पे'नुधाविता
 जीविकत्था उपायेन संकड्ढन्ति बहं धनं ॥९४१॥

उपट्टपेन्ति परिसं कम्मतो नो च धम्मतो,
 धम्मं परेसं देसेन्ति लाभतो नो च अत्थतो ॥९४२॥
 संघलाभस्स भण्डन्ति सघतो परिवाहिरा,
 परलाभोपजीवन्ता अहिरिका'व न लज्जरे ॥९४३॥
 नानुयुत्ता तथा एके मुण्डा संघाटिपास्ता
 सम्भावनं ये विच्छन्ति लाभसक्कारमुच्छिता ॥९४४॥
 एवं नानप्ययातमिह नि दानि सुकर तथा
 अफुसितं वा फुसितु फुसितं वानुग्विखतु ॥९४५॥
 यथा कण्टकट्टानमिह चरेय्य अनुपाहनो
 सति उपट्टपेत्त्वान, एवं गाभे मूनी चरे ॥९४६॥
 सरित्वा पुब्बके योगी तेसं वत्तमनुस्सरं
 किञ्चापि पच्छिमो कालो फुसेय्य अमतं पद ॥९४७॥
 इदं वत्वा सालवने समणो भावितिन्द्रियो ॥९४८॥
 ब्राह्मणो परिनिब्बायि इसि खीणपुनग्भवो'ति

पारापरियो थेरो

उद्दानं

अधिमुत्तो पारापरियो तेलकानि रट्टपालो
 मालुङ्कय सेलो भट्टियो अङ्गुलि दिब्बचक्खुको
 पारापरियो दसेते विसमिह सुपरिकत्तिता,
 गाथायो द्वेसता होन्ति पञ्चतालीस उत्तरिन्ति

वीसतिनिपातो निट्ठतो

तिसनिपातो

पासादिके बहू दिस्वा भावितत्ते सुसंयुते
 इसि पण्डरसोगोतो अपुच्छि फुस्समव्हयं. ॥९४९॥
 किञ्छन्ता किमधिप्पाय किमाकप्पा भविस्सरे
 अनागतमिह कालमिह तं मे अक्खाहि पुच्छितो ॥९५०॥
 सुणोहि वचनं मय्हं इसि पण्डरसव्हयं,
 सक्कच्च उपधारेहि, आचिक्खिस्साम्यनागतं ॥९५१॥
 कोधना उपनाही च भक्खी थम्भी सठा बहू
 इस्सुकी नानावादा च भविस्सन्ति अनागते ॥९५२॥
 अज्जातमानिनो धम्मे गम्भीरे तीरणोच्चरा
 लहुका अगह धम्मे अज्जमज्जमगारवा ॥९५३॥
 बाहू आदीनवा लोके उप्पज्जिअसन्ति' नागते;
 सुदेसित इमं धम्मकिलिसिस्सन्ति दुम्मती ॥९५४॥
 गुणहीनापि सघमिह वोहरन्ति विसारदा
 चलवन्तो भविस्सन्ति भुल्लरा अस्सुतादिनो ॥९५५॥
 गुणवन्तो पि सघमिह ओरहरन्ता ययत्थतो
 दुब्बला ते भविस्सन्ति हिरिमता अनत्थिका ॥९५६॥
 रजतं जातरूपञ्च खेत्तं वथुं अजेळकं
 दासीदासञ्च दुम्मेधा सादियिस्सन्ति' नागते ॥९५७॥
 उज्झानसज्जनो बाला सीलेसु असमाहिता
 उन्नटा विचरिस्सन्ति कलहाभिरता मगा ॥९५८॥
 उद्धता च भविस्सन्ति नीलचीवरपाठना;
 कुहा थद्धा लपा सिद्धगी चरिस्सन्त्यरिया विय ॥९५९॥
 तेलसहेहि केसेहि चपला अज्जनक्खिका
 रथियाय गम्मिस्सन्ति दन्तवण्णकपाठना ॥९६०॥

अजेगुच्छं विमुतेहि सुरतं अरहद्वजं
 जिगुच्छिस्सन्ति कासावं ओदातेसु समुच्छिता ॥९६१॥
 लाभकामा भविस्सन्ति कुसीला हीनवीरिया,
 किच्छन्ता वनपतानि गामन्तेसु वसिस्सरे ॥९६२॥
 ये ये लाभं लभिस्सन्ति मिच्छाजीवरतां सदा,
 ते ते च अन्सिक्खन्ता भजिस्सन्ति असंयता ॥९६३॥
 ये ये अलाभिनो लाभं, न ते पुज्जा भविस्सरे,
 सुपेसले पि ते धीरे सेविस्सन्ति न ते तदा ॥९६४॥
 मिलक्खुरजनं रतं गरहन्ता सकं धजं
 तित्थियानं घज केचि घारेसन्त्यवदातकं ॥९६५॥
 अगारवो च कासावे तदा तेस भविस्सन्ति
 पटिसंखा च कासावे भिक्खून् न भविस्सन्ति ॥९६६॥
 अभिभूतस्स दुक्खेन सल्लविद्धस्स रूपतो
 पटिसंखा महाघोरा नागस्सासि अचिन्तिया ॥९६७॥
 छद्दन्तो हि तदा दिस्वा सुरतं अरहद्वजं
 तावदेव भणी गाथा गजो अत्थोपसंहिता ॥९६८॥
 अनिककसावो कासावं यो वत्थं परिदहिस्सन्ति
 अपेतो दमसच्चेन, न सो कासावमरहति ॥९६९॥
 यो च वन्तकसावस्स सीलेसु सुसमाहितो
 उपेतो दमसच्चेन, स वे कासावमरहति ॥९७०॥
 विपन्नसीलो दुम्मेघो पाकटो कामकारियो
 विम्भन्तचित्तो निस्सुक्को, न सो कासावमरहति ॥९७१॥
 यो च सीलेन सम्पन्नो वीतरागो समाहितो
 ओदातमनसंकप्पो स वे कासावमरहति ॥९७२॥
 उद्धतो उन्नटो वालो सीलं यस्स न विज्जति,
 ओदातकं अरहति, कासावं किं करिस्सन्ति ॥९७३॥
 भिक्खू च भिक्खुनियो च दुट्ठचित्ता अनादरा
 तादीनं भेत्तचित्तानं निग्गण्हिस्सन्ति'नागते ॥९७४॥
 सिक्खापेन्तापि धेरेहि वाला चीवरधारणं
 न सुणिस्सन्ति दुम्मेघा पाकटा कामकारिया ॥९७५॥
 ते तथा सिक्खिता बाला अञ्जमञ्जं अगारवा
 नादियिस्सन्तुपज्जाथे खलुद्धको विय सारथि ॥९७६॥

एवं अनागतद्धानं पटिपत्तिं भविस्सति
 भिक्खून् भिक्खुनीनञ्च पत्ते कालम्हि पच्छिमे ॥९७७॥
 पुरा आगच्छते एतं अनागतं महब्भयं
 सुब्बचा होथ सखिला अञ्जामञ्जं सगारवा ॥९७८॥
 भेत्ताचित्ता कारुणिका होथ सीले सुसंवुता
 आरद्धविरिया पहितत्ता निच्चं दाळ्हपरक्कमा ॥९७९॥
 पमादं भयतो दिस्वा अप्पमादञ्च खेमतो
 भावेथट्ठु छिगकं मग्गं फुस्सन्ति अमतं पदन्ति ॥९८०॥

फुस्सत्थेरो

यथाचारी यथासतो सतिमा यथा
 संकप्प चरियाय अप्पमतो
 अञ्जत्तरतो सुसमाहिततो एको सन्तुमितो,
 तमाहु भिक्खुं ॥९८१॥
 अलं सुक्खंञ्च भुञ्जन्तो न वाळ्ह मुहितो सिया,
 उनूदरो मिताहारो सतो भिक्खु परिब्बजे ॥९८२॥
 चत्तारो पञ्च आलोपे अभुत्वा उदकं पिबे,
 अलं फासुविहाराय पहितत्तस्स भिक्खुनो ॥९८३॥
 कप्पियतञ्च आदेति चीवर इदमत्थिकं,
 अलं फासुविहाराय पहितत्तस्स भिक्खुनो ॥९८४॥
 पल्लङ्केन निमिघस्स जण्णुके नाभिवस्सति,
 अलं ॥९८५॥
 यो सुखं दुक्खतो अद्दु, दुक्खं अट्ठक्खि सल्लतो,
 उभयन्तरेन नाहोसि, केन लोकस्मिं किं मिया ॥९८६॥
 मा मे कदाचि पापिच्छो कुसीतो हीनवीरियो
 अप्पस्सुतो अनादरो, केन लोकस्मिं किं मिया ॥९८७॥
 बहुस्सुतो च मेघावी सीलेसु सुसमाहितो
 चेतो समथमनुयुत्तो अपि मुद्धनि तिट्ठतु ॥९८८॥
 यो पपञ्चमनुयुत्तो पपञ्चाभिरतो मगो,
 विगघयी च सो निब्बानं योगक्खेमं अनुत्तर ॥९८९॥
 यो च पपञ्च हित्वान निप्पपञ्चपथे रतो,
 आराधयी सो निब्बानं योगक्खेमं अनुत्तरं ॥९९०॥

गामे वा यदि धा'रञ्जो निम्ने वा यदि वा थले,
 यत्थ अरहन्तो विहरन्ति तं भूमि रामण्य्यक ॥१९१॥
 रमणीया अरञ्जानि, यत्थ न रमती जनो,
 बीतरागा रमिस्सन्ति न ते कामगवेसिनो ॥१९२॥
 निधीनं व पवत्तारं यं पस्से वज्जदस्सिनं
 निग्गयूह्वादिं मेधावि, तादिसं पण्डितं भज्जे;
 तादिसं भजमानस्स सेय्यो होति न पाप्पियो ॥१९३॥
 ओवदेय्यानुसासेय्य असब्भा च निवारये,
 सत्तं हि सो पियो होति असत्तं होति अप्पियो ॥१९४॥
 अञ्जस्स भगवा बुद्धो धम्मं देसेसि चक्खुमा,
 धम्मे देसियमानमिह सोतमोघेसिमत्थिको ॥१९५॥
 तम्ममे अमोघं सवन्नं, विमुत्तो'मिह अनासवो
 नेव पुब्बेनिवासाय न पि दिब्बस्स चक्खुतो ॥१९६॥
 चेतोपरियायइद्धिया चुतिया उपपत्तिया
 सोतधातुविमुद्धिया पणिधि मे न विज्जति ॥१९७॥
 रुक्खमूलं व निस्साय मुण्डो सघाटिपारुतो
 पञ्जाय उत्तमो थेरो उपतिस्सो'व ज्ञायति ॥१९८॥
 अवितक्कं समापन्नो सम्मासम्बुद्धसावको
 अरियेन तुण्हिभावेन उपेतो होति तावदे ॥१९९॥
 यथापि पब्बतो सेलो अचलो मुपतिट्ठितो,
 एवं मोहक्खया भिक्खु पब्बतोव न वेधति ॥२००॥
 अनङ्गणस्स पोसस्स निच्चं मुच्चिगवेसिनो
 वालगमत्तं पापस्स अब्भामत्तं व खायति ॥२०१॥
 नाभिनन्दामि मरणं नाभिनन्दामि जीवितं,
 निक्खिप्पिस्मं इमं कायं सम्पजानो पतिस्सतो ॥२०२॥
 —प—निब्बिसं भतको यथा ॥२०३॥
 उभयेन मिदं मरणं एव नामरण पच्छा वा पुरे वा;
 पटिपज्जथ मा विनस्सथ, खणो वे मा उपच्चगा ॥२०४॥
 नगरं यथा पच्चत्तं गुत्तं सन्तरवहिरं
 एव गोपेथ अत्तानं, खणो वे मा उपच्चगा,
 खणातीता हि सोचन्ति नरयमिह समप्पिता ॥२०५॥

उपसन्तो उपरतो मन्तभाणी अनुद्धतो
 धुनाति पापके धम्मे दुमपत्तं व मालुतो ॥१००६॥
 उपसन्तो—प—
 अब्बहि पापके धम्मे दुमपत्तं व मालुतो ॥१००७॥
 उपसन्तो अनायासो विप्पसन्नमनाविलो
 कल्याणसीलो मेघावी दुक्खस्सन्तकरो सिया ॥१००८॥
 न विस्ससे एकतियेमु एवं अगारिमु पब्बजितेमु चापि;
 साधु पि हुत्वान असाधु होन्ति,
 असाधु हुत्वा पुन साधु होन्ति ॥१००९॥
 कामच्छन्दो च व्यापादो र्थानमिद्वञ्च भिक्खुतो
 उद्वञ्चं विचिकिच्छा च पञ्च ते चित्तकेलिसा ॥१०१०॥
 यस्म सक्करियमानस्म असक्कारेन चूभयं
 समाधि न विकम्पति अप्पमादविहारिनो ॥१०११॥
 तं ज्ञायितं साततिकं सुखुमदिट्ठिविपस्सकं
 उपादानक्खयारामं आहू सप्पुरिसो इति ॥१०१२॥
 महासमुद्दो पथवी पब्बतो अनिलो पि च
 उपमाय न युज्जन्ति सत्थु वरविमुत्तिया ॥१०१३॥
 चक्कानुवत्तको थेरो महाज्जाणी समाहितो
 पथवापग्गि समानो न रज्जति न दुस्सति ॥१०१४॥
 पञ्जापारमितं पत्तो महाबुद्धि महामुनि
 अजळो जळसमानो सदा चरति निब्बुतो ॥१०१५॥
 परिचिण्णो मया सत्था —प— ॥१०१६॥
 सम्पादेथप्पमादेन, एसा मे अनुसासनी;
 हन्दाह परिनिब्बिस्स, विण्णमुत्तो'मिह सब्बधीति ॥१०१७॥

सारिपुत्तो थेरो

पिसुनेन च कोधनेन मच्छरिता च विभूतिनन्दिना
 सखितं न करेय्य पण्डितो; पापो कापुरिसेन संगमो ॥१०१८॥
 सद्धेन च पेसलेन च पञ्जावता बहुस्सुतेन च
 सखितं हि करेय्य पण्डितो; भद्दो सप्पुरिसेन संगमो ॥१०१९॥
 पस्स चित्तकतं बिम्बं—प—॥१०२०॥

बहुस्सुतो चित्तकथी बुद्धस्स प्ररिचारको
 पन्नभारो विञ्जुतो सेय्यं कप्पेति गोतमो ॥१०२१॥
 खीणासवो विसञ्जुतो सङ्गातीतो सुनिब्बुतो
 धारेति अन्तिमं देहं जातिमरणपाण्डु ॥१०२२॥
 यस्मि पतिट्ठिता धम्मा बुद्धस्सादिच्चबन्धुनो
 निब्बानगमने मग्गे सो'यं तिट्ठति गोतमो ॥१०२३॥
 द्वासीति बुद्धतो गण्हि द्वे सहस्सानि भिक्खुतो
 चतुरासीति सहस्सानि ये'मे धम्मा पवर्त्तनो ॥१०२४॥
 अप्सुतो'यं पुरिसो बलिबद्धो व जीरति '
 मंसानि तस्स बड्ढन्ति, पञ्जा तस्स न वड्ढति ॥१०२५॥
 बहुस्सुतो अप्सुतं यो सुतेनाति मञ्जाति,
 अन्धो पदीपधारो व तथेव पटिभाति मं ॥१०२६॥
 बहुस्सुतं उपासेय्य सुतञ्चन विनासये;
 तं मूलं ब्रह्मचरियस्स;
 तस्मा धम्मधरो सिया ॥१०२७॥
 पुब्बापरञ्जु अत्थञ्जु निरुत्तिपदकोविदो
 सुग्गहीतञ्च गण्हाति अत्थञ्जोपपरिक्खति ॥१०२८॥
 खन्त्या छन्दिकतो होति, उस्सहित्वा तुलेति त,
 समये सो पदहति अज्झतं सुसमाहितो ॥१०२९॥
 बहुस्सुतं धम्मधरं सप्पञ्जं बुद्धसावकं
 धम्मविज्जाणमाकङ्ख तं भजथ तथाविध ॥१०३०॥
 बहुस्सुतो धम्मधरो कोसारक्खो महेमिनो
 चक्खु सब्बस्स लोकस्स पूजनेय्यो बहुस्सुतो ॥१०३१॥
 धम्मारामो धम्मरतो धम्मं अनुविचिन्तयं
 धम्मं अनुस्सरं भिक्खु सद्धम्मा न परिहायति ॥१०३२॥
 कायमच्छेरगणो हिद्यमाने अनुदुहे
 सरीरमुत्तगिद्धस्स कुतो समणफामुता ॥१०३३॥
 न यक्खन्ति दिसा सब्बा, धम्मा न पटिभन्ति मं
 गते कल्याणमिन्तम्हि अन्धकारं व खायति ॥१०३४॥
 अब्भतीतसहायस्स अतीतगतसत्थुनो
 नत्थि एतादिसं मितं यथा कायगता सति ॥१०३५॥

ये पुराणा अतीता ते, नवेहि न समेति मे,
 स्वज्ज एञ्चो व ज्ञायामि वस्सुपेतोव पक्खिमा ॥१०३६॥
 दस्सनाय अतिककन्ते नानावेरज्जके बहू
 मा वारयित्थ सोतारो, पस्सन्तु समयो ममं ॥१०३७॥
 दस्सनाय अतिककन्ते नाना वेरज्जके पुथू
 करोति सत्था ओकासं न निवारेल्लि चक्खुमा ॥१०३८॥
 पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स मे सतो
 न कामसञ्जा उपपज्जि, पस्स धम्मसुधम्मत्तं ॥१०३९॥
 पण्णवीसति वस्सानि सेखभूतस्स से सतो
 न दोससञ्जा उपपज्जि, पस्स धम्मसुधम्मत्तं ॥१०४०॥
 पण्णवीसति वस्सानि भगवन्तं उपट्ठाहि
 मेत्तेन कायकम्मेन—मेत्तेन वचिकम्मेन—मे—
 त्तेन मनोकम्मेन छाया व अनपाधिनी ॥१०४१॥
 बुद्धस्स चङ्गकमन्तस्स पिट्ठि तो अनुचङ्गकमिं, १०४३॥
 धम्मे देसियमानमिह ज्ञाणं मे उदपज्जथ ॥१०४४॥
 अहं सकरणीयोमिह सेखो अप्पत्तमानसो,
 सत्थु च परिनिब्बानं यो अमहं अनुकम्पको ॥१०४५॥
 तदासियं भिसनकं, तदासि लोमहंसनं
 सन्नाकारवरूपेते सम्बुद्धे परिनिब्बुते ॥१०४६॥
 बहुस्सुतो धम्मधरो कोसारक्खो महेसिनो
 चक्खु सब्बस्स लोकस्स आनन्दो परिनिब्बुतो ॥१०४७॥
 बहुस्सुतो धम्मधरो—प—अन्धकारे तमोनुदो,
 गतिमन्तो सतीमन्तो धितिमन्तो च यो इसि ॥१०४८॥
 सद्धम्माधारको धेरो आनन्दो रतनाकरो ॥१०४९॥
 परिचिण्णो मया सत्था—प—॥१०५०॥

आनन्दो धेरो

उद्दानं

फुस्सो उपतिस्सो आनन्दो तयो'ति मे पक्कित्ता;
 गाथायो तत्थं संखाता सतं पञ्च च उत्तरीति.

तिसनिपातो निवृत्तो

चत्तालीसनिपातो

न गणेन पुरस्सतो चरे, विमनो होति, समाधि दुल्लभो;
 नानाजनसगहो दुक्खो इति दिस्वान गणं न रोचये ॥१०५१॥
 न कुलानि उपब्बजे मुनि, विमनो होति, समाधि दुल्लभो;
 सो उस्सुको रसानुगिद्धो अत्थं रिञ्चति यो सुखावहो ॥१०५२॥
 पड्ढको 'ति हि जं अवेदयुं यायं वन्दनपूजना कुलेसु,
 सुखुम सल्लं दुरुब्बहं, सक्कारो कापुरिसंन दुज्जहो ॥१०५३॥
 सेनासनम्हा ओरुय्ह नगरं पिण्डाय पाविमिं,
 भुज्जन्तं पुरिसं कुट्ठिं सक्कच्चं तं उपट्ठहि ॥१०५४॥
 सो तं पक्केन हत्थेन आलोपं उपनामयिं;
 आलोपं पक्खिपन्तस्स अङ्गुली पेत्य छिज्जथ ॥१०५५॥
 कुड्ढमूलञ्च निस्साय आलोपन्त अभुज्जिम,
 भुज्जमाने च भत्ते वा जंगुच्छं मे न विज्जति ॥१०५६॥
 उत्तिट्ठपिण्डो आहारो पूतिमत्तञ्च ओसध
 सेनासनं रुक्खमूलं पमकूलञ्च चीवरं :
 यस्सेते अभिसम्भुत्वा स वे चातुदिस्सो नरो ॥१०५७॥
 यत्थ एके विहज्जन्ति अरुहन्तो मिलुच्चयं
 तस्स बुद्धस्स दायादो सम्पजानो पतिस्सतो
 इद्धिबलेनुपत्थद्धो कस्सपो अभिरूहति ॥१०५८॥
 पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुय्ह कस्सपो
 ज्ञायति अनपादानो पहीनभयभेरवो ॥१०५९॥
 पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुय्ह कस्सपो
 ज्ञायति अनपादानो डय्हमानेसु निव्वुत्तो ॥१०६०॥
 पिण्डपातपटिक्कन्तो सेलमारुय्ह कस्सपो
 ज्ञायति अनपादानो कतकिच्चो अनासवो ॥१०६१॥

करेरिमालावितता भूमिभागा मनोरमा
कुञ्जराभिरुद्धा रम्मा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६२॥
नीलम्भवण्णा रुचिरा वारिसीता मुञ्चिवरा
इन्दगोपकसञ्छन्ना ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६३॥
नीलम्भकूटसदिमा कूटागारवरूपमा
वारणाभिरुद्धा रम्मा ते सेला रमयन्ति म ॥१०६४॥
अभिवुद्धा रम्मतला नगा इसिभि सेविता
अम्भुधदिता सिखीहि ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६५॥
अलं ज्ञायितुकामस्स पहितत्तस्स मे सनो,
अलं मे अत्पकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनो; ॥१०६६॥
अल मे फासुकामस्स पहितत्तस्स भिक्खुनो;
अल मे योगकामस्स पहितत्तस्स तादिनो ॥१०६७॥
उम्मापुप्फवसमाना गगना वम्भछादिता
नाना दिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६८॥
अनाकिण्णा गहट्ठेहि मिगमंघनिसेविता
नानादिजगणाकिण्णा ते सेला रमयन्ति मं ॥१०६९॥
अच्छोदिका (—११३, ६०१) ॥१०७०॥
न पञ्चङ्गिकेन तुरियेन रति मे होति तादिसी
यथा एकगचित्तस्स सम्मा धम्म विपस्सतो ॥१०७१॥
कम्मं बहुक (=४९४) ॥१०७२॥
कम्मं बहुक न कारये, परिवज्जेय्य अनत्थनेव्यमेतं
किञ्छति कायो किलमति, दुक्खितो सो समथ न विन्दति ॥१०७३॥
ओट्टुपहतमत्तेन अत्तानं पि न पस्सति,
पत्थद्वगीवो चरति, अहं सेय्यो 'ति मञ्ज्जति ॥१०७४॥
असेय्यो सेय्यसमानं बालो मञ्ज्जति अत्तानं,
न तं विञ्ज्जू पसंसन्ति पत्थद्वमनसं नरं ॥१०७५॥
यो च सेय्यो 'हं अस्मीति, नाहं सेय्यो 'ति वा पुन,
हीनो 'हं सदिसो वा 'ति विघासु न विकम्पति ॥१०७६॥
पञ्जवन्तं तथावादि सीलेसु सुसमाहितं
चेतो समथसंयुतं तञ्च विञ्ज्जू पसंसरे ॥१०७७॥
यस्स सन्नह्यचारीसु गारवो नूपलम्भति,
आरका होति सद्धम्मा नभसो पुथवी यथा ॥१०७८॥

येसञ्च हिरिओत्तप्यं सदा सम्मा उपट्ठितं,
 विशुद्धब्रह्मचरिया, तेसं खीणा पुनग्भवन् ॥१०७९॥
 उद्धतो चपलो भिक्षु पंसुकूलेन पाख्तो
 कपि व सीहचम्मेन न सो तेनुपसोभति ॥१०८०॥
 अनुद्धतो अचपलो निपको संवुत्तिन्द्रियो
 सोभति पंसुकूलेन सीहो व गिरिगम्भरे ॥१०८१॥
 एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्सिनो
 दस देवसहस्सानि सब्बे ते ब्रह्मकायिका ॥१०८२॥
 धम्मसेनार्पति धीरं महाज्ञायि समाहितं
 सारिपुत्तं नमस्सन्ता तिट्ठन्ती पञ्जलीकता ॥१०८३॥
 नमो ते पुरिस्साजञ्जा, नमो ते पुरिसुत्तम,
 यस्स ते नाभिजानाम य पि निस्साय ज्ञायति ॥१०८४॥
 अच्छेरं वत बुद्धानं गम्भीरो गोचरो सको,
 ये मयं नाभिजानाम बालवेधो समागता ॥१०८५॥
 तं तथा देवकायेहि पूजितं पूजनारहं
 सारिपुत्तं तदा दिस्वा कप्पिनस्स सितं अहू ॥१०८६॥
 यावता बुद्धस्सेतम्हि ठापयित्वा महामुनिं
 घुतगणे विसिट्ठो 'हं सदिसो मे न विज्जति ॥१०८७॥
 परिबिण्णो मया सत्था—प— ॥१०८८॥
 न चोवरे न सयने भोजने नुपलिप्पति
 गोतमो अनप्पमेय्यो मुळालिपुप्फं विमलं
 व अम्बुना निक्खम्मनिञ्जो तिभवाभिनिस्सटो ॥१०८९॥
 सतिपट्ठानगीवो सो सद्धाहत्थो महामुनिं
 पञ्चासीसो महाआणी सदा चरति निब्बुतो 'ति ॥१०९०॥

महाकस्सपो थेरो

उद्दानं

चत्तालीस निपातम्हि महाकस्सपसब्बयो
 एको 'व थेरो, गाथायो चत्तालीस दुवे 'पि चा 'ति
 चत्तालीसनिपातो निहितो

पञ्चासनिपातो

कदा नु 'हं' पञ्चतकन्दरासु एकाकियो अद्भुतियो विहस्सं
 अनिच्चतो सब्बभवं विपस्सं, तं मे इदं तं नु कदा भविस्सति ॥१०९१॥
 कदा नु 'हं' भिन्नपटन्धरो मुनि कासाववत्थो अममो निरासयो
 रागञ्च दोसञ्च तथेव मोहं हत्त्वा सुखी पवनगतो विहस्सं ॥१०९२॥
 कदा अनिच्चं वधरोगनीलं कायं इमं मच्चुजरायुपद्दुतं
 विपस्समानो वीतभयो विहस्सं एको वने तं नु कदा भविस्सति ॥१०९३॥
 कदा नु 'हं' भयजनानि दुक्खावहं तण्हालतं बहुविधानुवर्त्तानि
 पञ्चामयं तिक्खिणमांसं गहेत्वा छेत्वा वसे, तम्पि कदा भविस्सति ॥१०९४॥
 कदा नु पञ्चामयमुग्गतेजं सत्तं इसीनं सहसादियित्वा
 मारं ससेनं सहसा भञ्जिस्सं सीहासने, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९५॥
 कदा नु 'हं' सन्नि समागमेसु दिट्ठो भवे घम्मगरूहि तादिहि
 यथा वदस्सीहि जितिन्द्रियेहि
 पघानियो तं नु कदा भविस्सति ॥१०९६॥
 कदा न मं तन्दिखुदापिपासा वातातपा कीटसिरिसपा वा
 निबाधयिस्सन्ति न तं गिरिब्वजे अत्तत्थियं, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९७॥
 कदा नु खो यं विदितं महेसिना चत्तारि सच्चानि सुदुदस्सानि
 समाहिततो सतिमा अगच्छं पञ्चाय तं, तं नु कदा भविस्सति ॥१०९८॥
 कदा नु रूपे अमिते च सद्दे गन्धे रसे फुसितब्बे च घम्मे
 आदित्ततो 'हं' समयेहि युत्तो पञ्चाय दुक्खं, तदिदं कदा मे ॥१०९९॥
 कदा नु 'हं' दुब्बचनेन वुत्तो ततो निमित्तं विमनो न हेस्सं,
 अथो पसट्ठो पि ततो निमित्तं तुट्ठो न हेस्सं, तदिदं कदा मे ॥११००॥
 कदा नु कट्ठे च तिणे लता च खन्धे इमे 'हं' अमिते च घम्मे
 अज्झत्तिकानेव च बाहिरानि च समं तुलेय्यं तदिदं कदा मे ॥११०१॥
 कदा नु मं पावुसकालमेधो नवेन तोयेन सचीवरं वने
 इसिप्पयातम्हि पथे वजन्तं आवस्सते, तं नु कदा भविस्सति ॥११०२॥

कदा भयूरस्स सिखण्डिनो वने दिजस्स सुत्वा गिरिगम्भरे हतं
 पच्चुट्ठहित्वा अमतस्स पट्टिया संचिन्तये, तं नु कदा भविस्सति ॥११०३॥
 कदा नु गङ्गां यमुनं सरस्सति पातालखितं बळवामुखञ्च
 असज्जमानो पतरेय्यमिद्धिया विभिसनं, तं नु कदा भविस्सति ॥११०४॥
 कदा नु नागो व संगमचारी पदालये कामगुणेषु छन्दं
 निब्बज्जयं सब्बसुभं निमित्तं ज्ञाने युतो, तं नु कदा भविस्सति ॥११०५॥
 कदा इण्ढो व दळिह्को निभि आराधयित्वा धनिकेहि पीळितो
 तुट्ठो भविस्सं अधिगम्म सासनं महेसिनो, तं नु कदा भविस्सति ॥११०६॥
 बहूनि वस्सानि तयाम्हि याचितो अगारवासेन अल नु ते इदं;
 तं दानि मं पब्बजितं समान किं कारणं चित्तं तुवं न युञ्जसि ॥११०७॥
 ननु अहं चित्तं तयाम्हि याचितो गिरिब्वजे चित्रछदा विहङ्गमा
 महिन्दघोसत्थनिताभिगज्जिनो ते तं रमिस्सन्ति वनम्हि ज्ञायिनं ॥११०८॥
 कुलम्हि मित्ते च पिये च ज्ञातके खिड्डारतिं कामगुणञ्च लोके
 सब्बं पहाय इदमज्झुपागतो, अथो पि त्वं चित्तं न मय्ह नुस्ससि ॥११०९॥
 ममेव एतं नहि तं परेसं, सन्नाहकाले परिदेवितेन किं
 सब्बमिदं चलं इति पेक्खमानो अभिनिकर्त्ताम अमतं पदं जिगीसं ॥१११०॥
 सुवुत्तवादी द्विपदानमुत्तमो महाभिसक्को नरदम्भसारथि
 चित्तं चलं मक्कटसन्निभं इति अवीतरागेन सुदुस्सिवारियं ॥११११॥
 कामाहि चित्रा मधुरा मनोरमा अविदसू यत्थ सिता पुथुज्जना
 ते दुक्खमिच्छन्ति पुनग्भवेसिनो चित्तेन नीता निरये निरंकता ॥१११२॥
 मयूरकोञ्चाभिरुदमिह कानने दीवीहि बग्गेहि पुरक्खतो वसं
 काये अपेक्खं जह मा विराये इतिस्सु मं चित्तपुरे नियुञ्जसि ॥१११३॥
 भावेहि ज्ञानानि च इन्द्रियाणि च बालानि बोज्झङ्गसमाधिभावना
 तिस्सो च विज्जा फुस बुद्धसासने इतिस्सु मं चित्तं पुरे नियुञ्जसि ॥१११४॥
 भावेहि मग्गं अमतस्स पत्तिया निय्यानिकं सब्बदुक्खयोगधं
 अत्थङ्गिकं सब्बकिलेससोधनं इति स्सु... ॥१११५॥
 दुक्खन्ति खन्धे पटिपस्स योनिस्सो, यतो च दुक्खं समुदेति तं जह,
 इधेव दुक्खस्स करोहि अन्तं इति स्सु... ॥१११६॥
 अनिच्छं दुक्खन्ति विपस्स योनिस्सो मुञ्चं अनत्ता 'ति अथं वधन्ति च,
 मनोविचारे उपरुन्धि चेतसो, इति स्सु... ॥१११७॥
 मुण्डो विरूपो अभिसापमागतो कपालहृत्यो 'व कुलेसु भिक्खसु,
 युञ्जस्सु सत्थु वचने महेसिनो, इति स्सु... ॥१११८॥

सुसंवृततो विसिखन्तरं चर कुलेसु कामेसु असङ्गमानसो
 चन्दो यथा दोसिनपुण्णमासिया इति स्मृ...॥१११९॥
 आरञ्जिको होति च पिण्डपातिको, मोसानिको होति च पंसुकूलिको,
 नेसज्जिको होति सदा धुते रतो इति स्मृ...॥११२०॥
 रोपेत्वा हक्खानि यथा फलेसी मूले तरुं छेत्तुं तमेव इच्छसि,
 तथूपमं चित्तं इदं करोसि यं मं अनिच्चांमिह चले नियुञ्जसि ॥११२१॥
 अरूपदूरंगम एकचारि न ते करिस्सं वचनं इदानि 'ह,
 दुक्खा हि कामा कटुका महबभया, निब्बानमेवाभिमनो चरिस्स ॥११२२॥
 नाहं अलक्ख्या अहिराकनाय वा न चित्तं हेतू न च दूरकन्तना
 आजीवहेतू च अहं न निक्खामि, कतो च ते चित्तं पटिस्सवो मया ॥११२३॥
 आर्पिच्छता सप्पुरिमेहि वणिता मक्खप्पहान वूपसमो दुक्खस्स
 इति स्मृ मं चित्तं तदा नियुञ्जसि, इदानि त्व गच्छसि पुब्बचिण्ण ॥११२४॥
 तण्हं अविज्जञ्च पियापियञ्च मुभानि रूपानि सुखा च वेदना
 मनापिया कामगुणा च वन्ता, वन्ते अह आगमितुं न उस्सहे ॥११२५॥
 सब्बत्थ ते चित्तं वचो कतं मया, बहू सु जाति सु न मे 'सि कोपितो
 अज्झत्तसम्भवो कतञ्चुताय ते, दुक्खे चिरं ससरित्तं तया कते ॥११२६॥
 त्वञ्जेव नो चित्तं करोसि ब्राह्मणो त्व खत्तिया राजदिसी करोसि,
 वेस्सा च सुद्धा च भवाम एकदा, देवत्तनं वापि तवेव वाहसा ॥११२७॥
 तवेव हेतु अमुगा भवामसे, त्वमूलकं नेरयिका भवामसे,
 अथो तिरच्छानगतापि एकदा, पेतत्तनं वापि तवेव वाहसा ॥११२८॥
 न नून दुब्धिस्ससि म पुनप्पुनं मुहु मुहु वारणिकं व दस्सहं;
 उम्मत्तकेनेव मया पलोभसि; किञ्चापि ते चित्तं विराधित मया ॥११२९॥
 इदं पुरे..... (=७७) ॥११३०॥
 सत्था च मे लोकमिम अधिदुहि अनिच्चतो अद्भुततो असारतो;
 पक्खन्द म चित्तं जिनस्स सासने, तारेहि ओघा महतो सुदुत्तरा ॥११३१॥
 न ते इदं चित्तं यथा पुराणकं, नाहं अलं तुय्ह वसे निवत्तितुं;
 महेसितो पब्बजितो 'मिह सासने, न मादिसा होन्ति विनासधारिणो ॥११३२॥
 नगा समुद्धा सरिता वसुन्धरा दिसा चतस्सा विदिसा अधोदिसा
 सब्बे अनिच्चा तिभवा उपद्दुता, कुहिं गतो चित्तं सुखं रमस्ससि ॥११३३॥
 धी धी परं किं मम चित्तं काहसि, न ते अलं चित्तं वसानुवत्तको
 न जातु भस्सं दुभतो मुखं छुपे, धिरत्थु पूरं नवसोत्तसन्दनि ॥११३४॥

बराहणेव्यविगाळ्हसेविते पम्भारकूटे पकटे 'व सुन्दरे
 नवम्बुना पावुससित्तकानने तर्हि गुहा गेहगतो रमिस्ससि ॥११३५॥
 सुनीलगीवा सुसिखा सुपेखुणा सुचित्तपत्तच्छदना विहंगमा
 सुमञ्जुघोसत्थ निताभिगज्जिनो ते तं रमिस्सन्ति वनम्हि ज्ञायिनं ॥११३६॥
 उट्ठम्हि देवे चतुरङ्गुले तिणे सम्पुष्फिते मेघनिभम्हि कानने
 नगन्तरे विटपिसमो सयिस्सं, तं मे मुदु होहिंति तूलसन्निभ ॥११३७॥
 तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो; यं लब्भती तेन पि होतु मे अलं;
 तं त करिस्सामि यथा अतन्दितो बिळारभस्तं व यथा सुमद्दितं ॥११३८॥
 तथा तु कस्सामि यथापि इस्सरो, यं लब्भती तेन पि होतु मे अलं
 विरियेन त मय्ह वसानयिस्सं गजं व मत्तं कुसलंङ्कुसगगहो ॥११३९॥
 तथा सुदन्तेन अवट्ठितेन हि हयेन योगाचरियो व उज्जुना
 पहोमि मगं पटिपज्जित् सिव चित्तानुरक्खीहि सदात्तसेवितं ॥११४०॥
 आरम्भणे त बलसा निबन्धिसं नागं व थम्भम्हि दळ्हाय रज्जुया,
 तं मे सु गुत्त सत्तिथा सुभावितं अनिस्मित सब्भवेसु हेहिंसि ॥११४१॥
 पञ्चाया छत्वा विपथानुसारिनं योगेन निगय्ह पथे निवेसिय
 दिस्वा समुदयं विभवञ्च सम्भवं दायदको हेहिंसि अग्गवादिनो ॥११४२॥
 चतुब्बिपल्लासवस अधिट्ठितं गामण्डलं व परिनेसि चित्त म
 ननु सञ्जोजनवन्धनच्छिदं संसेवसे कारुणिक महामुनि ॥११४३॥
 मिगो यथा सेरि सुचित्तकानेन रम्भं गिरि पाविसि अब्भमालिन,
 अनाकुले तत्थ नगे रमिस्ससि, असमयं चित्तपराभविस्ससि ॥११४४॥
 ये तुय्ह छन्देन वसेन वत्तिनो नरा च नारी च अनुभोन्ति यं सुखं,
 अविद्सू मारवसानुवत्तिनो भवाभिनन्दी तव चित्त सेवका 'ति ॥११४५॥

तालपुटो थेरो

उद्दानं

पञ्चासम्हि निपातम्हि एको तालपुटो सुवि,
 गाथायो तत्थ पञ्चास पुन पञ्च च उत्तरी'ति ।

पञ्चासनिपातो समत्तो

सष्टिकनिपातो

आरञ्जका पिण्डपातिका उञ्छापत्तागतेरता
 दालेमु भञ्जुनो सेनं अञ्जत्तं मुसमाहिता ॥११४६॥
 आरञ्जका पिण्डपातिका उञ्छापत्तागतेरता
 धुताम मञ्जुनो सेनं नञ्जगारं व कुञ्जरो ॥११४७॥
 क्खमूलिका सप्ततिका उञ्छापत्तागते रता
 दालेम् मुसमाहिता ॥११४८॥
 क्खमूलिका . . सप्त उञ्छ र
 धुताम कुञ्जरो ॥११४९॥
 अट्टिकङ्कलकृटिके मंसन्हारुणसिम्बिते
 धिरत्थु पूरे दुग्गन्धं परगत्ते ममायमे ॥११५०॥
 गूथभस्ते तच्चोन्नद्धे उरगण्डपिसाचिनि
 नन सोतानि ते काये यानि सन्ददि सब्बदा ॥११५१॥
 तव सरीरं नवसोतं दुग्गन्धं कग्गपरिवन्ध,
 भिक्खुपरिवज्जयेत्ते तं मील्ल्ह व यथा सुचिकामो ॥११५२॥
 एवञ्चे त जनो जञ्जा यथा जानामि तं अहं,
 आरका परिवज्जयेय्य गूथद्वानं व पावुमो ॥११५३॥
 एवमेतं महावीर यथा समण भाससि,
 एत्थचेके विसीदन्ति पङ्ककम्हि व जरग्वो ॥११५४॥
 आकासम्हि हलिदाय यो मञ्जयेथ रजेतवे
 अञ्जोन वारिप रङ्गेत, विधातुदयमेव त ॥११५५॥
 तदा काससमं चित्तं अञ्जत्त मुसमाहित,
 मा पापचित्ते आहरि अग्गिक्खन्धं व पक्खिमा ॥११५६॥
 पस्स चित्तकत्तं बिम्बम्—प—॥११५७॥
 तदासिय भिसत्तकं, तदासि लोमहसत्तं
 अनेकाकारसम्पन्ने सारिपुत्तम्हि निब्बुते ॥११५८॥

अनिच्चा वत संखारा—प—॥११५९॥
 मुखुमं पटिविज्झन्ति वालग्गमुसुना यथा,
 ये पञ्च खन्धे पस्सन्ति परतो न च अत्तनो ॥११६०॥
 ये च पस्सन्ति संखारे परतो न च अत्तनो,
 पच्चव्याधिंसु निपुणं वालग्गं उसुना यथा ॥११६१॥
 सत्तिया विय ओमट्ठो . . (—३९, ४०,) ॥११६२-११६३॥
 चोदितो भावितत्तेन सरीरन्तिमधारिना
 मिगारमातु पासादं पादङ्गुट्ठेन कम्पयि ॥११६४॥
 न यिदं सिधिलमारब्भ न इद अप्पेन धामसा
 निब्बानमधिगन्तव्व सब्बगन्थ पमोचन ॥११६५॥
 अयञ्च दहरो भिक्खु, अयमुत्तमपोरिसो ।
 धारेति अन्तिमं देहं जेत्वा मारं सवाहनं ॥११६६॥
 विवरमनुपतन्ति विज्जुता वेभागस्स च पण्डवस्स च ।
 नग विवरगतो च ज्ञायति पुत्तो अप्पटिमस्स नादिनो ॥११६७॥
 उपसन्तो उपरतो पन्तसेनासनो मुनि ।
 दायादो बुद्धसेट्ठस्स ब्रह्मणा अभिवन्दितो ॥११६८॥
 उपसन्तं उपरतं पन्तसेनासनं मुनि ।
 दायाद बुद्धसेट्ठस्स वन्द ब्राह्मण कस्सप ॥११६९॥
 यो च जातिसत गच्छे सव्वा ब्राह्मणजानियो ।
 मोत्तियो वेदसम्पन्नो मनुस्सेसु पुनप्पुन ॥११७०॥
 अज्झायको पि चं अस्स तिण्णं वेदान पारगू ।
 एतस्स वन्दानायेकं कल नग्घति मोळामि ॥११७१॥
 यो सो अट्ठ विमोक्खानि पूरे भत्त अपस्सयि ।
 अनुलोम पटिलोमं, ततो पिण्डाय गच्छति ॥११७२॥
 तादिस भिक्खु माहरि, मात्तान खणि ब्राह्मण ।
 अभिप्पसादेहि मन अरहन्तस्मिह तादिने ।
 खिण्णं पञ्जलिको वन्द मा ते विजटि मत्थकं ॥११७३॥
 न सो पस्सति सद्धमं मंसारेण पुरक्खतो ।
 अचङ्कनं जिम्हपथं कुमग्गमनुधावति ॥११७४॥
 कामी व माळ्हसल्लितो संखारे अधिमुच्छितो ।
 पगाळ्हो लाभसक्कारे नुच्छो गच्छति पोढिलो ॥११७५॥

इमञ्च पस्स आयन्तं सारिपुत्तं सुदस्सं ।
 विमुत्तं उभतोभागे अज्झत्तं सुसमाहितं ॥११७६॥
 विसल्लं खीणसंयोगं ते विज्जं मच्चुहायितं ।
 दक्खिण्यं मनुस्सानं पुञ्ञाखेतमनुत्तरं ॥११७७॥
 एते सम्बहुला देवा इद्धिमन्तो यसस्सिनो ।
 दस देवसहस्सानि सब्बे ब्रह्मपुरोहिता ।
 मोग्गल्लानं नमस्सन्ता तिट्ठन्ती पञ्ञलीकता ॥११७८॥
 नमो ते पुरिसाजञ्ञ, नमो ते पुरिमुत्तम ।
 यस्स ते आसवा खीण, दक्खिण्यो 'सि मारिस्स ॥११७९॥
 पूजितो नरदेवेन उप्पन्नो मरणाभिभू ।
 पुण्डरीकं व तोयेन मखारे नोपलप्पति ॥११८०॥
 यस्से मुहने सहस्सवा लोको मंविदितो, स ब्रह्मकणो ।
 वसी इद्धिगणे वृत्तपपाते काले पस्सति देवता स भिक्खु ॥११८१॥
 सारिपुत्तो व पञ्ञाय सीलेन उपसमेन च ।
 यो पि पारंगतो भिक्खु एतावपरमो सिया ॥११८२॥
 कोटिसतसहस्सस्स अत्तभावं खणेन निम्मिने ।
 अहं विकुब्बनासु कुमलो वसीधूतो 'मिह इद्धिया ॥११८३॥
 समाधिज्जावसि पाग्मोग्गो मोग्गल्लानगोत्तो असितस्स सासने ।
 घोरो समुच्छिन्दि समाहिनिन्द्रियो नागो ।
 यथा पूतिलतं व बन्धनं ॥११८४॥
 परिचिण्णो... (—६०४, ६०५) ॥११८५-११८६॥
 कीदिसो निरयो आसि यत्थ दुस्सो अपच्चथ ।
 विधुरं सावकमासज्जं ककुसन्धञ्च ब्राह्मणं, ११८७॥
 मतमासि अयोसङ्कू सव्वे पच्चत्तवेदना
 ईदिमो निरयो आसि यत्थ दुस्सो अपच्चथ
 विधुरं सावकमासज्जं ककुसन्धञ्च ब्राह्मणं ॥११८८॥
 यो एतमभिजानानि भिक्खु बुद्धस्स सावको,
 तादिमं भिक्खुमासज्जं कण्हं दुक्खं निगच्छसि ॥११८९॥
 मज्झे सागरस्मि तिट्ठन्ति विमाना कप्पट्टायिनो
 वेळुरियवण्णा रुचिरा अच्चिमन्तो पभस्सरा
 अच्छरा तत्थ नच्चन्ति पुपू नानत्तवणिण्यो, ॥११९०॥
 यो एतमभि—प—कण्हं दुक्खं निगच्छसि ॥११९१॥

यो वे बुद्धेन चोदितो भिक्खु संघरस्स पेक्खतो
 मिगारमातु पासादं पादङ्गुट्ठेन कम्पयि ॥११९२॥
 यो एतमभि० . . . ॥११९३॥
 यो वेजयन्तपासादं पादङ्गुट्ठेन कम्पयि
 इड्ढिबलेनुपत्थङ्गो सवेज्जोसि च देवता ॥११९४॥
 यो एतमभि० ॥११९५॥
 यो वेजयन्त पासादे सुखं सो परिपुच्छति.
 अपि आवुसो जानासि तण्हक्खयविमुत्तियो;—
 तस्स सक्को वियाकासि पञ्ह पुट्ठो यथातथ ॥११९६॥
 यो एतमभि० ॥११९७॥
 यो ब्रह्मानं परिपुच्छति सुधम्मया अभितोसम
 अज्जापि ते आवुसो सा दिट्ठि या ते दिट्ठि पुरे अह,
 पस्समि वीति वत्तन्त ब्रह्मलोके पभस्सर, ॥११९८॥
 तस्स ब्रह्मा वियाकामि पञ्ह पुट्ठो यथातथ
 न मे मारिस्स सदिट्ठि या मे दिट्ठि पुरे अह, ॥११९९॥
 पस्सामि वीतिवत्तन्त ब्रह्मलोके पभस्सर;
 सो'हमज्ज कथ वज्जं. अह निच्चो 'मिह सामतो,—१२००॥
 यो एतमभि० ॥१२०१॥
 यो महानेरुनो कूट विमोक्खेन उपस्सयि,
 वनं पुब्बविदाहान ये च भूमिसयाग्ना,—१२०२॥
 यो एतमभि० ॥१२०३॥
 नं वे अग्गि चेतयति अह बाल दहामीति,
 बालो च जलिनमग्गि आमज्ज नं पडय्हति, ॥१२०४॥
 एवमेव तुव मार आसज्ज नं तथागत
 सय दहिस्समत्तानं बालो अग्गि व सम्फुमं ॥१२०५॥
 अपुज्ज फसवी मारो आसज्ज नं तथागं;
 किं नु मज्जामि पापि म न मे पापं विपच्चति ॥१२०६॥
 करतो ते मिच्चते पाप चिररत्ताय अन्तक,
 मार निब्बिन्द बुद्धम्हा, आस मा कासि भिक्खुसु ॥१२०७॥
 इति मारं अतज्जेसि भिक्खु भेसकळावने,
 ततो सो दुम्मनो यक्खो तथेव अन्तरघायतीति ॥१२०८॥
 इत्थ मुदं आयस्मा महामोग्गल्लानो धेरो गाथायो अभासित्थीति

उद्दानं भवति:

सट्ठिकम्हि निपातम्हि मोग्गलानो बहिद्विको
एको 'व थेरो, गाथायो अट्ठसट्ठि भवन्ति ता 'ति

महानिपातो

निवृत्तं वत मं सन्तं अगारस्मा अतगाग्रिं
 वितक्का उपधावन्ति पगब्भा कण्हतो इमेः ॥१२०९॥
 उग्गपुत्ता महिस्सासा सिक्खिता दग्धम्मिनो
 समन्ता परिकिरेय्यं सपस्स अपलायिनं ॥१२१०॥
 सचे पि एत्तका भिय्यो आगमिस्सन्ति इत्थियो,
 नेव म ब्याधयिस्सन्ति धम्मे स्वम्मिह पतिट्ठितो ॥१२११॥
 स किहि मे सुतं एतं बुद्धस्मादिच्च बन्धुनो
 निब्बानगमन मग्ग, तत्थ मे निरतो मनो ॥१२१२॥
 एवमेवं विहरन् पापिम उपगच्छसि,
 तथा मच्चु करिस्सामिः न मे मग्गं उदिक्खमि ॥१२१३॥
 अरतिं रतिं च पहाय सब्बसो गेहसितञ्च वितक्क
 वनथं न करेय्य कुहिञ्चि, निब्बनथा
 अवनथो स हि भिक्खु ॥१२१४॥
 यमिध पथविञ्च विहास रूपगत जगतोगध किञ्चि,
 परिजिय्यति सब्बमनिच्च एवं समेच्च चरन्ति मुत्तन्ता ॥१२१५॥
 उपधीसु जना गधिनासे दिट्ठ मुते पटिधे च मुते च,
 एत्थ विनोदय छन्दमनेजो, यो हेत्थ न लिप्पनि मुनि तगाहु ॥१२१६॥
 अट्ट सट्ठि सिका सवितक्का पुत्थुज्जननाय अधम्मतिविट्ठा,
 न च वग्गगतिस्स कुहिञ्चि, नु पन पदुम्लगाही स भिक्खु ॥१२१७॥
 दब्बो चिररत्तं समाहितो अकुहको नपको अपिहालु
 सन्तं पदमज्जहगमा मुनि, पटिच्च परिनिब्बतो कल्लति फालं ॥१२१८॥
 मानं पजहस्सु गोतम मानपथञ्च जहस्सु अमेग;
 मानपथं हि समुच्छिनो विप्पटिसारी हुत्वा चिररत्तं ॥१२१९॥
 मक्खेन मक्खिता पजा मानहता निरयं पतन्ति,
 सोचन्ति जना चिररत्तं मानहता निरयं उपपन्ना ॥१२२०॥

न हि सोचति भिक्षु कदाचि मग्गजिनो सम्मा पटिपन्नो,
 कित्तिञ्च सुखञ्चानुभोति, भम्मदसो'ति तमाहु तथत्तं ॥१२२१॥
 तस्मा अखिलो इधममानवा निवरणानि पहाय विसुद्धो
 मानञ्च पहाय असेसं विज्जायन्तकरो समितावी ॥१२२२॥
 कमरागेन ड्य्हामि. चित्त मे परिड्य्हति,
 साधु निब्बापनं ब्रूहि अनुकम्पाय गोतम ॥१२२३॥
 सञ्जाय विपरियेसा चित्तन्ते परिड्य्हति;
 निमित्तं परिवज्जेहि सुभं रागूप संहितं ॥१२२४॥
 अमुभाय चित्तं भावेहि एकगं सुसमाहितं,
 सत्तिकायगता त्यत्थु निब्बिदा बहुलो भव ॥१२२५॥
 अनिमित्तञ्च भावेहि, मानानुसयमुज्जह,
 ततो मानाभिसमया उपसन्तो चरिस्ससिं ॥१२२६॥
 तमेव वाच भासेय्य, यायत्थान न तापये
 परे चन विहसेय्य, सावे वाचा सुभासिता ॥१२२७॥
 पियवाचमेव भासेय्य या वाचा पटिनन्दिता
 यं अनादाय पापानि परेस भासते पियं ॥१२२८॥
 सच्चं वे अमता वाचा एसन धम्मो सनन्तनो;
 सच्चे अत्थे च धम्मे च आहु सन्तो पतिट्ठिता ॥१२२९॥
 यं बुद्धो भासती वाच खेमं निब्बानपत्तिया
 दुक्खस्सन्तकिरियाय, स वे वाचानमुत्तमा ॥१२३०॥
 गम्भीरपञ्जो मेधावी मग्गामग्गस्स कोविदो
 साग्गिपुत्तो महापञ्जो धम देसेति भिक्खुनं ॥१२३१॥
 संखित्तेन पि देसेति वित्थारेन पि भासति,
 सीलिकायेव निग्घोसो पटिभान उदीय्यति ॥१२३२॥
 तस्स तं देसयन्तस्स सुणन्ता मधुरं गिर
 सरेन राजनीयेन सवनीयेन वग्गुना
 उदग्गचित्ता मुदिता सोत्तं ओषेन्ति भिक्खवो ॥१२३३॥
 अज्ज पन्नरसे विमुद्धिया भिक्खू पञ्चसता समागता
 संयोजन बन्ध नच्छिदा अनीघा खीणपुनब्भवा इसी ॥१२३४॥
 चक्कवत्ती यथा राजा अमच्च परिवारितो
 समन्ता अनुपरियेति सागरन्तं महि इमं ॥१२३५॥

एवं विजितसगामं सत्थवाहं अनुत्तरं
 सावका परियुपासन्ति ते विज्जा मच्चु हायिनो ॥१२३६॥
 सब्बे भगवतो पुत्तो, पलापो एत्थ न विज्जति;
 तण्हा सल्लस्स हन्तारं वन्दे आदिच्चबन्धुनं ॥१२३७॥
 परोसहस्सं भिक्खूनं सुगतं परियुपासति
 देसेन्त विरजं धम्मं निब्बानं अबूतोभयं ॥१२३८॥
 सुणन्ति धम्मं विपुलं सम्मासम्बुद्धदेसितं;
 सोभति वत सम्बुद्धो भिक्खु संघपुरस्सतो ॥१२३९॥
 नागनामो'सि भगवा, इसीनं इसि सत्तमो,
 महामेघो व हुत्वाण सावके अभिवस्ससि ॥१२४०॥
 दिवा विहारा निक्खमा सत्थुदस्सनकम्यता
 सावको ते महावीर पादे वन्दति वड्डिगसो ॥१२४१॥
 उम्मग्गपथं मारस्स अभिभुय्य चरति पभिज्ज खिलानि,
 तं पस्सथ बन्धन पमुञ्चकरं असितं व भागसो पविभज्ज ॥१२४२॥
 ओघस्सहि नित्थरणत्थं अनेक विहितं मग्गं अक्खासि,
 तस्मिञ्च अमते अक्खाते धम्मदसाठिता असंहीरा ॥१२४३॥
 पुज्जोत्तकरो अतिविज्ज सब्बट्ठि तान मतिक्कममहा,
 ज्ञात्वा च सच्छिळत्वा च अग्गं सो देसयि दसद्धान ॥१२४४॥
 एवं सुदेसिते धम्मे को पमादो विजानतं धम्मं,
 तस्माहि तस्स भगवतो सासने अप्पमत्तो
 सदा नमस्स मनुसिक्खे ॥१२४५॥
 बुढानुबुद्धो यो थेरो कोण्डञ्जो तिब्बनिक्खमो,
 लाभो सुख विहारानं विवेकानं अभिण्हसो ॥१२४६॥
 यं सावकेन पत्तब्बं सत्थुसासनकारिना,
 सब्बस्स तं अनुप्पनं अप्पमत्तस्स सिक्खतो ॥१२४७॥
 महानुभावो ते विज्जो चेतो परियकोविदो
 कोण्डञ्जो बुद्धदायादो पादे वन्दति सत्थुनो ॥१२४८॥
 नागस्स पस्से आसीनं मुनिं दुक्खस्स पारगं
 सावका परियुपासन्ति ते विज्जा मच्चुहायिनो ॥१२४९॥
 चेतसा अनुपरियेति मोग्गलानो महिद्धिको
 चित्तं नेसं समन्वेमं विप्पमुत्तं निरूपधि ॥१२५०॥

एवं सब्बङ्गसम्पन्नं मुनिं दुक्खस्स पारगुं
 अनेकारसम्पन्नं पयिरूपासन्ति गोतमं ॥१२५१॥
 चन्दो यथा विगतवलाहके नभे विरोचति,
 वीतमलो व भानुमा,
 एवमि अङ्गीरसत्वं महामुनि,
 अतिरोचसि यससा सब्बलोकं ॥१२५२॥
 कावेय्यमत्ता विचरिम्ह पुब्बे गामा गामं पुरा पुरं,
 अथद् सामि सम्बुद्धं सब्ब धम्मान पारगु ॥१२५३॥
 सो मे धम्म मदेदेसि मुनि दुक्खस्स पारगुं;
 धम्मं सुत्वा पसीदिम्ह, सद्धा नो उदपज्जथ ॥१२५४॥
 तस्साहं वचनं सुत्वा खन्धे आयतनानि च
 धारुयो च विदित्वा न पन्ब्बजि अनगारियं ॥१२५५॥
 बहूनं वत अत्थाय उप्पज्जन्ति तथागता
 इत्थीनं पुरिसानञ्च ये ते सासनकारका ॥१२५६॥
 तेस खो वत अत्थाय बोधि अज्झगमा मुनि .
 भिक्खूनं भिक्खुनीनञ्च ये नियामगतंदसा ॥१२५७॥
 सुंदीसता चक्खुमता बुद्धेनादिच्चवन्धुना
 चत्ताणि अरियसच्चानि अनुकम्पाय पाणिनं ॥१२५८॥
 दुक्खं दुक्खममुप्पादं दुक्खस्स च अतिवकमं
 अरियदु डिताकं मग्गं दुक्खूपसम गामिनं ॥१२५९॥
 एवमेते तथा वुत्ता, विट्ठा मेते यथा तथा;
 सदत्थो मे अनुप्पत्तो, कतं बुद्धस्स सासनं ॥१२६०॥
 स्वागतं वत मे आसि मम बुद्धस्स सन्तिके;
 सम्भिवत्तेसु धम्मसेसु य सेट्ठं तदुपागामि ॥१२६१॥
 अभिज्जापार मिप्पत्तो सोतधारु विसोधितो
 ते विज्जो इद्धिप्पत्तो'म्हि चेतो परियकोविदो ॥१२६२॥
 पुच्छामि सत्थारमनो मपज्जं दिट्ठेव
 धम्मो यो विचिकिच्छानं छेत्वा.
 अगाळवे कालमकासि भिक्खु ज्ञातो
 यसस्सी अभिनिब्बुत्ततो ॥१२६३॥

निग्रोधजप्पो इति तस्स नामं तथा कतं
 भगवा ब्रह्मणस्स,
 सोतं नमस्सं अचरि मृत्य पेक्खो आरद्धविरियो दळ्हधम्मदस्सी ॥१२६४॥
 तं सावकं सक्कमयम्पि सब्बे अञ्जातुनिच्छाम समन्त चक्खुः
 समवट्ठिता नो सवनाय सोत, तुवं नु सत्था त्वमनुत्तरो'सि ॥१२६५॥
 छिन्देव नो विचिकिच्छ, ब्रूहि मे तं, परिनिब्बुत वेदय भूरिपञ्ज
 मज्जेव नो भास समन्तचक्खु सक्को व
 देवान सहस्सनुत्तो ॥१२६६॥
 ये केचि गन्धा इध मोहमग्गा अञ्जाणपक्खा
 विचिकिच्छट्ठाना,
 तथागतं पत्वा न ते भवन्ति, चक्खुमिह
 एतं परम नरानं ॥१२६७॥
 न चेहि ज्ञातु पुरिसो किलेसे वातो यथा अब्भघनं विहाने,
 तमो वस्स निब्बुतो सब्बलोके, जोतिमन्नो पि
 न पभासेय्यु ॥१२६८॥
 धीरा च पञ्जोत्तकरा भवन्ति, तं तं अह
 धीर तथेव बज्जे,
 विपस्सिनं जानमुपापगमिम्ह, परिसाय नो
 अविरोहि कप्पं ॥१२६९॥
 खिप्पं किरं एरय वग्गु वग्गुं हसो व पग्गह
 सनिकं निकूजं
 विन्दुस्सेरेन मुविकप्पितेन, सब्बेव ते
 उज्जुगता सुणोम ॥१२७०॥
 पहीनजातिमरणं असेसं निग्गय्ह धोनं
 वदेस्सामि धम्मं,
 न कामकारो हि पुथुज्जनानं, सखेय्यकारो'वव
 तपागतानं ॥१२७१॥
 सम्पन्न वेय्याकरणं तवेद समुञ्जापञ्जास्स
 समुग्गहीतं;
 अयमञ्जलि पच्छिमो सुप्पणामितो, मा मोहयि जानमनोमपञ्ज ॥१२७२॥
 परोवरं अरियधम्मं विदित्वा मा मोहयि जानमनोमविरिय,
 वारि यथा धम्मनिधम्मतत्तो वाचाभिकङ्कखामि, सुत पवस्स ॥१२७३॥

यदन्त्ययं ब्रह्मचरियं अचारि कप्पायनो किञ्चि'स्स तं अमोघं;
निम्बायि सो आहु सोपादिसो; यथा विमुत्तो अहु तं सुणोम ॥१२७४॥
अच्छेच्छि तण्हं इध माम रूपे'ति भगवा,
तण्हाय सोत दीघरत्तानुसयितं
अतारि जाति मरणं असेसं इच्चब्रवि भगवा
पञ्चसेट्ठो ॥१२७५॥
एस सुत्वा पमीदामि वधो ते इसिसत्तम,
अमोघं किर मे पुट्टं न मं वञ्चेसि ब्राह्मणो ॥१२७६॥
यथावादी तथाकारी अहु बुद्धस्स सावको,
अच्छेच्छि मच्चुनो जालं तथ मायाविनो-दळ्हं ॥१२७७॥
अहस भगवा आदि उपादानस्स कप्पियो,
अच्चगा वत कप्पायनो मच्चुघेय्यं सुदुत्तरं ॥१२७८॥
तं देवदेवं वन्दामिपुत्तं ते द्विपदुत्तम
अनुजात महागौर नागं नागस्स ओरसन्ति ॥१२७९॥
इत्थ सुदं आयस्मा वड्ढगीसोथेरो गायायो अभासित्था'ति,
महानिपातो निट्ठति
सत्ततिमिह निपतामिह वड्ढगीसो पटिभाणवा
एको'वत्थेरो' नत्थञ्जो, गायायो एकसत्तति ।
सहस्सं होन्ति ता गाथा तीणि सट्ठि सनानि च
थेरा च द्वे सता सट्ठि चत्तारो च पकामिता ।
सीहनादं नदित्वान बुद्धपुत्ता अनासवा
खेमन्तं पापुणित्वान अग्गिक्खन्धा व निब्बेता'ति ।

निट्ठिता थेरगाथायो

